श्री पंचाङ्ग



सप्तर्षि संवत्
५०६४

विक्रमी संवत्
२०४५

ईस्वी संवत्
१९८८-८९

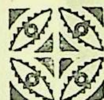
शाका
१९१०

ब्राह्मण महामण्डल, काश्मीर (रजि.)

राजा : शुक्र मन्त्री : बुद्ध



श्री पञ्चांग



सप्तर्षि संवत् ५०६४

विक्रमी संवत् २०४४-४५

ईस्वी संवत् १९८८-८९

शाका १९१०



गणितकर्त्ता :

श्री ओंकारनाथ
ज्यो० विशारद
श्रीनगर, काश्मीर

सम्पादक तथा प्रकाशक :

ब्राह्मण महामण्डल काश्मीर श्रीनगर रजि० नं०

विद्वद्वरै ब्राह्मणमण्डलस्थै र्निष्णातशास्त्रैर्हिजगत्प्रसिद्धैः । (2
शास्त्राण्यवेक्ष्यग्रथितं हि सम्यक् पञ्चाङ्गकं चास्तु जगद्धिताय ।।

रचयिता :—डॉ० बदरीनाथ कल्ला शास्त्री,
कार्यकारी अध्यक्ष, ब्रा० म० मण्डल

ब्राह्मण महामण्डल काश्मीर के उद्देश्य

ब्राह्मण महामण्डल काश्मीर के उद्देश्य निम्नलिखित हैं :

(क) सनातन-धर्म का स्वस्थ प्रचार करना ।

(ख) हिन्दुओं में धार्मिक तथा सांस्कृतिक जीवन को समृद्ध करने के लिए हिन्दी तथा संस्कृत का प्रचार करना ।

(ग) सामाजिक, आर्थिक तथा धार्मिक उत्थान के लिए साधारणतया हिन्दू जाति में और विशेष कर कश्मीरी ब्राह्मणों में उचित रीति से सामाजिक कुरीतियों का उन्मूलन करना ।

(घ) काश्मीरी ब्राह्मणों में आत्म-विश्वास, आत्मनिर्भरता तथा भ्रातृभाव को प्रोत्साहित करना ।

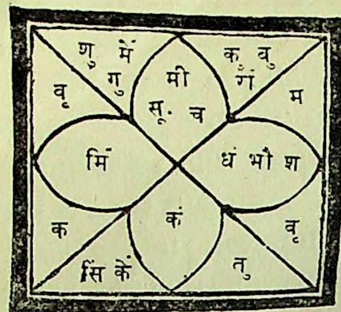
ओं श्री गणेशाय नमः ।। श्री आनन्देशवर भैरवाय नमः ।।

ओं अचिन्त्याऽव्यक्त रुपाय निर्गुणाय गुणात्मने । समस्त जगदाधार मूर्तये ब्राह्मणे नमः ।।
गृहाधीनं जगत्सर्वं गृहाधीना नराः वराः । सृष्टि रक्षण संहाराः सर्वे चापिगृहानुगाः ।।

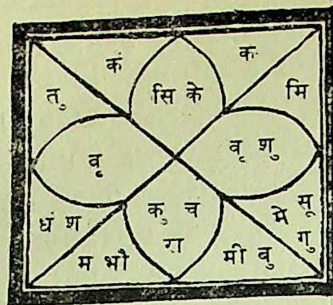
श्री शुभ सप्तर्षि संवत् ५०६४, विक्रमादित्य संवत् २०४४-२०४५, शालिवाहन शाके १९१० सन् ईस्वी १९८८-८९, हिजरी सन् १४०८-९ श्री कृष्ण जन्म संवत् ५२२३, युधिष्ठिर संवत् ५१२५ कलियुग संवत् ५०८९, स्वतन्त्र भारत संवत् ४२ गांधी संवत् ११९, श्री पंचाग संवत् ५० ब्राह्मण महामण्डल स्थापित संवत् ९०, सृष्टि संवत् १९५५८८५०८९, कल्पगताब्दा: १९७२६४०८९/४३२००००००७०, विक्रमी संवत् २०४५ में वर्ष शुभ नाम वृषाब्दः ।

स्वामी मंगल, वर्ष का वाहन गजः (हाथी) उपवाहन अश्वः (घोड़ा) यूनान के मत के अनुसार वर्ष का वाहन तुष्कानील मृग, वसन्त का वाहन, भैंस, वर्ष का राष्ट्रपति मंगल, वर्ष का राजा काश्मीर के गणित के अनुसार शुक्र देवता, वर्ष का प्रधानमन्त्री बुध देवता, धान्य के स्वामी बृहस्पति, सूखे हुए अनाज के स्वामी शनि, मेघ के स्वामी मंगल देवता, रस के स्वामी चन्द्रमा, कोष के स्वामी शुक्र, फलों के स्वामी मगल देवता, सेना विभाग के स्वामी मंगल देवता, वर्षा भगवती वैश्यानी (व्यापारिन) वर्ष का निवास माली के घर में, रोहणी का निवास समुद्र के तट पर, शनि की दृष्टिः पश्चिम दक्षिण में, अधिक मास ज्येष्ठ, ग्रहण वर्ष में चार शुभ तथा अशुभ ग्रहों का योग सम, आषाढ़ ९ शनिवार, सूर्य रोहिणी का निवास माली के घर में, वर्ष के लग्न का वाहन मेंढक।

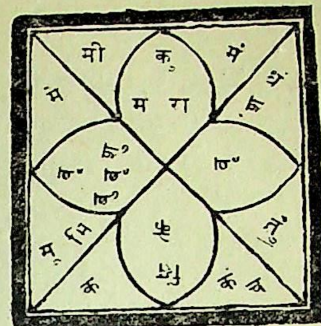
वर्ष लग्न चक्र



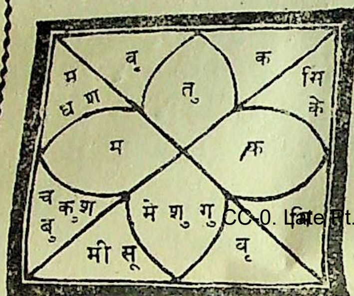
जगल्लग्न् चक्र



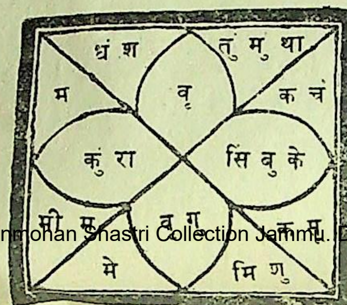
आर्द्रा लग्न चक्रम्



काश्मीर का गोचर चक्र



स्वतन्त्र भारत का वर्ष



वर्ष विश्वा :—

मेघ १३, धान्य १३ तृण १३
शीत ९, वायु: १३ प्रकाश ११
उन्नति २५. मृत्यु: १५ विग्रह ११
तृष्णा ७ निन्द्रा १ आलस्य ७
शान्ति ५ क्रोध ११ अन्नावृष्टि १९
जन्म १७ पाप १९ पुण्य १
वर्ष का राष्ट्रपति मंगल देवता

दृग्गणित के आधार पर लाभ व्यय का चक्र विक्रमी २०४५ ईस्वी १९८८-८९

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि	धनु	मकर	कुंभ	मीन
लाभ	११	५	११	५	८	११	५	११	८	२	२	८
व्यय	५	१४	११	८	५	११	१४	५	११	१४	१४	११
घात चं	१	५	९	२	६	१०	३	७	४	८	११	१२
घात वार	र	श	चं	बु	श	श	बु	शु	शु	मं	गु	शु
घात नक्षत्र	मं	ह	स्वा	अनू	मूल	श्र	शत	रे	भ	रो	आर्द्रा	अश्ले
स्वी घात चं	१	८	७	९	२	३	६	२	१०	११	५	१२

आय व्यय देखने का तरीका

लाभ और व्यय के अंकों को इकट्ठा करके एक कम करें। शेष को आठ पर भाग देवें। यदि एक शेष रहे तो सुख शान्ति एवं व्यपार में उन्नति मिले। यदि २ बचे तो मनोकामना पूर्ण तथा सवारी का

सुख मिले । यदि ३ बचे तो धन का लाभ और हानि बराबर रहे । चिन्ता भी रहे । शरीर में रोग और गुप्त रूप से शत्रुओं का भय रहे । यदि ४ रहे तो स्थान परिवर्तन, घरेलू चिन्ता, धन का व्यय, मान हानि और शरीर कष्ट भी रहे । ५ बचे तो कारोबार में अचानक रुकावट, संतानों की चिन्ता, शत्रु भय और वर्ष का प्रथम भाग हानिकारक रहे । ६ बचे तो भूमि एव जायदाद का लाभ, राजदरबार में मान, धन का लाभ तथा सम्बन्धियों की ओर से प्रसन्नता मिले । यदि ७ बचे तो कारोबार एवं व्यवसाय में वृद्धि, स्त्री पक्ष से शुभ, नवीन योजना बने । मित्रों का उदय और शत्रुनाश हो । अगर शून्य हो तो यह वर्ष आपत्तियों एवं झगड़ों का वर्ष होगा । वर्ष में दौड़-धूप करनी पड़ेगी । धन का अपव्यय रहेगा । मन में चंचलता तथा चोरों का भय रहेगा । जिन राशि वालों को वर्ष मध्यम रहता हो उन्हें नियमपूर्वक भगवती इन्द्राक्षी का पाठ करना चाहिए तथा शुक्ल पक्ष की अष्टमी को व्रत रखना चाहिए और मंगलवार के दिन वैष्णव रहना आवश्यक है ।

सूचना—

यदि आप जन्म पत्री या वर्ष फल बनवा कर अपना भविष्य जानना चाहते हों तो अपना जन्म दिन वर्ष सम्वत् तथा जन्म लेने का समय साफ सुथरे पत्र पर लिख कर ब्राह्मण महामंडल के कार्यालय गणपतयार श्रीनगर पर सायं ६ बजे से नौ बजे तक भेज दें । नियत समय पर मुनासिब फीस अदा करके बनाया जाएगा ।

व्रत, पर्व, त्यौहार, जयन्ती आदि एक दृष्टि में सन् १९८८-८९
शाका १९१०, सप्तर्षि ५०६४, विक्रमी २०४५ ।

१७ मार्च, थाल बरून,
१८ मार्च श्री नव दुर्गा आरम्भ,
नव वर्ष और सूर्य ग्रहण*
२३ मार्च कुमार ६ व्रत,
२५ ,, दुर्गा ८,
भवानी जन्म ।
२६ मार्च राम ९ शिवा-
भगवती जयन्ती ।
२९ मार्च कामदा ११
३१ ,, जैन महावीर जय०
१ अप्रैल गुड़ फ्राइडे ।
२ ,, हनुमान जयन्ती
शबे बरात ।
५ अप्रै० संकट ४

७ अप्रैल श्री पंचमी, मंगलेश्वर
भैरव जय. ऋषिपीर श्राद्ध ।
८ अप्रै. वेताल ६
१० ,, शीतला ८
११ ,, लक्ष्मी नारायण यज्ञ ।
१३ ,, वैसाखी, संक्रांति ।
स्वामी लक्ष्मण जी जन्म
१६ अप्रै. शनैश्वरी अमावसी
वल्लभाचार्य जयन्ती ।
१८ अप्रै. रमाजान रोजे प्रारम्भ ।
१९ अप्रै० शिवा जी जय०
२१ अप्रै० कुमार ६ और मल मास
का आरम्भ
२३ अप्रैल गंगा ७

२८ अप्रै० अगस्त्या अस्त ।
माधवा ११, नारद ११,
३० अप्रै० गणेष १४
१ मई बुद्ध पूर्णिमा,
मजदूर दिवस
२ मई नारद जय
५ मई संकट ४
१२ मई रथा ११
१३ मई शबे कदर
१४ मई संक्रांति व्रत
१५ मई वट् सावित्री व्रत
और भानु मास आरम्भ ।
१८ मई ईदुल्ल फितर
२० मई मल मास समाप्त

२१ मई कुमार षष्ठी,
३० मई गणेश १४
३ जून संकट ४
१४ जून संक्रांति व्रत और
भानु मास समाप्त
२० जून कुमार ६
२१ जून दक्षिणायण सूर्य
२२ जून ज्येष्ठ ८, क्षीर
भवानी यात्रा।
२५ जून निर्जला ११
२९ जून माता रूप भवानी जयन्ती
कबीर जय ।
३० जून गुरु हरगोविन्द जन्म।
२ जुलाई संकट ४
९ जुलाई योगिनी ११
१३ जुलाई शहीदी दिन।
१५ जुलाई रथ यात्रा
१६ जुलाई संक्रांति व्रत
१९ जलाई कुमार ६

२१ जुलाई आषाढ़ ७
२२ जुलाई आषाढ़ ८
२३ जुलाई आषाढ़ ९
२५ जुलाई देव शयनी ११
और ईद (बकरीद)
२६ जुलाई हरिस्वाप।
भगवान गोपी नाथ जयन्ती
२८ जुलाई ज्वाला १४
रिव्रव यात्रा
२९ जुलाई आषाढ़ पूर्णिमा
व्यास पूजन।
१ अगस्त संकट ४
१२ अगस्त हरियाली अमा०
१५ अगस्त हरियाली ३
भारत स्वतन्त्र दिवस।
१६ अगस्त वरद गणेश ४
१७ अगस्त संक्रांति व्रत
नाग ५ सिंगह आरम्भ।

(8

१८ अगस्त कुमार ६
१९ अगस्त तुलसी दास जयं
२० अगस्त दूर्वा ८, तारा जय
२३ अगस्त पवित्रा ११,
२४ अगस्त, श्रावण १२ शुपियन
यात्रा कृष्ण पण्डित
अर्न्तध्यान दिवस।
२७ अगस्त श्रावण पूर्णिमा
अमर नाथ यात्रा,
गायत्री जयन्ती।
३० अगस्त संकट ४
३१ अगस्त नव दल यात्रा
१ सितम्बर चन्दन षष्ठी,
३ सितम्बर जन्माष्टमी एक।
६ सितम्बर अजा ११
११ सितम्वर कुषा अमावसी।
सूर्य ग्रहण।*
१३ सितम्बर भौम पर्व,

१४ सितम्बर हस्तालिका ३
१५ सितम्बर विनायक ४
१६ सितम्बर कुमार ६
१७ सितम्बर संक्रांति व्रत
१९ सितम्बर गङ्गा ८, राधा ८
२१ सितम्बर अगस्त उदय
२२ सितम्बर नारायणी ११
गोतम नाग यात्रा ।
२३ सितम्बर व्यथ वत्री यात्रा, वितस्ता १३
२४ सितम्बर अनन्त १४
२५ सितम्बर पूर्णिमा व्रत ।
२६ सितम्बर पितृ पक्षारम्भ ।
२८ सितम्बर संकट ४
१ अक्तूबर साहिब सप्तमी ।
२ अक्तूबर गांधी जयन्ती
लाल बहादुर जय०
३ अक्तूबर महा लक्ष्मी ८

१० अक्तूबर पितृ अ० सोमा अ०
११ अक्तूबर नव दुर्गा आरम्भ
१६ अक्तूबर कुमार ६ व्रत
१७ अक्तूबर संक्रांति व्रत
१८ अक्तूबर दुर्गा अष्टमी
१९ अक्तूबर महा नवमी
२० अक्तूबर विजय दशमी
२४ अक्तूबर ईद मेलाद
२५ अक्तूबर लवङ्ग पूर्णिमी शरद पूर्णिमा
२८ अक्तूबर कटवा ४
संकट चतुर्थी
२ नवम्बर राधा अष्टमी
७ नवम्बर घन त्रयोदशी
८ नवं महावीर 14
९ नवं कमला जयन्ती, दीपमाला
दीवाली लक्ष्मी पूजन । जैन
महावीर निर्वाण दिवस ।

१० नवम्बर अन्न कूट ।
१४ नवम्बर कुमार ६
१६ नवम्बर संक्रांति व्रत
१७ नवम्बर गोपाला अष्टमी
१९ नवम्बर हरि वोधिनी ११
२३ नवम्बर कर्मर्तक पूर्णिमा
गुरु पूर्णिमा, द्रवरी पूर्णिमा
२७ नवम्बर संकट ४
१ दिस० महाकाल भैरव अष्टमी
९ दिसम्बर अमावसी व्रत
१४ दिसम्बर कुमार ६
१५ दिसम्बर सक्रांति व्रत
१९ दिसम्बर गीता जयन्ती
२१ दिसम्बर उत्तरायण में सूर्य
२३ दिसम्बर पूर्णिमा व्रत
२६ दिसम्बर संकट ४ व्रत
२९ दिसम्बर वेताल ६
३० दिसम्बर महाकाली जन्म

२ जनवरी आनन्देश्वर भैरव जन्म
७ जनवरी अक्षा अमावसी
१२ जनवरी कुमार ६
१४ जनवरी संक्रांति
मकर संक्रांति
शिशर संक्रांति
गुरु गोविन्द जन्म
२५ जनवरी संकट ४
२८ जनवरी साहिब ७
६ फरवरी सोमी अमावमी
८ फरवरी गोरी तृतीया
९ फरवरी त्रिपुरा ४

११ फरवरी कुमार ६
१२ फरवरी, संक्रांति
१६ फरवरी भीमसेन 11
२० फरवरी माघ पूर्णिमा
माघ स्नान, चन्द्रग्रहण*
२८ फरवरी संकट ४
२८ फरवरी सीता जयन्ती
१ मार्च होरा अष्टमी
चक्रेश्वर यात्रा
३ मार्च विजया ११
५ मार्च शिव रात्रि एक
६ मार्च १ शिव १४ एक
७ मार्च भौम प्रदोष सूर्य ग्रहण*

९ मार्च राम कृष्ण परंहंस जय
१२ मार्च कुमार षष्टी व्रत
१४ मार्च संक्रांति व्रत
तैला अष्टमी
१८ मार्च अमला ११
१९ मार्च गोविन्द १२
२३ मार्च होली पूर्णिमा
२६ मार्च संकट चतुर्थी
२ अप्रैल पाप मोचनी ११
५ अप्रैल चैत्र चतुर्दशी
६ अप्रैल श्री भट्ट दिवस
चन्द्र संवत्सर समाप्त

विदित रहे—

श्री पंचाग में वही बातें दी होती है जिनका धर्म प्रेमी जनता के दैनिक व्यवहार से सम्बन्ध होता है। ब्राह्मण महामण्डल ने हिन्दू जनता की सुविधा के लिए शिव रात्रि पूजा हिन्दी तथा उर्दू दोनों भाषाओं में एक साथ छपाई है। इससे खरीद कर लाभ उठाएं।

व्रत, एक दृष्टि में संवत् २०४५ ईस्वी १९८८-८९ शाके १९१० सप्तर्षि संवत ५०६४

कुमार षष्ठी व्रत	संकट चतुर्थी व्रत	अष्टमी व्रत	पूर्णिमा व्रत	अमावसी व्रत	संक्रान्ति व्रत
२३ मार्च बुधवार	५ अप्रैल मंगलवार	२५ मार्च शूक्रवार	२ अप्रैल शनिवार	१६ अप्रैल शनिवार	१३ अप्रैल बुधवार
२१ अप्रैल गुरुवार	५ मई गुरुवार	२४ अप्रैल रविवार	१ मई रविवार	१५ मई रविवार	१४ मई शनिवार
२१ मई शनिवार	३ जून शुक्रवार	२४ मई मंगलवार	३१ मई मंगलवार	१४ जून मंगलवार	१४ जून मंगलवार
२० जून सोमवार	२ जुलाई शनिवार	२२ जून बूधवार	२९. जून बुधवार	१३ जुला. बुधवार	१६ जुलाई शनिवार
१९. जुलाई मंगलवार	१ अग. सोमवार	२२ जूलाई शूक्रवार	२९ जूलाई शुक्रवार	१२ अग. शुक्रवार	१७ अग. बुधवार
१८ अग. गुरुवार	३० अग. मंगलवार	२० अग. शनिवार	२७ अग. शनिवार	११ सितं रविवार	१७ सितं शनिवार
१६ सितं शुक्रवार	२८ सितं बुधवार	११ सितं सोमवार	२५ सितं रविवार	१० अक्तू. सोमवार	१७ अक्तू. सोमवार
१६ अक्तू. रविवार	२८ अक्तू. शुक्रवार	१८ अक्तू. मंगलवार	२५ अक्तू. मंगलवार	९ नवं बुधवार	१६ नवं बुधवार
१४ नवं सोमवार	२७ नवं रविवार	१७ नवं गुरुवार	२३ नवं बुधवार	९ दिसं शुक्रवार	१५ दिसं गुरुवार
१४ दिसं बुधवार	२६ दिसं सोमवार	१६ दिसं शुक्रवार	२३ दिसं शुक्रवार	७ जनवरी शनिवार	१४ जन. शनिवार
१२ जनवरी गुरुवार	२५ जनवरी बुधवार	१५ जन. रविवार	२१ जन. शनिवार	६ फर्वरी सोमवार	१२ फर्वरी रविवार
११ फर्वरी शनिवार	२४ फर्वरी शुक्रवार	१३ फर्वरी सोमवार	२० फर्वरी सोमवार	७ मार्च मंगलवार	१४ मार्च मंगलवार
१२ मार्च रविवार	२६ मार्च रविवार	१५ मार्च बुधवार	२२ मार्च बुधवार	६ अप्रैल गुरुवार	१३ अप्रैल बुधवार

वर्ष २०४५ के पदार्पण पर ब्राह्मण महामण्डल का जनता के नाम शुभ संदेश :

ब्रह्मण महामण्डल जनता को नव वर्ष के शुभ पदार्पण पर हार्दिक बधाई देता है और यथा पूर्व शुभ कामनाओं के साथ 'श्री पञ्चांग' का नव वर्ष उपहार प्रस्तुत करता है पिछले वर्ष ने हमें कितने ही उतार चढ़ाव दिखाये जैसे कई दुर्घटनायें, देश में हत्याकाण्ड, अग्नि काण्ड, जल थल तथा वायु हादिसे और कई महापुरुषों का निधन, वर्षा की कमी के कारण देश के कई प्रांत सूखे और अकाल की लपेट में आये किन्तु सामयिक शासकों की उदार सहायता तथा साहस और धैर्य के साथ हमने इन कठिनाईयों का सामना किया और काफी हद तक इन से मुक्ति भी पाई कहना न होगा कि इन दुर्घटनाओं का संकेत ज्योतिष शास्त्र के आधार पर 'श्री पञ्चांग' में दिया गया था जैसे असमय वर्षा तथा कठिन हिमपात, बाढ़, अग्निकाण्ड, हवाई तथा समुद्री दुर्घटनायें तथा कई प्रांतों में अकाल और सरकार की ओर से कई योजनाओं का हाथ में लेना आदि कुछ मुस्लिम राष्ट्रों में गड़बड़ युद्ध काण्ड इत्यादि जो काफी हद तक ठीक निकली। यहां यह कहना आवश्यक है कि ज्योतिषकार की भविष्य वाणी अक्षरश: सत्य की कसोटी पर नहीं उतरती क्योंकि सितारों से आगे और भी कोई महा शक्ति संसार की बागडोर हाथ में लिये हुये है, जिसके संकेत मात्र पर विश्व का शासन चक्कर चल रहा है और जिसकी कृपा दृष्टि से एक शरणागत के लिये ग्रहों का

प्रभाव बेकार होता है यही परम शक्ति मनुष्य के भाग्य को अपने कर्मों के अनुसार संवारती पनपाती है और बिगाड़ती भी है।

यहां यह कहना असंगत न होगा कि 'श्री पञ्चांग' महामण्डल के अधीन अपना उनचासवां वर्ष पूरा कर गया है महामण्डल ने श्री पंचाग का प्रकाशन किसी व्यवसाय या धनोपार्जन के अभिप्राय से नहीं किया है अपितु हिन्दू जनता को अपने नित्य कर्म चाहे वह धार्मिक हों या व्यवसायिक, का सही मार्ग दर्शन हो क्योंकि एक हिन्दू का धर्म मोटे तौर पर आत्म उत्थान है, जो वेद आदि शास्त्रों के अध्ययन के पश्चात उनके बताये आदेशों पर चलने से प्राप्त होता है अन्यत्र शास्त्रों में ज्योतिष शास्त्र की भी गणना है, जिसे वेद-चक्षु कहा जाता है इस शास्त्र का मुख्य उद्देश्य काल ज्ञान कराना है और इसका क्रियात्मक लाभ मनुष्य को पञ्चांग के पांच अंगों, वर्ष वार, तिथि, नक्षत्र और योग, जिस में मुहूर्त आदि शामिल हैं, से प्राप्त होता है इस लिये आवश्यक है कि पंचाग के यह पांचों अंग सही और शुद्ध हों और हमारे वृत, पर्व और त्योहारों का प्रवर्तन उचित अवसर और शुद्ध तिथियों पर हो ग्रहों का उदय अस्त सही हो क्योंकि हिन्दु विश्वास के अनुसार इन सब बातों का प्रभाव मनुष्य के जीवन पर अवश्य पड़ता है इसके साथ जितने भी संस्कार एक हिन्दू के लिये आचार्यों ने बताये हैं उन सब का सम्बन्ध काल विज्ञान से है अतः सही काल ज्ञान या दूसरे शब्दों में पंचांग मनुष्य के लिये प्रकाश स्तम्भ का काम करता है उसे सही पथ का प्रदर्शन कराता है।

जहां महामण्डल अपने स्थिति काल में अपनी पहुंच के अनुसार धर्म और अन्य क्षेत्रों में हिन्दू जनता की सेवा करता रहा है, वहां पंचांग प्रकाशन में भी विद्वत परिषद् के परामर्श से धर्म तथा ज्योतिष शास्त्र के आधार पर इस में शुद्ध गणित और शुद्ध मुहूर्त देकर हिन्दू जनता को अपनी दिनचर्य्या निभाने तथा शुभ कार्यों को संपन्न करने के लिये प्रस्तुत करता रहा है। आस्तिक जनता इसका अनुकरण करके शुभ फल की भागी बनती है और नास्तिक तथा मादी दुनिया से सम्पर्क रखने वाले इन बातों पर कम ध्यान देते हैं और निज स्वार्थ के लिये काम चलाते हैं चाहे वह धर्म अनुकूल हों या प्रतिकूल।

आने वाला वर्ष चक्र के आधार पर ज्योतिषकार के अनुसार कोई विशेष महत्व का नहीं अपितु जनता तथा शासक वर्ग के लिये संघर्ष का वर्ष है संसार में प्रायः देशों में तनाव बना रहेगा यद्यपि इसे दूर करने के लिये काफी प्रयत्न होंगे। प्रायः जनता का झुकाव विलासमय जीवन की ओर होगा। नारियों का वर्चस्व बढ़ जायेगा और लड़कियों की उत्पत्ति अधिक होगी। कहीं वर्षा की कमी होगी और कहीं मामूले से अधिक। सीमाओं पर गड़बड़ बनी रहेगी पर सरकार इस पर सफलता से काबू पायेगी और जनता को प्रत्येक ओर से आराम पहुंचाने में प्रयत्नशील होंगी फिर भी आवश्यता इस बात की है कि हम निज धर्म की सीमा में रहकर झगड़ों से दूर तथा भाईचारे एवं बुजुर्गों के आदर्श को अपनाते हुये महाशक्ति की शरण होकर हिम्मत और धैर्य से प्रगति के पथ पर अग्रसर रहें तो सफलता और शांति हमारा स्वागत करेगी और हमारा तथा हमारे देश का कल्याण होगा यही आशीर्वाद और शुभ संदेश ब्राह्मण महामण्डल नव वर्ष के पदर्पण पर जनता को दे रहा है ॐ शांति

सर्वे भवन्तु सुखि नः सर्वे सन्तु निरामयः॥ सर्वे भद्राणि पश्यन्तु माकश्चित् दुख भाग्यवेत्॥

ज्योतिष शास्त्र के आधार पर संवत् २०४५ विक्रमी में आकाशी परिषद् का संसार पर प्रभाव ।

महाशक्ति भगवती महामाया की कृपा से ज्योतिष शास्त्र के अनुसार विक्रमी संवत् २०४५ में आकाशी ग्रह कौंसल का संसार पर प्रभाव इस प्रकार है ।

इस वर्ष संवत् २०४५ में ग्रह परिषद् के निर्माण में प्रधान पद दैत्यगुरु शुक्राचार्य को प्राप्त हुआ है । मुख्य मंत्री का पद बुध एवं रक्षा मंत्री का पद मंगल देवता ने लिया है । परिषद के दस अधिकारों में दोनों क्रूर एवं शुभ ग्रहों को समान अधिकार प्राप्त हुए हैं ।

ब्रहिस्पत्य मान से इस वर्ष संवत्सर का नाम 'वृषाब्द' है रोहिणी का निवास समुद्र के घर में पडा है । जगत् लग्न सिह राशि का है । लग्न का स्वामी सूर्य गुरु के साथ त्रिकोण में पड़ा है । मंगल, मकर राशि में बुध को देख रहा है । चन्द्रमा राहु के साथ सातवें घर में चण्डाल योग बनाता हैं ।

धनु में शनि गुरु और चन्द्रमा को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है । वर्ष के मध्य भाग में शनि वक्री और गुरु अतिचारी, वर्ष का वाहन मृग एवं उपवाहन धोडा होने से 'काल कूट नामक' योग बनता है । वर्ष लग्न में शनि एवं मंगल का युति वेध है । दूसरी ओर वर्षलग्न में चार घरों में दो दो ग्रहों का समावेश है ।

इस कारण संसार के अनेक देशों में राजा और मंत्रियों में आपसी तनाव उत्पन्न होंगे। राजपुरुषों, नेताओं और मंत्रियों का पतन होगा। भूकम्प, अग्निकाण्ड, विस्फोट चक्रवात एवं समुद्री तूफान तथा रेल एवं वायुयान की दुर्घटनाएं अधिक होगी। वर्ष के मध्य भाग में, राजस्थान, मध्यप्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र में कुछ विस्फोट, विवाद आदि उत्पन्न होंगे। भारत के पड़ोसियों चीन एवं पाकिस्तान आदि में वैमनस्य की भावना होकर पाकिस्तान की ओर से भारत की सीमाओं पर कुछ हलचल उत्पन्न होगी कहीं कहीं सूखा एवं कही अधिक बाढ़ आने की संभावना रहेगी। संसार के विभिन्न देशों में महामारी हृदय रोग, कैंसर तथा प्राकृतिक प्रकोप से जनधन की हानि होने की संभावना है। जैसे कहा है।

धनु-राशौ स्थितः सौरिर्गर्जितोऽपिन वर्षति।
तोय हीना धरा तत्रः दुर्भिक्ष रागविग्र हम्।

इस वर्ष, वर्ष का राष्ट्रपति शनि तथा वर्षाभगवती व्यापारिन रक्षा मंत्री मंगल और क्रमचक्र के अनुसार, परस्पर राजाओं में युद्ध, विपक्षी नेताओं का देश पर कुछ प्रभाव, पच्छिमी तथा उत्तरीय भागों में युद्ध चेष्टा तथा मंत्री मण्डलों में भारी परिवर्तन होने के समाचार प्राप्त होंगे।

इस वर्ष गुरु के शीघ्राति चार और अस्त तथा शुक्र के मध्यकालीन लोप होने से प्रमुख नेताओं का निधन और आपसी तनाव उत्पन्न होंगे। अतः शासन तंत्र में बढ़ते हुए भ्रष्टाचार से जनता में असन्तोष की भावना बढ़ेगी। किसी किसी देश में राष्ट्रीय संपत्ति को हानि होने की भी संभावना है।

शनि और मंगल को आपस में शत्रुता की भावना है। अतः मंगल शनि और शुक्र को हानि पहुंचाने का पूर्ण प्रयत्न करेगा। अतः देश के अनेक भागों में आतंकवाद का जन्म होगा। वर्ष के आरंभ से अगस्त तक संसार के अनेक भागों में लूट मार, गृहयुद्ध, अग्निकाण्ड, भ्रातृभाव में विघ्न तथा हत्याकाण्ड सैनिक हलचल उत्पन्न होंगे। अतः ईरान, इराक, अरब, भारत, पाकिस्तान, चीन, लंका, दक्षिनी अफ्रीका, बंगला देश, समुद्र तटवर्त्ती प्रदेश, पंजाब आदि में जनधन की हानि एवं अशान्ति को बल प्राप्त होगा। शासकों की ओर से सैन्य बल को बढ़ावा मिलेगा।

धनु राशि के प्रथम चरण शनि होने के कारण इस वर्ष महायुद्ध नहीं होगा परन्तु छोटे छोटे युद्ध तो होगें। विशेषकर यवन देशों में अधिक हत्याकाण्ड उत्पन्न होगें। शास्त्र में लिखा है।

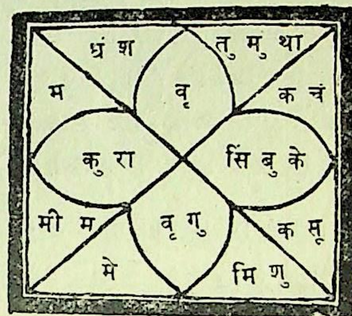
गुरु शनौ यदैकस्थौ नर युद्धं तराभवेत।

अकाले च भवेद वृष्टिः जगत्यां नात्र संशयः॥

अतः अप्रैल से अगस्त तक का समय संसार के विभिन्न देशों के लिए भयाप्रद होगा। वर्ष का उत्तर भाग अर्थात् उत्तरार्ध सितंबर से मार्च तक का समय शुभदायक रहेगा।

भारत।

स्वतंत्र भारत का वर्ष चक्र



जगल्लग्न सिंह राशि का है। लग्नेश सूर्य गुरु के साथ रक्षामंत्री के घर में पड़ा है। रक्षा मंत्री मंगल उच्च का होकर वर्ष के मध्यभाग में शनि के साथ युति वेध करता है। राष्ट्रपति शनि वक्री और गति से हीन हो गया है। वर्ष लग्न मुंथा वक्री केन्द्र पर पड़ी है। दस अधिकारों में शुक्र और मंगल को तीन तीन अधिकार मिले हैं। अप्रैल से जुलाई के अन्त तक गुरु और बुध अतिचारी तथा गुरु अस्त होने के कारण यह वर्ष भारत के लिए अग्नि परीक्षा का वर्ष होगा। किसी महान नेता का निधन होगा। कहीं वर्षा तथा बाढ़ और कई प्रान्तों में सूखे से हानि होगी शुक्र के आरंभ में अस्त होने से भूकम्प रोग, आकाशीय उत्पाद, लूटपाट आदि का भय व्याप्त होगा। विशेषकर पंजाब राजस्थान,

गुजरात, बिहार पच्छमी बंगाल, दिल्ली, मध्यप्रदेश, तथा उत्तर प्रदेश इस से प्रभावित होंगे। कई प्रदेशों में आपसी तनाव दंगा फसाद लड़ाई झगड़े तथा बीमारी से जन धन की हानि होने की संभावना होगी। पहाड़ी देशों में अधिक सर्दी पड़ेगी।

भारत के प्रधान मंत्री के लिए प्रारंभ के छः मास अग्नि परीक्षा के होगे उन्हें शत्रुओं से सावधान रहना आवश्यक है अप्रैल से सितंबर तक शनि और मंगल इकट्ठे युति वेध करते हैं अतः शत्रुओं के भय से उन्हें मध्यावर्ती चुनाव करने की चिन्ता बनी रहेगी परन्तु मध्यावर्ती चुनाव होने की संभावना नहीं है। इस वर्ष प्रधानमंत्री को देश की सीमाओं तथा शत्रुओं की चुनोतियों का सामना करना पड़ेगा। केन्द्रीय मंत्रीमण्डल में भारी परिवर्तन करना पड़ेगा। कहीं किसी राज्य में चुनाव होने की संभावना है।

गुरु के अस्त तथा अमावसी के सूर्य ग्रहण होने से देश के नेताओं, महापुरुषों धर्मापदेशकों की मृत्यु होने का समाचार प्रायः मिलेगा धनेश शुक्र होने के कारण व्यापारिक वर्ग के लिए यह वर्ष मध्यम फलदायक वर्ष होगा। गेहूं चन्ना, चावल, चीनी तथा सोना चान्दी, तिल तेल के भावों में वृद्धि होगी। भारत के पश्चिमी तथा उत्तरीय भागों में साम्प्रदायिक दंगे भड़कने का भी योग है। वर्षा भगवती व्यापारिन होने से तथा आषाढ़ नवमी शनिवार होने के कारण जनता रक्त चाप, गठिया, वायुविकार तथा हृदय विकार आदि रोगों की बीमारियों से परेशान होगी भारत की विदेशी नीति पूर्ण

रूप से तटस्थ रहेगी। विदेशी नीति अच्छी रहेगी। परन्तु विदेशी मुद्रा की आय कम होगी। जिस से सरकारी कोष में कमी रहेगी।

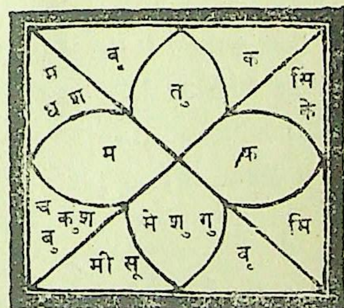
वर्ष लग्न सिंह तथा वर्ष के मध्य भाग में ५ ग्रहों का योग होने से भारत के पच्छिमी भागों में जन संहार की घटनाएँ उत्पन्न होंगी। कई प्रदेशों में सूखा एवं बाढ़ आदि तथा आपसी तनाव उत्पन्न होगा। शुक्र के वर्चस्व होने से शिक्षा एवं विज्ञाम के क्षत्र में भारत हर प्रकार से उन्नति प्राप्त करेगा, विशेषकर चमड़ा, प्लास्टिक, इंजीनरिंग आदि उद्योगों को बढ़ावा मिलेगा। भारत विधुत रेल संचार ऊर्जा तथा आकाशीय क्षेत्रों में अधिक प्रगति करेगा। भारत की विदेश नीति अच्छी रहेगी। रूस के साथ अधिक धनिष्ठ सम्बन्ध होगे। भारत अपनी सैन्य शक्ति की ओर अधिक ध्यान देगा तथा सैन्य शक्ति को आधुनिकीकरण के अनुसार बनाया जायेगा।

सारांश यह कि मिस्र, ईरान, तुर्की, बगदाद, लेबनान, हंगरी, इण्डोनेशिया स्पेन, इस्राईल आदि देशों में नेष्ठफल कारक होगा। इस्लामी देशों के लिए यह वर्ष प्रलयंकारी, एव अग्निकाण्ड का वर्ष होगा। कई देशों में आपसी युद्ध होंगे। इन देशों में जानी तथा माली हानि का योग बनता है। ईरान ईराक युद्ध को बढ़ावा मिलने की संभावना है।

काश्मीर ।

काश्मीर के गोचर चक्र तथा वर्ष लग्न के अनुसार गुरु एवं शुक्र का आपस में पूर्ण योग बनता है। तीसरे घर में शनि और मंगल चन्द्रमा के साथ राहु और बुध का समावेश है। काश्मीर की राशि तुला है तथा गोचर चक्र से भी तुला लग्न ही बनता है। यह योग दग्ध नाम से पुकारा जाता है। वर्षा भगवती व्यापारिन (कृषिकारिन) तथा वसन्त का वाहन, भैंस, आषाढ़ नवमी शनिवार है। यूनान के मुताबिक वर्ष का वाहन मृग है इस के अनुसार यह वर्ष भी काश्मीर की जनता के लिए सुख एवं शान्ति का वर्ष होगा। नये नये कारखाने तथा उद्योग धन्धों का विकास होगा।

कश्मीर का गोचर चक्र



मई से लेकर अगस्त तक शनि वक्री तथा गुरु के अस्त के प्रभाव से काश्मीरी जनता को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। यहां की सीमाओं पर कुछ हल चल रहेगी। सैन्यशक्ति को अधिक सुहृढ़ किया जाएगा। यहाँ तक कि युद्ध की स्थिति बनी रहेगी पाकिस्तानी गुप्तचरों को पकड़ा

जाएगा। तोड़ फोड़ एवं हिंसक घटनाओं से जनता के मन में कुछ अशान्ति रहेगी। इस वर्ष मुख्य मंत्री का स्वास्थ्य कुछ ढीला रहेगा उनको शत्रुओं से सावधान रहना आवश्यक है अन्यथा उन्हें शासन में कुछ तोड़ फोड़ की कारवाहियों से हानि का भय प्राप्त होगा। राहु के प्रभाव से यहाँ की सरकार विरोधी तत्वों को पूर्ण रूप से दबाएगी। अतः विरोधी तत्वों से यहाँ की सरकार को सतर्क रहना आवश्यक है। वर्ष के मध्य भाग में पाकिस्तानी गुप्तचर प्रवेश करके यहां के वातावरण को हानि पहुचाने में तत्पर रहेगें परन्तु वृषराशि में गुरु के आने से उन्हें विफल किया जाएगा।

राजा शुक्र होने के कारण यहाँ के स्त्री वर्ग को वर्चस्व प्राप्त होगा। यहाँ के मंत्री मण्डल में कुछ विस्तार भी किया जाएगा। वसन्त का वाहन भैंसा तथा आषाढ़ नवमी शनिवार के कारण यहां के दक्षिणी एवं पच्छिमी भागों में प्राकृतिक प्रकोप से हानि, भूकम्प, बाढ़ तथा ओलों से उपज को हानि होगी कहीं कहीं हड़ताल दंगे फसाद, तथा आपसी झगड़ों के कारण जनता में बेचैनी उत्पन्न होगी।

धन का स्वामी शुक्र होने के कारण यहां के व्यापार में अधिक लाभ मिलने की संभावना है। मजदूर वर्ग को लाभ मिलेगा। नए उद्योग धन्धे खोले जाएगे। शिक्षा को नया रूप दिया जाएगा। सड़कों एवं नदी नालों का पूर्ण विकास किया जाएगा जिससे अधिक धन प्राप्त होगा तथा नवीन कारखानों का निकास होगा।

धान्य के स्वामी गुरु होने के कारण धान्य की उपज संतोष जनक होगी । घास, वनस्पति, पदार्थ, पेड़, फल फूल अधिक मात्रा में उत्पन्न होगें । पच्छिमी भागों में धान्य की उपज में कुछ हानि होगी । सोना तथा चाँदी का भाव तेज़ रहेगा । चौमासी फलों के स्वामी मंगल एव शुक्र होने के कारण मूंगी, मक्की, दालें, सरसों एवं अखरोट, बादाम, तथा माष जवार की उपज़ अधिक होगी । फलों के स्वामी मंगल होने से कई स्थानों पर फलों को कुछ नुकसान तथा आकाशीय उत्पातों से हानि व कीड़े लगने का भय व्याप्त रहेगा इस वर्ष स्वास्थ्य का विभाग शुक्र अधीन होने के कारण जनता में रोग जैसे खांसी, रक्त-चाप,एवं हृदय रोग तथा कंसर के रोगों से सामना करना पड़ेगा । वर्षाभगवती व्यापारिक होने के कारण व्यापारी वर्ग को लाभ उत्तम रहेगा । दूध दहीं एवं मीठे पदार्थ अधिक मात्रा में प्राप्त होगे ।

इस वर्ष रोहिनी का निवास माली के घर में है तथा वर्ष का निवास समुद्र के घर में पड़ा है । वर्ष के मध्यभाग में वर्षा से बाढ़, भूकम्प, तथा आकाशीय उत्पातों से उपज को हानि पहुंचने का भय रहेगा । आरंभ में कृषि वर्ग को कठिनता का सामना करना पड़ेगा ।

इस वर्ष सरकार यात्रियों की सुविधा के लिए अच्छा प्रबन्ध करेगी । सरकारी कर्मचारियों के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा । शिक्षा विभाग की ओर अधिक ध्यान दिया जाएगा नए नए सड़कों के निर्माण में तथा यातायात के साधनों पर सरकार अधिक धन व्यय करेगी । सब्जी आदि की उपज़ अच्छी रहेगी । अधिक मास तथा मल मास वैशाख एवं जेष्ठ में पड़ने से तथा ैत्र अमावसी और भाद्रपद अमावस्था में सूर्य ग्रहण होने के प्रभाव से यहां की सीमाओं पर हलचल एवं किसी महान नेता का निधन होने की संभावना है । सेब बादाम आड़ू आदि की उपज अच्छी रहेगी ।

ॐ श्री गणेशाय नमः ॥

मुहूर्त्त प्रकरण

सप्तर्षि संवत् ५०६४ विक्रमी २०४५ ईस्वी १९८८-८९ के लिए

नोट—इस मुहूर्त्त प्रकरण का समय बजे मिनटों में रखा गया है। मास और सन् अंग्रेज़ी में रखे गए हैं।

इस वर्ष शुभ कार्यों के लिए निषेध समय :

२१ अप्रैल सन् ८८ से १५ जून सन् १९८८ तक

१) मल मास, भानु मास गुरु अस्त तथा शुक्रास्त।

२) १६ अगस्त से १७ सितंबर तक सिंह में सूर्य—(शंकु प्रतिष्ठा के बिना)

३) २६ सितम्बर से १० अक्तूबर तक पितृपक्षः।

४) १४ दिसंबर से १४ जनवरी ८९ तक धनु में रवि।

५) १७ फर्वरी से अगले अप्रैल के द्वितीय सप्ताह तक शुक्रास्त।

अतः सनातनधर्मी, वेद शास्त्रमार्ग अनुरागी और उन्नति के पथ पर चलने वाले शुभ समय तथा शुद्ध मुहूर्त्त पर ही अपने कार्यों का समारम्भ करें जो धर्म शास्त्र तथा ज्योतिष शास्त्र के आधार पर संगत है। अशुभ समय में कोई भी शुभ काम करने से हानि, परेशानी और अनिष्ट की संभावना रहा करती है। शुभ मुहूर्त्त कल्याणकारी होते हैं।

—गणित कर्ता

अथमुहूर्त्त विवरण

१९८८-१९८९ ईस्वी के लिए

अथयज्ञोपवीत मुहूर्त

चैत्र शुक्ल पक्ष :—

२० मार्च रविवार तृतीया प्रातः ९-१० से १०, ५० तक वृष लग्न समः दिने १०-५९ से ९-११ तक मि लग्न।

२७ मार्च रविवार दशमी प्रातः १।३५ से १२-४० मि लं समः

२८ मार्च सोमवार एकादशी प्रातः १।३० से १२।४१ मि लग्न।

वैशाख कृष्ण पक्ष :—

४ अप्रैल सोमवार द्वितीय प्रातः १०-५ से १२-२७ मि लग्न

७ अप्रैल गुरुवार पंचमी प्रातः ७-५८ से १२-५ मि लग्न दिने १२-५ से २-१० तक क लग्न।

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष :

२७ जून सोमवार त्रयोदशी दिने ११-३२ से १-३४ तक क लग्न सम

आषाढ़ कृष्ण पक्ष :—

४ जुलाई सोमवार पंचमी

११-७ से १-२० कं लग्न,

भाद्र शुक्ल पक्ष :—

२२ सितम्बर गुरुवार एकादशी दिने ८,५० से १०-४० तुं लग्न

२३ सितम्बर शुक्रवार द्वादशी प्रातः ८।४६ से १०-४४ तुला लग्न सम शुक्र पूजन।

आश्विन शुक्ल पक्ष :—

१२ अक्तूबर बुधवार द्वितीया दिन ११-५९ से १-५७ घं लग्न

विवाह मुहूर्त

वैशाख शुक्ल पक्ष :—

२० अप्रैल बुधवार चतुर्थी प्रातः ११-२० से १-४२ दिन तक क लग्न समः रात १-२१ से २–५० तक मं लग्न।

आषाढ़ शुक्ल पक्ष :—

१७ जुलाई रविवार तृतीया, दिन १२-३६ से ३-० तक तुं लग्न समः।

१८ जुलाई सोमवार चतुर्थी रात ११-५० से १-१० मे लग्न रात १-५ से ३-१५ तक वृष लग्न।

२१ अक्तूबर शुक्रवार एकादशी दिन ११-३० से १-२७ घं लग्न समः।

कार्तिक शुक्ल पक्ष :—

११ नवम्बर शुक्रवार द्वितीय दिने १०-१२ से १२-१ घं लग्न दिने १२-१० से १-४६ मं लग्न।

मार्ग कृष्ण पक्ष :—

२५ नवम्बर शुक्रवार द्वितीया दिने ११-१५ से १२-४० मं लग्न

२८ नवम्बर सोमवार पंचमी दिने ११–१ से १२–३२ मं लग्न समः।

माघ कृष्ण पक्ष :—

२७ जनवरी शुक्रवार पंचमी प्रातः ९-२० से १०-५७ मी लं समः।

माघ शुक्ल पक्ष :—

१० फरवरी शुक्रवार पंचमी प्रातः ८-५० से १०–२० तक मी लं दिने १०-३० से ११-३१ मेष लग्न।

१५ फरवरी बुधवार दशमी प्रातः ९-५० से ११-७ मेष लग्न।

२२ जुलाई शुक्रवार अष्टमी दिन १२-२० से २-४० तुं लग्न समः। रात ११-३० से १२-५० तक मेष लग्न समः।

२४ जुलाई रविवार दशमी दिन १२-२० से २-३० तक तुं लग्न समः रात ११-२४ से १२-४० तक मेष लग्न।

श्रावण कृष्ण पक्ष :—

३ अगस्त बुधवार षष्टी दिन ११-३५ से १-५० तक तु लग्न रात १०-४० से १२-५ तक मेष लग्न।

६ अगस्त शनिवार नवमी रात १०-३० से ११-५५ मेष लग्न समः।

७ अगस्त रविवार दशमी दिने ६-१२ से ७-४० मकर तक लग्न समः।

८ अगस्त सोमवार एकादशी दिने ६-८ से ७-४२ तक मं लग्न समः।

श्रावण शुक्ल पक्ष :—

१३ अगस्त शनिवार प्रतिपदि प्रातः १०।५१ से १-१२ तक तुं लग्न सम रात ९-५९ से ११-२४ तक मेष लग्न।

१५ अगस्त सोमवार तृतीया प्रातः १०।४४ से १-६ तक तुं लग्न रात ९-५९ से ११-२४ तक मेष लग्न समः।

भाद्र शुक्ल पक्ष :—

२१ सितम्बर बुधवार दशमी प्रातः १०।५९ से १-१४ वृ. लग्न रात ७-४० से ९-८ तक मेष लग्न समः

आश्विन शुक्ल पक्ष :—

१२ अक्तूबर बुधवार द्वितीया प्रात; ९-४० से ११-५० वृ लग्न समः। रात ७-५९ से ९-४० तक वृष लग्न समः।

१४ अक्तूबर शुक्रवार चतुर्थी प्रातः ९-३ से ११-५० तक वृष लग्न समः रात ७-५० शे ९-४० तक वृष लग्न

१५ अक्तूबर शनिवार

द्वादशी रात ११-२५ से, १-४४ तक कं लग्न ।

२३ अक्तूबर रविवार त्रयोदशी दिने १–११ से २-५० मं तक लग्न समः

कार्तिक कृष्ण पक्ष :—

२७ अक्तूबर गुरुवार तृतीया रात ३-५४ से ६-११ तक कं लग्न ।

२८ अक्तूबर शुक्रवार चतुर्थी दिन १-१० से २-४० मं लग्न समः दिने ४-१० से ५-२० तक पी लग्न ।

२९ अक्तूबर शनिवार पंचमी दिने १.१५ से २-३७ तक मं लग्न समः ।

२ नवम्बर बुधवार अष्टमी रात १०-५० से १-६ तक कर्क लग्न ।

३ नवम्बर गुरुवार नवमी प्रातः ८।५० से १०.१० तक वृ लग्न रात १०-४० से १-२ तक कर्क लग्न समः

कार्तिक शुक्ल पक्ष :—

१४ नवम्बर सोमवार पंचमी रात १०-२ से १२-१५ तक कर्क लग्न ।

२० नवम्बर रविवार द्वादशी दिन ११-३५ से १-५ तक मकर लग्न रात ९-३५ से ११-५० तक कर्क लग्न ।

मार्ग कृष्ण पक्ष :—

२४ नवम्बर गुरुवार प्रतिपदि प्रातः ११-४० से १२-१५ तक मकर लग्न रात ९-२० से ११-३० तक कर्क लग्न समः ।

२५ नवम्बर, शुक्रवार द्वितीय दिन ११-२० से १२-४० तक मकर लग्न रात ९-१५ से ११-३० तक कर्क लग्न समः च दान

३० नवं. बुद्ध. सप्तमी प्रातः १०-५४ से १२-२८ तक मकर लग्न रात ३।५९ से ६-२० तक तुला लग्न समः ।

२ दिसम्बर शुक्रवार नवमी

रात ८-४० से ११-३ तक कर्क लग्न ।

३ दिसम्बर शनिवार दशमी प्रात: ११-४० से १२-११ तक मं लग्न रात ८।४५ से १०-५० तक कर्क लग्न ।

मार्ग शुक्ल पक्ष :—

१२ दिसम्बर सोमवार तृतीया प्रातः १२-१ से ११-३३ तक मं लग्न ।

पौ शुक्ल पक्ष :—

१८ जनवरी बुधवार द्वादशी दिन १०–२२ से ११-२३ तक मीन लग्न ।

माघ कृष्ण पक्ष

२६ जनवरी गुरुवार चतर्थी दिने १०-५० से ११-२ मी लग्न १२–३६ से २–२४ तक वृष लग्न

२७ जन. शुक्रवार पंचमी प्रात: ९-४४ से १०।५० मी तक लग्न दिन १२-२० से २-१८ वृष लग्न सम: रात २-२० से ४–३० तक वृ लग्न ।

१ फरवरी बुधवार दशमी प्रात: १–२० से १०-३६ तक मीन लग्न सम:

माघ शुक्ल पक्ष

१० फरवरी शुक्रवार पंचमी प्रात: ८।५० से १०-० तक मी लग्न रात १-२० से ३-४० तक वृ लग्न सम: ।

१५ फरवरी बुधवार दशमी प्रात: ९-४० से ११-१ मी लग्न सम: दिन ११।२० से १२–५७ वृष लग्न ।

बारदान (गण्डुन) मुहूर्त

वैशाख कृष्ण पक्ष :

१४ अप्रैल गुरुवार त्रयोदशी

वैशाख शुक्ल पक्ष :

२० अप्रैल बुधवार चतुर्थी १२ दिन से ।

आषाढ़ शुक्ल पक्ष :

२० जुलाई बुधवार षष्ठी
२२ जुलाई शुक्रवार अष्टमी
२४ जुलाई रविवार दशमी
२७ जुलाई बुधवार त्रयोदशी
२८ जुलाई गुरुवार चतुं-दशी [illegible] दिन से

श्रावण कृष्ण पक्ष

३ अगस्त बुधवार षष्ठी

७ अगस्त रविवार दशमी

८ अगस्त सोमवार एकादशी

श्रावण शुक्ल पक्ष

१५ अगस्त सोमवार तृतीया १० बजे दिन से

भाद्र शुक्ल पक्ष

१९ सित सोमवार अष्टमी

२१ अगस्त बुधवार दशमी

अश्विन शुक्ल पक्ष

१२ अक्तूबर बुधवार द्वितीया

१४ अक्तूबर शुक्रवार चतुर्थी

२३ अक्तूबर रविवार त्रयोदशी

२४ अक्तूबर सोमवार चतुर्दशी ११ बजे दिन से

कार्तिक कृष्ण पक्ष

२८ अक्तूबर शुक्रवार चतुर्थी

३ नवम्बर गुरुवार नवमी दिने ११-० से

६ नवम्बर रविवार द्वादशी

७ नवम्बर सोमवार त्रयोदशी।

कार्तिक शुक्ल पक्ष

१० नवम्बर गूरुवार प्रतिपदि ११ बजे दिन से।

११ नवम्लर शुक्रवार द्वितीया

१३ नवम्बर रविवार चतुर्थी

२० नवम्बर रविवार द्वादशी

मार्ग बदि

२४ नवम्बर गुरुवार प्रतिपदि

२५ नवम्बर शुक्रवार द्वितीया

पौष शुक्ल पक्ष

१८ जनवरी बुधवार द्वादशी

१९ जनवरी गुरुवार त्रयोदशी।

माघ बदि

२६ जनवरी गुरुवार चतुर्थी १०-१ से

२७ जनवरी शुक्रवार पंचमी

२९ जनवरी रविवार सप्तमी

३० जनवरी सोमवार अष्टमी ११ बजे तक

१ फरवरी बुधवार दशमी ।

३ फरवरी शुक्रवार द्वादशी

माघ शुक्ल पक्ष

१० फरवरी शुक्रवार पंचमी

१५ फरवरी बुधवार दशमी

जात कर्म (काहनेथर)

अथ जात कर्म मुहूर्त

चैत्र शुक्ल पक्ष

२३ मार्च बुधवार षष्ठी

२४ मार्च गुरुवार सप्तमी

२८ मार्च चन्द्रवार एकादशी

वैशाख कृष्ण पक्ष

४ अप्रैल सोमवार द्वितीया

वैशाख शुक्ल पक्ष

२० अप्रैल बुधवार दिन ३–१५ से

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

२२ जून बुधवार अष्टमी

२४ जून शुक्रवार दशमी

२७ जून सोमवार त्रयोदशी

आषाढ़ कृष्ण पक्ष

१ जुलाई शुक्रवार द्वितीया

४ जुलाई सोमवार पंचमी

आषाढ़ शुक्ल पक्ष

१५ जुलाई शुक्रवार द्वितीया

२० जुलाई बुधवार षष्ठी

२१ जुलाई गुरुवार सप्तमी

२२ जुलाई शुक्रवार अष्टमी ३ बजे दिन तक

श्रावण शुक्ल पक्ष

१५ अगस्त सोमवार तृतीया

भाद्र शुक्ल पक्ष

२१ सितम्बर बुधवार दशमी

२२ सितम्बर गुरुवार एकादशी ।

आश्विन शुक्ल पक्ष

१२ अक्तूबर बुधवार द्वितीया

२१ अक्तूबर शुक्रवार एकादशी ।

कार्तिक शुक्ल पक्ष

११ नवम्बर शुक्रवार द्वितीया

१४ नवम्बर चन्द्रवार पंचमी

२१ नवम्बर सोमवार त्रयोदशी

मार्ग कृष्ण पक्ष

२५ नवम्बर शुक्रवार द्वितीया

२८ नवंबर सोमवार पंचमी

पौष शुक्ल पक्ष

१८ जनवरी सोमवार द्वादशी

१९ ,, गुरुवार त्रयोदशी

माघ कृष्ण पक्ष

२६ जनवरी गुरुवार चतुर्थी १२ बजे दिन से

२७ जनवरी शुक्रवार पचमी

माघ शुक्ल पक्ष

१५ फर्वरी बुधवार दशमी

१७ ,, शुक्रवार द्वादशी

चूड़ाकरण मुहूर्त्त

(जर कासय)

वैशाख शुक्ल पक्ष

२० अप्रैल बुधवार पंचमी

दिने ११-२० से १-४० क लग्न

भाद्र शुक्ल पक्ष

२२ सितंबर गुरुवार एकादशी दिन १०-५५ से १-१४ वृं समः

आश्विन शुक्ल पक्ष

१२ अक्तू बुधवार द्वितीया प्रातः ९-५० से ११-५७ वृं दिने १२-५ से १-२० मं लग्न

कार्तिक शुक्ल पक्ष

११ नवम्बर शकुवार द्वितीया दिने १२-२० से १-४५ मं लग्न

मार्ग कृष्ण पक्ष

२५ नवंबर शुक्रवार द्वितीया दिने ११-३० से १२।४० मं लग्न

माघ कृष्ण पक्ष

२७ जनवरी शुक्रवार पंचमी

प्रातः ९-४५ से १०।५७ मी लं

माघ शुक्ल पक्ष

१५ फर्वरी बुधवार दशमी दिने ९-५० से ११-५ मेष लग्न

१७ फर्वरी शुक्रवार द्वादशी दिने १०।५९ से १२।५२ तक वृष लग्न समः

विद्यारंभ मुहूर्त्त

चैत्र शुक्ल पक्ष

२० मार्च रविवार तृतीया

२३ मार्च बुधवार षष्टयां

२७ मार्च रविवार दशमी

वैशाख कृष्ण पक्ष

६ अप्रैल बुधवार चतुर्थी दिन के २ बजे से

वैशाख शुक्ल पक्ष

२० अप्रैल बुधवार दिन के ३।३० से

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

२४ जून शुक्रवार दशमी

आषाढ़ कृष्ण पक्ष

१ जुलाई शुक्रवार द्वितीया

आषाढ़ शुक्ल पक्ष

२० जुलाई बुधवार षष्ठी

२४ जुलाई रविवार दशमी

श्रावण कृष्ण पक्ष

३१ जुलाई रविवार तृतीया

भाद्र शुक्ल पक्ष

२१ सितं. बुधवार दशमी

२२ सितं. गुरुवार एकादशी

आश्विन शुक्ल पक्ष

१२ अक्तू बुधवार द्वितीया

२१ अक्तू. शुक्रवार एकादशी

कार्तिक शुक्ल पक्ष

११ नवं. शुक्रवार द्वितीया

२१ नवं. सोमवार त्रयोदशी

मार्ग कृष्ण पक्ष

२५ नवम्बर शुक्रवार द्वितीया

२८ ,, सोमवार पंचमी

मार्ग शुक्ल पक्ष

११ दिसं. रविवार द्वितीया

पौष शुक्ल पक्ष

१८ जनवरी बुधवार द्वादशी

१९ जनवरी गुरुवार त्रयोदशी

माघ शुक्ल पक्ष

१५ फर्वरी बुधवार दशमी

१७ फर्वरी शुकवार द्वादशी

पन्नदान महूर्त

पन्न देने के महूर्त

भाद्र शुक्ल पक्ष

१४ सितं. बुधवार तृतीया

१५ सितं. गुरुवार चतुर्थी

१९ सितं. सोमवार अष्टमी

२१ सितं. बुधवार दशमी

२२ सितं. गुरुवार एकादशी

२३ सितं. शुकवार द्वादशी

दूध देने के मुहूर्त

चैत्र शुक्ल पक्ष

२४ मार्च गुरुवार सप्तमी

२७ मार्च रविवार दशमी

आषाढ़ शुक्ल पक्ष

१४ जुलाई गुरुवार प्रतिपदि
२४ ,, रविवार दशमी
१२-१ दिन से
२६ जुलाई मंगलवार द्वादशी
१२ बजे से

भाद्र शुक्ल पक्ष

२२ सितं: गुरुवार एकादशी

कार्तिक कृष्ण पक्ष

२७ अक्तू. गुरुवार दिने
४।३० से

कार्तिक शुक्ल पक्ष

१० नव. गुरुवार प्रतिपदि
३ बजे से

मार्ग शुक्ल पक्ष

१३ दिसं मंगलवार पंचमी

पौष शुक्ल पक्ष

१९ जनवरी गुरुवार
त्रयोदश्यां

दीपदान मुहूर्त

कार्तिक कृष्ण पक्ष

९ नवंबर बुधवार अमावसी

कार्तिक शुक्ल पक्ष

११ नवं. शक्रवार द्वितीया
१४ ,, सोमवार पंचमी
२१ ,, सोमवार त्रयोदशी

पौष शुक्ल पक्ष

१८ जनवरी बुधवार द्वादशी

माघ कृष्ण पक्ष

२३ जनवरी सोमवार द्वितीया
२७ जनवरी शुक्रवार पंचमी
१ फर्व. बुधवार दशमी
३ ,, शुक्रवार द्वादशी

माघ शुक्ल पक्ष

१५ फर्वरी बुधवार दशमी

दहन वास्तु (चूल्हा बनाने के मुहूर्त)

चैत्र शुक्ल पक्ष

२३ मार्च बुधवार षष्ठी
२४ मार्च गुरुवार सप्तमी
२८ मार्च सोमवार एकादशी
३१ मार्च गुरुवार त्रयोदशी

वैशाख कृष्ण पक्ष

४ अप्रैल सोमवार द्वितीया

७ अप्रैल गुरुवार पंचमी

वैशाख शुक्ल पक्ष

२० अप्रैल बुधवार चतुर्थी दिने २-३० से

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

२४ जून शुक्रवार दशमी

२७ जून सोमवार त्रयोदशी

आषाढ़ कृष्ण पक्ष

१ जुलाई शुक्रवार द्वितीया

आषाढ़ शुक्ल पक्ष

२० जुलाई बुधवार षष्ठी

२२ जुलाई शुक्रवार अष्टमी

२५ जुलाई सोमवार एकादशी

२९ जुलाई शुक्रवार पूर्णिमा

श्रावण शुक्ल पक्ष

१५ अगस्त सोमवार तृतीया

भाद्र शुक्ल पक्ष

२१ सितं. बुधवार दशमी

२२ सितं. गुरुवार एकादशी

आश्विन शुक्ल पक्ष

१२ अक्तू. बुधवार द्वितीया

कार्तिक शुक्ल पक्ष

११ नवं. शुक्रवार द्वितीया

२१ नवं. सोमवार त्रयोदशी

मार्ग कृष्ण पक्ष

२५ नवं. शुक्रवार द्वितीया

२८ नवं सोमवार पंचमी

पौष शुक्ल पक्ष

१९ जनवरी गुरुवार त्रयोदशी दिने ३-१ तक

माघ कृष्ण पक्ष

२६ जनवरी गुरुवार चतुर्थी ११ बजे से

२७ जनवरी शुक्रवार पंचमी ४ बजे तक

माघ शुक्ल पक्ष

१५ फर्वरी बुधवार दशमी

शिशर लागुन मुहूर्त

मार्ग शुक्ल पक्ष

१८ दिसंबर रविवार दशमी
१९ दिसं. सोमवार एकादशी
दिन के ११ बजे तक।
२१ दिस. बुधवार त्रयोदशी
१० बजे प्रातः से

पौष कृष्ण पक्ष

२५ दिसं. रविवार द्वितीया
३० ,, शुक्रवार सप्तम्या
२ जनवरी चन्द्रवार दशम्यां
४ ,, बुधवार द्वादश्यां

पौष शुक्ल पक्ष

९ जनवरी सोमवार द्वितीया
१८ जनवरी बुधवार द्वादशी
१९ जनवरी गुरुवार त्रयोदशी

प्रवेश मुहूर्त नये मकान में दाखिल होना

वैशाख शुक्ल पक्ष

२० अप्रैल बुधवार पंचमी
दिन ११-२० से १-४० तक क लग्न समः

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

२५ जून शनिवार एकादशी
प्रातः ११-४० से २-३ तक क लग्न समः

आषाढ़ कृष्ण पक्ष

१ जुलाई शुक्रवार द्वितीया
प्रातः ८।५२ से ११-१० तक सिं लघ्न प्रातः ११-३० से १-३९ तक कं लग्न

भाद्र शुक्ल पक्ष

२१ सितंबर बुधवार दशमी
दिने ३-२० से ४-४० तक मं लग्न समः

आश्विन शुक्ल पक्ष

१२ अक्तू. बुधवार द्वितीया
दिने ३-४० से ४-५९ दिन तक कुं लग्न समः

मार्ग कृष्ण पक्ष

२५ नवंबर शुक्रवार द्वितीया

प्रातः ११-२० से १२-४० तक मं लग्न समः

२८ नवंबर सोमवार पंचमी प्रातः १०-५९ से १२-३० तक मं लग्न समः

माघ शुक्ल पक्ष

१५ फर्वरी बुधवार दशमी प्रातः ८।२० से ९-२७ मी लं प्रातः ११-४ से १२-५६ तक वृष लग्न समः

शंकू प्रतिष्ठा मुहूर्त (बूनियाद मकान) (पूर्व-पश्चिम मुख)

२१ जुलाई गुरुवार सप्तमी

प्रातः १२-२४ से २-४० तक तुं लग्न समः

२२ जुलाई शुक्रवार अष्टमी दिन १२-२० से २-३८ तक तुं लग्न समः

श्रावण शुक्ल पक्ष

१८ अगस्त गुरुवार षष्ठी प्रातः १०-५६ से १२-५० तक तुं लग्न समः

१९ अगस्त सप्तमी दिन १२-५१ से ३-१० तक वृं लग्न

२५ अग. गुरुवार त्रयोदश्यां दिने १२-२ से २-५१ तक धं लग्न समः

भाद्र शुक्ल पक्ष

१४ सितंबर बुधवार तृतीया

प्रातः ८।५६ से ११-१० तक तुं लग्न समः

पौष शुक्ल पक्ष

१८ जनवरी बुधवार द्वादशी प्रातः ९-१ से १०-१७ कुं लग्न

१९ जनवरी गुरुवार त्रयोदशी प्रातः ८।२० से १०-१० तक कुं लग्न

माघ कृष्ण पक्ष।

२६ जनवरी गुरुवार चतुर्थी दिन २-३० से ४-३९ तक मिलं समः

२७ जनवरी शुक्रवार पंचमी दिने ४-४१ से ६-५९ तक क

शिशर लागुन मुहूर्त

मार्ग शुक्ल पक्ष

१८ दिसंबर रविवार दशमी

१९ दिसं. सोमवार एकादशी दिन के ११ बजे तक।

२१ दिसं. बुधवार त्रयोदशी १० बजे प्रातः से

पौष कृष्ण पक्ष

२५ दिसं. रविवार द्वितीया

३० ,, शुक्रवार सप्तम्या

२ जनवरी चन्द्रवार दशम्यां

४ ,, बुधवार द्वादश्यां

पौष शुक्ल पक्ष

९ जनवरी सोमवार द्वितीया

१८ जनवरी बुधवार द्वादशी

१९ जनवरी गुरुवार त्रयोदशी

प्रवेश मुहूर्त
नये मकान में दाखिल होना

वैशाख शुक्ल पक्ष

२० अप्रैल बुधवार पंचमी दिन ११-२० से १-४० तक क लग्न समः

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

२५ जून शनिवार एकादशी

प्रातः ११-४० से २-३ तक क लग्न समः

आषाढ़ कृष्ण पक्ष

१ जुलाई शुक्रवार द्वितीया प्रातः ८।५२ से ११-१० तक सिं लग्न प्रातः ११-३० से १-३९ तक कं लग्न

भाद्र शुक्ल पक्ष

२१ सितंबर बुधवार दशमी दिने ३-२० से ४-४० तक मं लग्न समः

आश्विन शुक्ल पक्ष

१२ अक्तू. बुधवार द्वितीया दिने ३-४० से ४–५९ दिन तक कुं लग्न समः

मार्ग कृष्ण पक्ष

२५ नवंबर शुक्रवार द्वितीया

प्रातः ११–२० से १२-४० तक मं लग्न समः

२८ नवंबर सोमवार पंचमी प्रातः १०-५९ से १२-३० तक मं लग्न समः

माघ शुक्ल पक्ष

१५ फर्वरी बुधवार दशमी प्रातः ८।२० से ९-२७ मी लं प्रातः ११-४ से १२-५६ तक वृष लग्न समः

शंकू प्रतिष्ठा मुहूर्त (बूनियाद मकान) (पूर्व-पश्चिम मुख)

२१ जुलाई गुरुवार सप्तमी प्रातः १२-२४ से २-४० तक तुं लग्न समः

२२ जुलाई शुकृवार अष्टमी दिन १२-२० से २-३८ तक तुं लग्न समः

श्रावण शुक्ल पक्ष

१८ अगस्त गुरुवार षष्ठी प्रातः १०-५६ से १२-५० तक तुं लग्न समः

१९ अगस्त सप्तमी दिन १२-५१ से ३-१० तक वृं लग्न

२५ अग. गुरुबार त्रयोदश्यां दिने १२-२ से २–५१ तक धं लग्न समः

भाद्र शुक्ल पक्ष

१८ सितंबर बुधवार तृतीया प्रातः ८।५६ से ११-१० तक तुं लग्न समः

पौष शुक्ल पक्ष

१८ जनवरी बुधवार द्वादशी प्रातः ९-१ से १०-१७ कुं लग्न

१९ जनवरी गुरुवार त्रयो-दशी प्रातः ८।२० से १०-१० तक कुं लग्न

माघ कृष्ण पक्ष।

२६ जनवरी गुरुवार चतुर्थी दिन २-३० से ४-३९ तक मिलं समः

२७ जनवरी शुक्रवार पंचमी दिने ४-४१ से ६-५९ तक क लग्न समः

माघ शुक्ल पक्ष

१५ फर्वरी बुधवार दशमी प्रातः ८-३० से ९-२७ तक मीलं दिन १-१० से ३-१५ तक मीलं

१७ फर्वरी शुक्रवार द्वादशी दिन १२-५९ से ३-६ मिलंग्न समः।

शंकु प्रतिष्ठा

(दक्षिण-उत्तर मुख)

वैशाख शुक्ल पक्ष

२० अप्रैल बुधवार पंचमी दिने १-५० से ३-५६ तक सिं-लग्न समः

कार्तिक कृष्ण पक्ष

२९ अक्तूबर शनिवार पंचमी प्रातः १०-५८ से १२-५९ तक धंलं समः

कार्तिक शुक्ल पक्ष

११ नवंबर शुक्रवार द्वि ीया दिन १२-१० से १-४० तक मं लग्न

१४ नवंबर सोमवार पंचमी दिने १-३४ से २-५० तक कुं लं समः।

मार्ग कृष्ण पक्ष

२५ नवंबर शुक्रवार द्वितीया प्रातः ११-२० से १२-५३ मं लग्न समः।

२८ नवंबर सोमवार पंचमी दिन १२-४० से १-५८ तक कुं लग्न समः।

इति शुभं



सप्तर्षि संवत् ५०६४ बिक्रमी संवत् २०४५ सन् ई० १९८८ शाके १९१० चैत्र शुक्ल पक्ष: ३०१० मीन में सूर्य,

मेष में गुरु, शुक्र, धनु में मंगल–शनि, कुंभ में बुध, राहु सिंह में केतु   १८ मार्च से २ अप्रैल तक वसन्त ऋतु ।

	राष्ट्र	चैत्र	मार्च	वार	नक्षत्र		घड़ी	पल	तिथि		घड़ी	पल	सू उ	सू अ	ग्रह संचार बजे मिनटों में
१५													६	६	नव दुर्गा आरंभ, नया वर्ष भी, थाल बरून, १–७ रातL ग्रस्तोदयB
	२	५	१८	शु	उभा	शे	२	०	अं	दि	०	३८	३१	२९	त्र्यहः, दिन कम, विचार नाग यात्रा, श्री भट्ट दिवस, चंद्रNश्रीA
१५	०	६	१९	श	रे	शे	५	४	हि	शे	४	११	३०	३०	चंद्र दर्शन, ९-४४ रात गंडान्त आरम्भ, ९।३६ रातK ४-३३R
१४	५७	७	२०	र	अ	शे	७	२२	तृ	शे	८	१५	२९	३१	९-२२ प्रात: गंडान्त समाप्त, आनन्द: । Rरात मेष में चन्द्रमाX
	५५	८	२१	चं	भ	शे	८	४९	च	शे	११	३२	२८	३२	चर: । Bसूर्यग्रहण प्रात: ५-४३, मोक्ष ७–९ धटस्थापन धवज: ।
	५२	९	२२	मं	कृ	शे	९	१४	पं	शे	१३	४१	२८	३३	८।४९ प्रात: वृष में चन्द्र, मसुलं । Kविश्व पद, Nसंवत्सर आरंभ,
	४९	१०	२३	बु	रो	शे	८	२४	ष	शे	१४	३१	२६	३४	कुमार ६ वृत; शूलम् । Lउदय चंद्रमा, Xपंचक समाप्त, प्रजापत्य:
	४७	११	२४	गु	मृ	शे	६	२२	स	शे	१४	१०	२५	३५	४-३१ दिन मिथुन में चन्द्रमा, मृत्यु: । Pरात कर्कट में चन्द्रमा, I
	४४	१२	२५	शु	आ	शे	२	५	अ	शे	१२	२८	२४	३६	श्री दुर्गा अष्टमी, भवानी जन्म, काम्य: । Iमुद्गरए । Fआनन्द: ।
	४२	१३	२६	श	आ	दि	१	२९	न	शे	९	३७	२३	३७	श्री राम ९, उमा भगवती जयन्ती, श्री शिवाभगवती जयन्ती, T
	३९	१४	२७	र	पु	दि	६	५५	द	शे	५	४१	२२	३८	ध्वज: । ०गंडान्त, ६-२० दिन मकर राशि में मंगल, कामदा ११, F
	३६	१५	२८	चं	ति	दि	१३	३	ए	शे	०	५९	२१	३९	त्रिस्पृक, दिन अधिक, २–५० रात वृष राशि में शुक्र, प्रजापत्य: ।
	३३	१६	२९	मं	अश्ले	दि	१९	३०	ए	दि	४	११	२०	४०	२-८ दिन सिंह राशि में चंद्रमा, ७।२८ प्रात: से ८।४५ सायं तक०
	३१	१७	३०	बु	मं	दि	२५	५३	द्वा	दि	९	१८	१८	४२	१२–२२ दिन मीन राशि में बुध, बुध मास, चर:। Tअकिन ग्राम, S
	१८	१८	३१	गु	यू	प्र	०	४९	त्र	दि	१४	८	१७	४३	१–३६ रात कन्या में चन्द्रमा, जैन महावीर जयन्ती, मसूलम् ।
	२५	१९	अ१	शु	उफा	प्र	५	५७	चं	दि	१८	१५	१६	४४	५-३२ दिन पूर्णिमा में चन्द्रमा, गुडफ्राइडे, शूलम् । S२-४२P
	२३	२०	२	श	ह	प्र	१०	६	यू	दि	२१	१८	१५	४५	श्री हनुमान जयन्ती, शवे बरात, मृत्यु: ।

श्राद्ध —प्रति० और द्वा० से पूर्णिमा तक पहले शेष अपने दिन । | १८ मार्च *सूर्यग्रहण, विचार नाग यात्रा । नव दुर्गा
मध्यान्ह — प्रति०, द्वा० त्रयो० का पहले ही शेष अपने २ दिन । | आरंभ । २२ मार्च कुमार ६, २६ मार्च राम ९ ।

सप्तर्षि संवत् ५०६४ विक्रमी २०४५ शाके १९१० ई० १९८८ वैशाख कृष्ण पक्षः ३१-२० मीन में सूर्य, बुध, मेष में गुरु, वृष में शुक्र, धनु में शनि, मकर में मंगल, कुंभ में राहु सिंह में केतु। ३ अप्रैल से १६ अप्रैल तक। बसन्त ऋत। 40)

ग्रह संचार बजे मिनटों में

	राष्ट्र	चैत्र	अप्रैल	वार	नक्षत्र		घड़ी	पल	तिथि		घड़ी	पल	सू उ ६	सू अ ६
१४	२०	२१	३	र	चि	प्र	१३	७	प्र	दि	२४	१३	१४	४६
	१७	२२	४	चं	स्वा	शे	१५	३१	द्वि	दि	२३	५३	१३	४७
	१५	२३	५	मं	वि	शे	१३	४४	तृ	दि	२३	१४	१२	४८
	१२	२४	६	बु	अं	शे	१३	१०	च	दि	२१	२१	११	४९
	१०	२५	७	गु	ज्ये	शे	१३	५१	पं	दि	१८	२१	१०	५०
	७	२६	८	शु	मू	प्र	१०	१०	ष	दि	१४	२९	९	५१
	४	२७	९	श	पषा	प्र	६	५५	स	दि	९	४७	८	५२
	२	२८	१०	र	उषा	प्र	३	११	अ	दि	४	३३	७	५३
	०	२९	११	चं	श्र	दि	३१	७	द	शे	१	११	६	५४
१३	५७	३०	१२	मं	धं	दि	२७	२४	ए	शे	७	९	५	५५
	५४	वै १	१३	बु	श	दि	२३	६	द्वा	शे	१३	६	४	५६
	५१	२	१४	गु	पूभा	दि	१९	२८	त्र	प्र	३	२५	३	५७
	४९	३	१५	शु	उभा	दि	१६	१५	चं	दि	३०	५१	२	५८
	४६	४	१६	श	रे	दि	१३	४९	अं	दि	२६	४४	१	५९

११-२५ दिन तुला में चन्द्रमा, ३-४६ रात हीन चन्द्रमा, काम्यः। छत्रम्। Oप्रातः से ५-२० दिनN Eलक्ष्मण जी जन्म मानसं। ६-५२ सांय वृश्चिक में चन्द्रमा, संकट ४ वृत, श्री वत्सः। सौम्यः। Aमूल आरंभ, ४-५० दिन से ३-९ रात तक गंडांत,I श्री पंचमी, मंगलेश्वर भैरव जयन्ती, ऋषिपीर श्राद्ध, ११-५७L १०-५५ रात मूल समाप्त, ६-३५ प्रातः पूर्व में बुध अस्त,K ३-१७ रात मकर में चन्द्रमा, मातंगः। Kवेताल ६, स्थिरः। त्र्यहः, दिन कम, ६-३४ प्रातः वक्री शनि, शीतला अष्टमी, अमृतं। १-२५ रात कुंभ में चन्द्रमा, पंचक आरंभ, लक्ष्मी नारायण यज्ञ,S वर्थिनी ११, मासान्त, उन्मूलं। Bवैसाखी विक्रमी २०४५ आरंभ,E ३-३४ दिन से संक्रान्ति, मेष राशि में सूर्य मुहू ३० तटे,R ११-३५ दिन मीन में चन्द्रमा, मुद्गरम्। Rसंक्रान्ति वृतB १०-३ रात चन्द्रमा अस्त, ३-८ दिन मेष राशि में बुध, ध्वजः। १-३० दिन से मेष राशि में चन्द्रमा, पंचक समाप्त, ५-४५O Nतक गंडांत शनैश्चरी अमावसी, वल्लभाचार्य जयन्ती, प्रजापत्यः। Sसिद्धः। Lरात धनु में चन्द्रमाA Iकालदण्डः।

श्राद्ध—प्रति० से नव० और अमा० का पहले शेष अपने दिन। | ५ अप्रैल संकट ४ वृत। ७ अप्रैल श्री पंचमी मंगले-
मध्यान्ह—सप्तमी से नव० पहले दिन शेष अपने दिन। | श्वर भैरव जन्म ऋषि पीरश्राद्ध। १३ अप्रैल वैसाखी।

सप्तर्षि सं. ५०६४ वि. २०४५ शाके १९१० ई० १९८८ भानो वैशाख शुक्ल पक्ष: मल अधिक वैशाख शुक्ल पक्ष:३२।३२

	राष्ट्रीय	वैशाख	अप्रैल	वार	नक्षत्र		घड़ी	पल	तिथि		घड़ी	पल	सू उ ६	सू अ ७
१३	४४	५	१७	र	अ	दि	१२	७	प्र	दि	२३	४९	०	०
	४१	६	१८	चं	भ	दि	११	३०	द्वि	दि	२१	२०	5 5 9	7 1
	३९	७	१९	मं	कृ	दि	१२	३	तृ	दि	२०	२३	५९	२
	३७	८	२०	बु	रो	दि	१३	४७	च	दि	२०	३६	५८	२
	३५	९	२१	गु	मृ	दि	१६	५२	पं	दि	२२	९	५८	२
	३२	१०	२२	शु	आ	दि	२१	२	ष	दि	२४	५५	५६	४
	३०	११	२३	श	पुं	दि	२६	१४	स	दि	२८	४०	५५	५
	२८	१२	२४	र	ति	दि	३२	८	अ	प्र	०	९	५४	६
	२६	१३	२५	चं	आश्ले	प्र	५	२८	न	प्र	५	६	५३	७
	२४	१४	२६	मं	मं	प्र	११	५४	द	प्र	१०	८	५२	८
	२२	१५	२७	बु	यूफा	शे	१४	५३	ए	प्र	१६	३५	५१	९
	२०	१६	२८	गु	उफा	शे	८	४८	द्वा	शे	११	५५	५०	१०
	१७	१७	२९	शु	ह	शे	३	२५	त्र	शे	७	५९	४९	११
	१५	१८	३०	श	ह	दि	१	२	चं	शे	५	१	४८	१२
	१३	१९	म१	र	चि	दि	४	२०	पूं	शे	३	९	४७	१३

मेष में सूर्य, बुध, गुरु, वृष में शुक्र धनु में शनि,मकर में मंगल,
कुंभ में राहु सिंह में केतु। २७ अप्रैल से १ मई तक। ग्रीष्म ऋतु,
ग्रह संचार बजे मिनटों में। 41)

११-३७ दिन उदय चन्द्रमः, चन्द्रदर्शन, आनन्दः। Fस्थिरः।
रोजे आरंभ, रमज़ान, परशुराम जयन्ती, ४-३५ दिन वृष मेंC
अक्षया ३, शिवा जी जयन्ती, मसुल। Eतक गंडान्त सौम्यः।
सूरदास जयन्ती, ११-५८ रात मिथुन राशि में चन्द्रमा, शूलम्।
कुमार ६ व्रत, ९-२० दिन से मलमास का प्रवेश, शंकराचार्यD
९-३५ रात से गुरु अस्त, रामानुजाचार्य जयन्ती, काम्यः।
९-५१ प्रात: कर्कट में चन्द्रमा, गंगा ७ छत्रम्। ।मृत्युः।
भानु अष्टमीं, श्री वत्सः।
९-१९ रात सिंह राशि में चन्द्रमा, २-४१ दिन से ३-४६ रातE
काल दण्डः। Cचन्द्रमा, चरः। Dजयन्ती, मृत्युः।
१२-१४ रात से अगस्त्या मुनि अस्त, माधवी ११, नारद ११,F
८-५२ प्रात: कन्या में चन्द्रमा, मातंगः।
शुक्र मासः, ३-४४ रात पूर्व में बुध उदय अमृतं।
६-५६ दिन से तुला में चन्द्रमा श्री गणेश १४ नृसिंह १४ भानु।
८-३७ प्रात: पूर्णिमा में चन्द्रमा,बुद्ध जयन्तीं, बुद्ध पूर्णिमा,मईA
Aदिवस, मजदूर दिवस, कूर्म जयन्ती, वैशाखी पूर्णिमा,२-३१
रात से वृष राशि में बुध काम्यः

श्राद्ध—प्रति० से सप्त० तक पहले शेष अपने दिन।
मध्यान्ह—अपने अपने दिनों में।

१९ अप्रैल परशुराम जयन्ती, रोजे आरंभ। २१ अप्रैल
मलमास का प्रवेश। १ मई बुद्ध पूर्णिमा, वैशाखी पूर्णिमा।

संवत् ५०६४ वि २०४५ शाके १९१० ई० १९८८ भानो ज्येष्ठ कृष्ण पक्षः मल अधिक वैशाख कृष्ण पक्षः ३३/३८

मेष में सूर्य, गुरु बुध, वृष में शुक्र, धनु में शनि, मकर में भौम कुंभ में राहु, सिंह में केतु । २ मई से १५ मई तक । 42)
ग्रीष्म ऋतुः । ग्रह संचार मिनटों में ।

	राधे	वैसाख	मई	वार	नक्षत्र		घड़ी	पल	तिथि		घड़ी	पल	सू उ ५	सू अ ७
१३	११	२०	२	चं	स्वा	दि	६	१७	प्र	शे	२	३६	४६	१४
	९	२१	३	मं	वि	दि	७	८	द्वि	शे	३	१७	४६	१४
	७	२२	४	बु	अनूं	दि	६	४९	तृ	शे	५	१५	४५	१५
	५	२३	५	गु	ज्ये	दि	५	२३	च	शे	८	१२	४५	१५
	३	२४	६	शु	मू	दि	३	३	पं	शे	१२	११	४४	१६
	१	२५	७	श	पूषा	दि	०	३	ष	प्र	३	४२	४३	१७
२२	५९	२६	८	र	श्र	शे	३	५१	स	दि	३१	५१	४२	१८
	५६	२७	९	चं	धं	शे	७	२७	अ	दि	२५	५५	४१	१९
	५४	२८	१०	मं	शत	शे	११	३२	न	दि	१९	५२	४०	२०
	५२	२९	११	बु	पूभा	प्र	६	२४	द	दि	१३	५९	३९	२१
	५०	३०	१२	गु	उभा	प्र	३	३	ए	दि	८	३२	३८	२२
	४८	३१	१३	शु	रे	प्र	०	२०	द्वा	दि	३	३६	३७	२३
	४६	जे१	१४	श	अ	दि	३२	५३	चं	शे	०	४३	३६	२४
	४३	२	१५	र	भ	दि	३२	२	अं	शे	४	६	३५	२५

नारद जयन्ती, २-३८ रात वृश्चिक में चन्द्रमा, छत्रम् ।
६-६ दिन हीन चन्द्रमा, श्री वत्सः ।
१२-२९ रात गंडान्त आरंभ, सौभ्यः । Aव्रत, कालदण्डः ।
७-५५ प्रातः धनु में चन्द्रमा, मूल आरंभ, १-४३ दिन से गंडान्त।
६-५७ प्रातः मूल समाप्त, ३-४२ दिन मिथुन में शुक्र, स्थिरः ।
११-२४ दिन मकर में चन्द्रमा, मातंगः । ।समाप्त, संकट ४A
मुसलम् ।
१-५४ दिन, कुंभ राशि में चन्द्रमा पंचक आरंभ, शूलम् ।
मृत्युः । Bदिन से १-१६ रात तक गंड़ान्त, शबे कदर, जुमेतुल्लC
४-१७ दिन मीन में चन्द्रमा, काम्यः । Cविदा, श्रीवत्सः ।
रथा ११, भद्रकाली जयन्ती, २-५४ रात कुंभ राशि में मंगल, T
त्र्येहः, दिन कम, ७-३१ सायं मेष में चं., पंचक समाप्त, १-४७B
१-४८ दिन से संक्रान्ति वृष राशि में सूर्य मुहू. ३० नदीN
१२-१९ रात वृष में चन्द्रमा, ३-२ रात से भानुमास प्रवेश, D
Dवट् सावित्री व्रत, नन्द केश्वर यात्रा, हरीश्वर यात्रा, कालदण्डः।
Nसंक्रन्ति व्रत, सौभ्यः। Tश्रीवत्सः ।

श्राद्ध — अष्ट० से त्रयो० तक पहले दिन शेष अपने दिन । | ५ मई संकट ४ व्रत १२ मई रथा ११, भद्रकाली जयन्ती ।
मध्यान्ह — दश० से त्रयो० तक पहले शेष अपने दिन । | १४ मई संक्रान्ति व्रत । १५ भानु मास प्रवेश ।

सप्तर्षि सं. ५०६४ वि० २०४५ शाके १९१० ई० १९८८ भानु मासियों का अधिक ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष मलमासियों का

वैशाख शुक्ल पक्ष ३४।३८ वृष में सूर्य बुध, मिथुन में शुक्र धनु में शनि, कुम्भ में भौम, राहु मेष में गुरु; सिंह में केतु: १६ मई से ३१ मई तक ग्रीष्म ऋतु । ग्रह संचार बजे मिनटों में ।

	राधै	ज्येष्ठ	मई	वार	नक्षत्र		घड़ी	पल	तिथि		घड़ी	पल	सू उ ५	सू अ ७	
१२	४१	३	१६	चं	कृ	दि	३२	१५	प्र	शे	६	२४	३४	२६	१०-३७ रात उदय चन्द्रमा, स्थिर: ।
	३९	४	१७	मं	रो	दि	३३	४५	द्वि	शे	७	३२	३३	२७	चन्द्र दर्शन, मातंग: । Tसे मलमासA
	३७	५	१८	बु	मृ	प्र	१	४२	तृ	शे	७	२३	३३	२७	७-२८ प्रात: मिथुन में चन्द्रमा, ईदुल्लफितर अमृतं ।
	३५	६	१९	गू	आ	प्र	५	३२	च	शे	५	५२	३२	२८	काण्ड: । Aसमाप्त, ११-१० दिन गुरु उदय, अलापक: ।
	३४	७	२०	शु	पु	प्र	१०	२७	पं	शे	३	१७	३१	२९	त्रिस्पृक, दिन अधिक, ५-८ दिन कर्क में चन्द्रमा, ९-५४ रातT
	३३	८	२१	श	ति	शे	१४	४५	पं	दि	०	२४	३१	२९	५ ३७ दिन वक्री शुक्र, कुमार ६ वृत, मैत्रम् । Lबुध, ध्वांक्ष: ।
	३२	९	२२	र	आश्ले	शे	८	५४	ष	दि	४	४७	३१	२९	९-५४ रात गण्डान्त आरंभ, वज्रम् । Cरात मिथुन राशि मेंL
	३१	१०	२३	चं	मं	शे	२	२९	स	दि	९	४४	३१	२९	४-३२ प्रात: सिंह में चंद्रमा, ११-१६ दिन गंडान्त समाप्त, १-४८C
	३०	११	२४	मं	मं	दि	३	५६	अ	दि	१४	४२	३१	२९	कालदण्ड: ।
	३०	१२	२५	बु	यूफा	दि	१०	१०	न	दि	१९	१८	३०	३०	४-८ दिन कन्या से चन्द्रमा, स्थिर: ।
	२९	१३	२६	गु	उफा	दि	१५	४१	द	दि	२३	१२	३०	३०	मातंग: । K९-३० रात से वक्री बुध, वल गणेश १४, मैत्रम् ।
	२८	१४	२७	शु	ह	दि	२०	२१	ए	दि	२६	८	३०	३०	मल साधवी ११ कमला ११, २-२७ रात तुला में चंद्रमा, अमृतं ।
	२७	१५	२८	श	चि	दि	२३	५४	द्वा	दि	२७	५८	२९	३१	काण्ड : । K से वक्री बुध, मलगणेश १४, मैत्रम् ।
	२६	१६	२९	र	स्वा	दि	२६	१३	त्र	दि	२८	३०	२९	३१	सूर्य मास, अलापक: ।
	२५	१७	३०	चं	वि	दि	२७	१९	चं	दि	२७	४७	२९	३१	१०-२० दिन वृश्चिक राशि में चन्द्रमा, ९।३० सायं पूर्णिमाN
	२४	१८	३१	मं	अं	दि	२७	११	पूं	दि	२५	४७	२८	३२	वज्रम् । Nमें चन्द्रमा, ९-३० रातK

श्राद्ध—षष्टी से पूर्णि० तक पहले शेष अपने दिन । | [illegible] मई गुरु उदय । [illegible] मई कुमार षष्ठी वृत । २७ मई

मध्यान्ह—सप्तमी से नवमी तक पहले शेष अपने दिन । माधवी ११, २९ मई सूर्य मास, ३० मई मल गणेश १४ ।

सप्तर्षि संवत् ५०६४ वि. २०४५ शाकः १९१० ई० १९८८ भानु मासियों का अधिक ज्येष्ठ कृष्ण पक्षः मल मासियों

१२

राष्ट्र	ज्येष्ठ	जून	वार	नक्षत्र		घड़ी	पल	तिथि		घड़ी	पल	सू उ ५	सू अ ७	का ज्येष्ठ कृष्ण पक्षः ३५।१२ वृष राशि में सूर्य मिथुन में बुध, शुक्र, कुभ में मंगल राहु,धनु में शनि मेष में गुरु सिंह में केतु, ग्रीष्मऋतु, १ से १४ जून तक । ग्रह संचार बजे मिनटों में (44
														Hचन्द्रमा, १०-२ दिन से ९-३६ रात तक गण्डान्त, ध्वांक्षः ।
२४	१९	१	बु	ज्ये	दि	२५	५६	प्र	दि	२२	४१	२८	३२	३,५० दिन धनु में चन्द्रमा, मूल आरंभ, ८।३० सायं हीनH
२३	२०	२	गु	मू	दि	२३	५०	द्वि	दि	१८	४३	२८	३२	३।२० रात पश्चिम में बुध अस्त; ३-१ दिन मूल समाप्त, धौम्यः
२२	२१	३	शु	पूषा	दि	२०	५६	तृ	दि	१३	५८	२८	३२	संकट ४ वृत, ७-३० सायं मकर में चन्द्रमा, प्रवर्धः ।
२१	२२	४	श	उषा	दि	१७	२८	च	दि	८	३५	२७	३३	क्षयः +वृष राशि में हीनचारी शुक्र, मसुलम् ।
२०	२३	५	र	श्र	दि	१३	३६	पं	दि	२	४६	२७	३३	>यहः, दिन कम, १०-२ रात कुंभ में चन्द्रमा, पंचकK
१९	२४	६	चं	धं	दि	९	३२	स	शे	३	१७	२६	३४	शूलम् । Cराशि में चन्द्रमा, पंचक समाप्त; मैत्रम् ।
१८	२५	७	मं	श	दि	४	५८	अ	शे	९	२४	२६	३४	१२-२४ रात मीन में चन्द्रमा, मृत्यु । Kआरंभ, ६-५ प्रातः+
१८	२६	८	बु	पूभा	दि	१	३३	न	प्र	३	३८	२६	३४	काम्यः । Dवृष राशि में हीनचारी बुध, वज्रम ।
१७	२७	९	गु	रे	शे	१	५३	द	दि	३३	५७	२५	३५	९-४५ रात गंडान्त आरंभ, ११-३३ दिन शुक्रअस्त, ३-३०L
१६	२८	१०	शु	अ	शे	४	४६	ए	दि	२१	३८	२५	३५	मल रथा ११, भद्रकाली जयन्ती, ९-१४ दिन गण्डान्तA
१५	२९	११	श	भ	शे	६	५१	द्वा	दि	२६	१२	२४	३६	शनि प्रदोष वृत, ध्वांक्ष । Lरात मेषC Hचन्द्रमा, १०-२दिन से
१४	३०	१२	र	कृ	शे	७	५९	त्र	दि	२३	४५	२४	३६	८-१२ प्रातः वृष राशि में चन्द्रमा, धौम्यः । EमासC
१३	३१	१३	चं	रो	शे	८	३	चं	दि	२२	३३	२३	३७	८।२८ प्रातः चन्द्रमा अस्त, ब्रह्मयज्ञ जयन्ती, प्रवर्धः ।
१२	अ१	१४	मं	मृ	शे	६	५३	अं	दि	२२	३३	२३	३७	३-५ रिन से मिथुन में चन्द्रमा, ११-३५ रात संक्रांति,B
														P में सूर्य मुहूं ३० समुद्री, संक्रांति वृत, २-२४ दिन भानुE
														Oसमाप्त, क्षयः । Bमिथुन राशिP Aसमाप्त, ४-१९ प्रातःD

श्राद्धः—प्र० से ष०, एका० से अ० तक पहले ही शेष अपने दिन । | ३ जून संकट वृत, ९ जून शुक्रअस्त । ११ जून
मध्यान्ह—तृती० से पंच० तक पहले शेष अपने दिन । | भद्रकाली जयन्ती, १४ जून संक्रान्ति वृत भानु मास समाप्त ।

सप्तर्षि संवत् ५०६४ वि० २०४५ ई० १९८८ शाके १९१० ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष ३५।३६ मिथुन में सूर्य कुंभ में भौम राहु, वृष में गुरु हीन चारी वुद्ध, शुक्र धनु में सिंह में केतु।
ग्रह संचार बजे मिनटों में। ग्रीष्म ऋतु।

	राष्ट्र	आषाढ	जून	वार	नक्षत्र		घड़ी	पल	तिथि		घड़ी	पल	सू उ ५	सू अ ७
१२	१२	२	१५	बु	आ	शे	४	२७	प्र	दि	२३	५०	२३	३७
	११	३	१६	गु	यु	शे	०	४४	द्वि	दि	२६	१९	२३	३७
	१०	४	१७	शु	पु	दि	४	०	तृ	दि	२९	४८	२२	३८
	९	५	१८	श	ति	दि	९	३८	च	दि	३४	७	२२	३८
	८	६	१९	र	अश्ले	दि	१५	५२	पं	प्र	३	१३	२२	३८
	८	७	२०	चं	मं	दि	२२	२०	ष	प्र	८	८	२३	३७
	९	८	२१	मं	यूफा	दि	२८	३३	स	शे	१६	६	२३	३७
	९	९	२२	बु	उफा	दि	३४	१६	अ	शे	११	३१	२३	३७
	१०	१०	२३	गु	ह	प्र	३	३१	न	शे	७	३९	२३	३७
	११	११	२४	शु	चि	प्र	७	२३	द	शे	४	४१	२३	३७
	१२	१२	२५	श	स्वा	प्र	१०	२	ए	शे	२	५१	२३	३७
	१३	१३	२६	र	वि	प्र	११	२५	द्वा	शे	२	१५	२४	३६
	१४	१४	२७	चं	अं	प्र	११	३४	त्र	शे	२	५९	२४	३६
	१४	१५	२८	मं	ज्ये	प्र	१०	३२	चं	शे	२	५२	२४	३६
	१५	१६	२९	बु	मू	प्र	८	३३	यू	शे	७	५४	२४	३६

१०।४३ दिन उदय चन्द्रमा,चन्द्र दर्शन, ३-२१ रात वृष राशिL
१२-२५ रात कर्क में चन्द्रमा, सिद्धः। Lमें गुरु गजः।
प्रताप जयन्ती, अलापकः। Zगंडात, ११-१२A
मैत्रम्। Aदिन पूर्व में बुध उदय,५-१ प्रातः शुक्र उदय,वज्रम्।
११-४२ दिन सिंह में चन्द्रमा, ५-४ प्रातः ५-१० सायं तकZ
कुमार ६ व्रत,८।२६ सायं दक्षिणायण में सूर्यप्रवेश, ध्वांक्षः।
११-२३ रात कन्या में चंद्रमा,१२-६ रात आर्द्रा में सूर्य,धौम्यः।
१२-७ दिन मार्गी बुध,ज्येष्ठ अष्टमी,क्षीर भवानी यात्रा; बुधाS
९-५१ प्रातः तुला राशि में चन्द्रमा क्षयः। S८, प्रवर्धः
गङ्गा जन्म गजः। Cआरंभ भौम मास, मुद्गरम्।
निर्जला ११, सिद्धः।
६-४ दिन वृश्चिक में चन्द्रमा, उन्मूलम्।
मानसम्।
११-४८ रात धनु में चन्द्रमा,मूल आरंभ,५-५५ दिन गण्डान्तC
११-१ रात तक मूल, ५-४० प्रातः गण्डान्त समाप्त, ५-५८K
Kप्रातः पूर्णिमा में चन्द्रमा, माता रूप भवानी जयन्ती, कबीरV
Vजयन्ती ध्वजः।

श्राद्धः—प्रति० से चतुर्थी तक पहले शेष अपने दिन।
मध्यान्ह—अपने अपने दिनों में।

२० जून कुमार ६ व्रत। २२ जून बुधा ८,ज्येष्ठा अष्टमी।
२५ जून निर्जला ११, २९ जून माता रूपभवानी जयन्ती।

सप्तर्षि संवत् ५०६४ वि. २०४५ ई० १९८८ शाके १९१० आषाढ़ कृष्ण पक्षः ३५।२९ मिथुन में सूर्य कुंभ में मंगल राहु, वृष में बुध गुरु शुक्र, धनु में शनि सिंह में केतु । वर्षा ऋतु, ३० जून से १३ जुलाई तक ।

ग्रह संचार बजे मिनटों में ।

	राष्ट्रीय	आषाढ़	जून	वार	नक्षत्र		घड़ी	पल	तिथि		घड़ी	पल	सू उ ५	सू अ ७	
१२	१६	१७	३०	गु	यूषा	प्र	५	४७	प्र	शे	११	५४	२५	३५	१०-४२ रात हीन चन्द्रमा, ३।३७ मकर में चन्द्रमा, गुरु हरZ Zगोविन्द जन्म प्रजापत्य: ।
	१७	१८	जु१	शु	उषा	प्र	२	२५	द्वि	प्र	२	२६	२५	३५	आनन्द: ।
	१८	१९	२	श	श्र	दि	३४	१	तृ	दि	३२	०	२५	३५	संकट ४ वृत, २-४२ रात मार्गी शुक्र, स्थिर: ।
	१९	२०	३	र	धं	दि	२९	५७	च	दि	२५	५५	२६	३४	६-१५ प्रात: कुंभ में चन्द्रमा, पंचक आरंभ, मातंग: ।Xकाण्ड: ।
	२०	२१	४	चं	श	दि	२५	४८	पं	दि	१९	४७	२६	३४	११-१८ दिन मीन राशि में मंगल, ८।१० सायं मिथुन में बुधX
	२०	२२	५	मं	यूभा	दि	२१	५३	ष	दि	१३	४५	२६	३४	८।३४ प्रात: वीन राशि में चन्द्रमा काण्ड: ।
	२१	२३	६	बु	उभा	दि	१८	१७	स	दि	८	७	२७	३३	अलापक: । Aसमाप्त, ६-१५ दिन से ५-१८ सायं गंडान्त, मैत्रम् ।
	२२	२४	७	गु	रे	दि	१५	११	अ	दि	२	५८	२७	३३	त्र्यह:, दिन कम, ११-३४ दिन मेष में चन्द्रमा, पंचकA
	२३	२५	८	शु	अ	दि	१२	५७	द	शे	१	२९	२७	३३	वज्रम् ।
	२४	२६	९	श	भ	दि	१	३४	ए	शे	५	९	२८	३२	४-२ दिन वृष में चन्द्रमा, योगिनी ११, ध्वांक्ष: ।
	२५	२७	१०	र	कृ	दि	११	१६	द्वा	शे	७	५२	२९	३१	धौम्य: ।।
	२६	२८	११	चं	रो	दि	१२	६	त्र	शे	९	७	२९	३१	१०-३७ रात मिथुन में चन्द्रमा, प्रवर्ध: ।
	२६	२९	१२	मं	मृ	दि	१४	१४	चं	शे	९	१४	२९	३१	२-१५ रात चन्द्रमा अस्त, क्षय: ।
	२७	३०	१३	बु	आ	दि	१७	३४	अं	शे	८	५	२९	३१	शहीद दिवस, गज. ।

श्राद्ध —चतुर्थी से नव० तक पहले शेष अपने दिन । | ३० जून गुरु हरगोविन्द जन्म । २ जुलाई संकट ४ वृत ।

मध्यान्ह —षष्ठी से नवमी पहले शेष अपने दिन ।

सप्तर्षि सं० ५०६४ ई० १९८८ वि० २०४५ आषाढ़ शुक्ल पक्षः ३५।४ मिथुन में सूर्य,बुध,मीन में मंगल,वृष में गुरु

	राष्ट्र	आषाढ़	जुलाई	वार	नक्षत्र		घड़ी	पल	तिथि		घड़ी	पल	सू उ	सू अ	शुक्र,धनु में शनि,कुभ में राहु सिह में केतु । वर्षा ऋतु १४ जु. से २९ जु. ग्रह संचार बजे मिनटों में । Nज्वाला १४ खिव यात्रा गुरु मास प्रजापत्यः ।
१२													५	७	A२-१७ दिन संक्रान्ति कर्कट राशि में सूर्य मुहू. १५ नदी,T
	२८	३१	१४	गु	युं	दि	२२	१	प्र	शे	५	३७	३०	३०	७-४८ प्रातः कर्क में चंद्रमा,१२-१७ रात उदय चंद्रमा,स्थिरः ।
	२९	३२	१५	शु	ति	दि	२७	२५	द्वि	शे	२	१८	३०	३०	चंद्र दर्शन,त्रिस्पृक दिन अधिक,मासान्त,श्री जगदीश रथोत्सव,V
	३०	श्र१	१६	श	अश्ले	दि	३३	३०	द्वि	दि	१	५९	३१	२९	६-५५ दिन सिह में च.,१२-१८ दिन १-३० रात तक गंडान्त,A
	३१	२	१७	र	मं	प्र	४	५७	तृ	दि	६	४४	३१	२९	मुद्गरम् । Zहरिस्वाप,लोक भवन यात्रा,भगवानगोपीनाथ ज.,L
	३२	३	१८	चं	पूफा	प्र	११	२३	चं	दि	११	३८	३१	२१	ध्वजः । Bयात्रा,१-४७ वृश्चिक में चंद्रमा,सिद्धः । Lमुद्गरम् ।
	३३	४	१९	मं	उफा	शे	१३	२३	पं	दि	६	१६	३१	२९	कुमार ६ वृत, ६-३७ प्रातः कन्या में चन्द्रमा, प्रजापत्यः ।
	३३	५	२०	बु	ह	शे	७	५१	ष	दि	२०	१५	३१	२९	स्वामी स्वयं आनन्द जी जन्म,आनंदः । Tसंक्रान्ति वृत,मानसमू ।
	३४	६	२१	गु	चि	शे	२	४९	स	दि	२३	१६	३२	२८	५-१६ दिन तुला में चन्द्रमा,आषाढ़ ७ ऊर्स शाहे हमदान,चरः ।
	३६	७	२२	शु	चि	दि	१	११	अ	दि	२५	११	३३	२७	११-४० दिन हरिपद में सूर्य,आषाढ़ अष्टमी,गजः । Vउन्मूलम् ।
	३८	८	२३	श	स्वा	दि	४	५	न	दि	२५	५२	३४	२६	९-४० प्रातः बुध अस्त, आषाढ़ ९ शारिका जयन्ती चक्रेश्वरB
	४०	९	२४	र	वि	दि	५	४३	द	दि	२५	१२	३५	२५	८-३९ सायं कर्कट राशि में बुध, उन्मूलं । Fआरंभ, मानसं ।
	४२	१०	२५	चं	अं	दि	६	२	१०	दि	२३	२२	३५	२५	देव शयनी ११, ईदुल्ल जुहा (बकरीद) १-५० रात गंडान्तF
	४४	११	२६	मं	ज्ये	दि	५	१६	द्वा	दि	२०	२४	३६	२४	७-४२ प्रातः धनु रा. में चं,मूल आरंभ, १-३० दि गंडांत समाप्तZ
	४६	१२	२७	बु	मू	दि	३	२९	त्र	दि	१६	२७	३७	२३	७-२ प्रात. मूल समाप्त, ध्वजः । Kव्यास पूजन, धौम्यः ।
	४८	१३	२८	गु	पूषा	दि	०	५१	चं	दि	११	४६	३८	२२	९-४० दिन मकर में चन्द्रमा, १०-१९ दिन चन्द्रमा अस्त,N
	५०	१४	२९	शु	श्र	शे	२	२५	पूं	दि	६	२५	३१	२१	आषाढ़ पूर्णिमा, गुरु पूर्णिमा, १२-१७ रात उदय चन्द्रमा,K

श्राद्ध—तृती० से पूर्णिमा पहले ही शेष अपने दिन । | १५ जु. जगन्नाथ रथ यात्रा,२६ जु. हरिस्वाप

मध्यान्ह—तृती से षष्ठी तथा चतु०से पूर्णि०पहले शेष अपने दिन । | लोक भवन यात्रा, भगवान गोपीनाथ जय.

सप्तर्षि संवत् ५०६४ वि० संवत् २०४५ सन् ई० १९८८ शाके १९१० श्रावण कृष्ण पक्ष: ३४।१६ कर्क में सूर्य बुध, मीन में भौम, वृष में गुरु, मिथुन में शुक्र, धनु में शनि, कुंभ में राहु सिंह में केतु। वर्षा ऋतु: ३० जुलाई से १२ अगस्त तक

ग्रह संचार बजे मिनटों में ।

	राष्ट्रं	श्रावण	जुलाई	वार	नक्षत्र		घड़ी	पल	तिथि		घड़ी	पल	सू उ	सू अ	
													५	७	A११-१० दिन मिथुन राशि में स्वचारी शुक्र, प्रवर्ध: ।
१२	५२	१५	३०	श	धं	शे	६	८	प्र	दि	०	३८	४०	२८	त्र्यह:, दिनकम, २-२४ दिन कुंभ में चन्द्रमा, पंचक आरंभ,A
	५४	१६	३१	र	श	शे	१०	१४	तृ	शे	५	२८	४०	२०	क्षय: ।
	५७	१७	अ१	चं	पूभा	प्र	७	२८	च	शे	११	४०	४१	१९	संकट ४ व्रत, ४-४२ दिन मीन में चन्द्रमा, गज: ।
	५९	१८	२	मं	उभा	प्र	३	५०	पं	प्र	२	३७	४२	१८	सिद्ध: । D१-१८ रात तक गंडान्त उन्मूलम् ।
१३	१	१९	३	बु	रे	प्र	०	४३	ष	दि	३१	२९	४२	१८	७-३५ सायं मेष में चन्द्रमा, पंचक समाप्त, १-५२ दिन सेD
	३	२०	४	गु	अ	दि	३२	११	स	दि	२७	०	४३	१७	मानस ।
	५	२१	५	शु	भ	दि	३०	३३	अ	दि	२३	२२	४४	१६	११–५७ रात वृष में चन्द्रमा मुद्गरम् ।
	७	२२	६	श	कृ	दि	२९	५७	न	दि	२०	४५	४५	१५	ध्वज: ।
	९	२३	७	र	रो	दि	३०	३१	द	दि	१९	१५	४६	१४	प्रजापत्य: ।
	११	२४	८	चं	मृ	दि	३२	२९	ए	दि	१९	५	४७	१३	कमला ११, त्राल यात्रा, ६-१६ प्रात: मिथुन में चन्द्रमा, आनन्द: ।
	१३	२५	९	मं	आ	प्र	१	४८	द्वा	दि	२०	११	४८	१२	चर: । Tदिन से सिंह राशि में बुध, मसुलम् ।
	१६	२६	१०	बु	पु	प्र	६	५	त्र	दि	२२	२७	४९	११	३-१२ दिन से कर्कट राशि में चन्द्रमा, १०–५४T
	१८	२७	११	गु	ति	प्र	११	१७	चं	दि	२५	४४	५०	१०	८-२६ सायं चन्द्रमा अस्त, शूलम् । Fमृत्यु: ।
	२०	२८	१२	शु	अश्ले	शे	१५	२३	अं	दि	२९	५८	५१	९	७-२९ सायं गण्डान्त आरंभ, २-६ रात सिंह राशि में चन्द्रमा,F

भाद्र:—प्रति० से द्विती० तथा सप्त० से अमा० तक अपने दिन शेष अपने दिन । | १ अगस्त संकट ४

संवत् ५०६४ विक्रमी २०४५ शाके १९१० ई० १९८८ श्रावण शुक्ल पक्ष: ३३।१८ कर्कट में सूर्य, सिंह में बुध, केतु,

राष्ट्र	श्रावण	अगस्त	वार	नक्षत्र		घड़ी	पल	तिथि		घड़ी	पल	सू उ	सू अ
												५	७
२२	२९	१३	श	मं	शे	९	२३	प्र	प्र	१	३०	५२	८
२४	३०	१४	र	यूफा	शे	२	५९	द्वि	प्र	६	३२	५३	७
२६	३१	१५	चं	यूफा	दि	३	२३	तृ	प्र	११	१७	५[illegible]	६
२८	भ १	१६	मं	उफा	दि	९	२०	च	शे	१५	४५	५४	६
३०	२	१७	बु	ह	दि	१४	३६	पं	शे	११	३३	५५	५
३२	३	१८	गु	चि	दि	१८	५२	ष	शे	८	२९	५६	४
३४	४	१९	शु	स्वा	दि	२२	३	स	शे	६	२२	५७	३
३७	५	२०	श	वि	दि	२३	५६	अ	शे	५	३८	५७	३
३९	६	२१	र	अं	दि	२४	३४	न	शे	६	५	५८	२
४१	७	२२	चं	ज्ये	दि	२४	३	द	शे	७	४७	59 6	7
४३	८	२३	मं	मू	दि	२२	२८	ए	शे	१०	४२	५९	१
४६	९	२४	बु	पूषा	दि	२०	१	द्वा	प्र	८	२१	५९	१
४९	१०	२५	गु	उषा	दि	१६	४८	त्र	प्र	३	८	6	6 59
५१	११	२६	शु	श्र	दि	१३	११	चं	दि	२९	४३	२	५८
५४	१२	२७	श	धं	दि	९	११	पू	दि	२३	४२	३	५७

वृष में गुरु, मिथुन में शुक्र, मीन में मगल, धनु में शनि:
कुंभ में राहु। १३ अग. से २७ अग. तक वर्षा ऋतु:।
ग्रह संचार बजे मिनटों में।

१३ ७-४४ सायं उदय चन्द्रमा, ८।४५ प्रात: गंडांत समाप्त, काम्य:।
छत्रम्। Aमें सूर्य मुहूं ३० सागर: सिंगह आरंभ, प्रजापत्य:।
१-४५ दिन कन्या में चन्द्रमा, भारत स्वतंत्र दिवस, हरियालीK
मासान्त, वरदगणेश ४, २-१३ रात से संक्रान्ति सिंहA
संक्रान्ति वृत, नाग ५, १२-४४ रात तुला में चन्द्रमा, आनन्द:।
कुमार ६ चर:। K३ ध्वज:।
तुलसी दास जयन्ती, १-६ रात बुध उदय, मसुल। Lशूलम्।
९।२३ दिन वृश्चिक राशि में चन्द्रमा, दूर्वा ८, ताराजयन्ती, L
मृत्यु:। Vसायं तक गंडान्त काम्य:।
३-३६ दिन धनु में चन्द्रमा, मूल आरंभ, ९-४१ दिन से ९-३०V
पवित्रा ११, २-५९ दिन मूल समाप्त, छत्रम्।
७-४६ सायं मकर में चन्द्रमा, श्रावण १२, शुपियन यात्रा, Y
सौम्य:। Yश्रीकृष्ण पंडित अन्तर्ध्यान दिवस, श्रीवत्स:।
१०-२३ रात कुंभ में चन्द्रमा, पंचक आरंभ, १२-३० दिनS
२-२३ दिन कन्या में बुध, रक्षा बन्धन, श्रीअमरनाथ यात्रा, N
Nथनिवोर यात्रा श्री गायत्री जयन्ती, शनि मास: प्रवर्ध:।
Sपूर्णिमा में चन्द्रमा, धौम्य:।

श्राद्ध: - पूर्णिमा का पहले शेष अपने दिन। | १५ अग. भारत स्वतन्त्रता दिवस, हरियाली ३। २४ अग. श्रावण १२
मध्यान्ह—अपने अपने दिन। | २७ अग. रक्षा बन्धन, अमर नाथ यात्रा गायत्री जय.।

सप्तर्षि सं० ५०६४ ई० १९८८ वि० २०४५ भाद्र कृष्ण पक्षः ३२।८ सिंह में सूर्य केतु,कन्या में बुध, मीन में मंगल, वृषमें गुरु,मिथुन में शुक्र,धन में शनि:,कुंभ में राहुः । २८ अग. से ११ सितंबर तक, शरद ऋतु ।

ग्रह संचार बजे मिनटों में । (50

	राधें	भाद्र	अगस्त	वार	नक्षत्र		घड़ी	पल	तिथि		घड़ी	पल	सू उ	सू अ	
१३													६	६	Bकर्कट राशि में शुक्र नवदल यात्रा,मृत्यु:।
	५६	१३	२८	र	श	दि	५	२	प्र	दि	१७	३५	५	५५	९-२३ प्रात:हीन चन्द्रमा, १२-५२ रात मीन में चंद्रमा,C
	५९	१४	२९	चं	पूभा	दि	०	५५	द्वि	दि	११	३६	६	५४	गज: । Aमेष में चंद्रमा, पंचक समाप्त,मातंग: ।
१४	१	१५	३०	मं	रे	शे	२	५२	तृ	दि	५	५६	७	५३	९-५५ सायं गंडान्त आरंभ,कूर्म ३,संकट ४ वृत, ३-३८ रातA
	४	१६	३१	बु	अ	शे	६	१३	च	दि	०	४५	८	५२	त्र्यहः, दिन कम, ९-२० दिन गंडान्त समाप्त, ६-२० दिनB
	७	१७	स१	गु	भ	शे	८	५७	प	शे	३	४९	९	५१	चन्दन ६,वृत चन्द्रोदय रात १०-२७ काम्य: ।
	९	१८	२	शु	कृ	शे	१०	५१	स	शे	७	२८	१०	५०	शीतला ७,९-४५ रात वृष में चन्द्रमा, छत्रम् ।
	१२	१९	३	श	रो	शे	११	४६	अ	शे	१०	११	११	४९	श्री कृष्ण जन्माष्टमी एक चन्द्रोदप रात १२-१० श्रीवत्स: ।
	१४	२०	४	र	मृ	शे	११	२७	न	शे	११	३६	१२	४८	१-५५ दिन मिथुन में चन्द्रमा, सौम्य: ।
	१७	२१	५	चं	आ	शे	९	५९	द	शे	११	५३	१३	४७	कालदण्ड: । C१-५० रात मार्गी शनि: क्षय: ।
	२०	२२	६	मं	पु	शे	७	१२	ए	शे	१०	४८	१४	४६	अजा ११,गोवत्स पूजन,१०-३४ रात कर्कट में चन्द्रमा,स्थिर:।
	२२	२३	७	बु	ति	शे	३	१०	द्वा	शे	८	२४	१५	४५	मातंग: । Xदिन गंडांत समाप्त, मृत्यु: ।
	२५	२४	८	गु	ति	दि	१	४७	त्र	शे	५	१	१७	४३	कलियुग जन्म, २-४३ रात गंडान्त आरंभ,शूलम् ।
	२७	२५	९	शु	अश्ले	दि	७	३७	चं	शे	०	४६	१८	४२	त्रिस्पृक, दिन अधिक, ९-२० दिन सिंह में चन्द्रमा, ३-५८X
	३०	२६	१०	श	मं	दि	१३	५५	चं	दि	४	६	१९	४१	१२-१९ दिन चन्द्रमा अस्त, काम्य. ।
	३३	२७	११	र	पूफा	दि	२०	१९	अं	दि	९	७	२०	४०	९-४ रात कन्या में चन्द्रमा,कुशा-अमावसी,पिठोरी अमावस,N
															Nगण्ड की यात्रा, सूर्य ग्रहण*, छत्रम् ।

श्राद्ध—प्रति० से पंच० तथा अमा० का पहले शेष अपने दिन । ।। ३१ अग. नवदल यात्रा,१ सित. चन्दन ६
मध्यान्ह—प्रति० से पंच० और अमा० का पहले शेष अपने दिन ।।। ३ सित. श्री कृष्ण जन्माष्टमी एक ।

सप्तर्षि संवत् ५०६४ वि. २०४५ ई०१९८८ शाके १९१० भाद्र शुक्ल पक्षः ३०।५० सिंह में सूर्य केतु, कन्या में बुध,
मीन में भौम वृष में गुरु, कर्कट में शुक्र धनु में शनि, कुंभ में
राहु । १२ सितं. से २५ सितं. तक शरद ऋतुः ।
ग्रह संचार बजे मिनटों में ।

	राष्ट्र	भाद्रप	सितंबर	वार	नक्षत्र		घड़ी	पल	तिथि		घड़ी	पल	सू उ	सू अ	
													६	६	Aतीर्थ श्राद्ध २-५८ रात संक्रान्ति कन्या में सूर्य मुहू ३०V
१४	३५	२८	१२	चं	उफा	दि	२६	२५	प्र	दि	१३	५५	२१	३९	६-२२ दिन चन्द्रमा उदय, चन्द्र दर्शन, श्री वत्सः । Oकालदण्डः।
	३८	२९.	१३	मं	ह	प्र	२	७	द्वि	दि	१८	३	२२	३८	भौम पर्व, सौभ्यः Vसागरः, मांतगः । Kअलापकः।
	४०	३०	१४	बु	चि	प्र	५	४४	तृ	दि	२१	१९	२२	३८	८।२ प्रातः तुला में चन्द्रमा, हर तालिका ३, वराह जय. O
	४३	३१	१५	गु	स्वा	प्र	९	१५	च	दि	२३	२७	२४	३६	क लंक चतुर्थी, विनायक ४ चन्द्र दर्शन निषेध, स्थिरः।
	४६	अ१	१६	शु	वि	प्र	११	३४	पं	दि	२४	२२	२५	३५	कुमार ६ वृत, ४-३७ दिन वृश्चिक में चन्द्रमा, वराह ५ करङ्कA
	४८	२	१७	श	अं	प्र	१२	३५	ष	दि	२३	५९	२६	३४	संक्रान्ति वृत, अमृतं । Bतक गंडान्त ब्रह्म सरोवर श्राद्ध काण्डः ।
	५१	३	१८	र	ज्ये	प्र	१२	२२	स	दि	२२	२२	२७	३३	११-३९ रात धनु में चं, मूल आरंभ, ५-२५ दिन से ५-२४ रातB
	५३	४	१९	चं	मू	प्र	११	४	अ	दि	१९	३६	२८	३२	१०।५७ रात मूल समाप्त, गंगा ८, राधा ८, यज्ञ उमानगरी, K
	५६	५	२०	मं	पूषा	प्र	८	५२	न	दि	१५	५१	२९	३१	३-५६ रात मकर में चन्द्रमा, मैत्रम् ।
	५९	६	२१	बु	उषा	प्र	५	५७	द	दि	११	१५	३०	३०	८।५० प्रातः अगस्त्य मुनिः उदय वज्रम् ।
१५	०	७	२२	गु	श्र	प्र	२२	३	ए	दि	६	८	३०	३०	दिवा रात्रि बराबर, नारायणी ११, ऐन्द्रा १२, वामन १२, C
	३	८	२३	शु	धं	दि	२८	२४	द्वा	दि	०	२४	३१	२९	त्र्यहः दिन कम, ६-४१ प्रातः कुभ में चन्द्रमा, पंचक आरंभ, H
	५	९	२४	श	श	दि	२४	१८	चं	शे	५	३४	३२	२८	अनन्त १४, अनन्त नाग यात्रा, ३-६ दिन पूर्णिमा में चं, आनंदः।
	८	१०	२५	र	पूभा	दि	२०	११	पूं	शे	११	३७	३३	२७	९।२ दिन मीन राशि में चन्द्रमा, पूर्णिमा वृत, चरः।
															Hवितस्ता १३ विथ वत्रीं यात्रा, प्रजापत्यः
															Cभुवनेश्वरी जय. श्रावण १२ गोत्तमनाग यात्रा, ध्वजः

श्राद्ध—प्रति० से त्रयो० तक पहले शेष अपने दिन । | १५ सितं विनायक ४, १६ सितं. कुमार ६
मध्यान्ह—प्रति और दश. से त्रयो० तक पहले शेष अपने दिन । | १७ ,, संक्रान्ति वृत, १९ सितं. गंगा ८

… आश्विन कृष्ण पक्ष., … कन्या में सूर्य बुध, मीन
म भौम वृष में गुरु, कर्कट में शुक्र धनु में शनि, कुंभ में राहु सिंह में केतु । २६ सितं. से १० अक्तू. तक शरद ऋतु: ।
ग्रह संचार बजे मिनटों में । (52

राशि	असूज	सितंबर	वार	नक्षत्र		घड़ी	पल	तिथि		घड़ी	पल	सू उ	सू अ	
१५												६	६	A५-२० दिन तक गंडान्त, ११-३६ दिन बुध अस्त शूलम् ।
११	११	२६	चं	उभा	दि	१६	१६	प्र	प्र	७	१३	३५	२५	५।४१ दिन हीन चन्द्रमा, पितृपक्ष आरंभ, चंद्रमा मास, मसूलं ।
१३	१२	२७	मं	रे	दि	१२	४०	द्वि	प्र	२	१०	३६	२४	११-४४ दिन मेष में चंद्रमा, पंचक समाप्त, ६-२३ प्रात: सेA
१६	१३	२८	बु	अ	दि	१०	०	तृ	दि	२७	१९	३७	२३	संकट ४ वृत, १०।१३ दिन सिंह में शुक्र, मृत्यु: ।
१८	१४	२९	गु	भ	दि	७	५६	च	दि	२३	४५	३८	२२	३-३९ दिन वृष में चन्द्रमा, काम्य:
२१	१५	३०	शु	कृ	दि	६	४८	पं	दि	२१	९	३९	२१	छत्रम् ।
२४	१६	अ१	श	रो	दि	६	४७	ष	दि	१९	४४	४०	२०	९।३४ सायं मिथुन में चन्द्रमा, साहिब सप्तमी ७ श्रीवत्स: ।
२६	१७	२	र	मृ	दि	८	०	स	दि	१९	३३	४१	१९	गांधी व लाल बहादुर शास्त्री जय. सौम्य: ।
२९	१८	३	चं	आ	दि	१०	४१	अ	दि	२०	४४	४२	१८	महालक्ष्मी अष्टमी, कालदण्ड: ।
३२	१९	४	मं	पु	दि	१४	९	न	दि	२३	६	४३	१७	५।५६ प्रात: कर्कट में चन्द्रमा, मातृका नवमी, स्थिर: ।
३४	२०	५	बु	ति	दि	१८	५५	द	दि	२६	३४	४४	१६	मातंग: । Kरात तक गंडान्त, ऐन्द्रा ११ अमृतम् ।
३७	२१	६	गु	अश्ले	दि	२४	३२	ए	प्र	२	७	४५	१५	४।३३ दिन सिंह में चन्द्रमा, ९।५७ प्रात: से ११।४८K
४०	२२	७	श	मं	प्र	२	२	द्वा	प्र	७	२०	४६	१४	संन्यासियों का श्राद्ध काण्ड: ।
४२	२३	८	श	यूफा	प्र	८	३१	त्र	प्र	१२	२०	४७	१३	४-१७ रात कन्या में चन्द्रमा, अलापक: ।
४५	२४	९	र	उफा		१४	५२	चं	शे	१९	६	४८	१२	५-१५ रात चन्द्रमा अस्त, मैत्रम् ।
४८	२५	१०	र	ह	शे	१६	४४	अं	शे	१४	१३	४९	११	पितृ अमावसी, पितृ तर्पण, सोमा अमावसी, अमावसी वृत, D Dवज्रम् ।

श्राद्ध: —चतु०से दशवें वा पहले शेष अपने दिन । | २६ सितं. पितृ पक्ष आरंभ, १ अक्तू. साहिब ७
मध्यान्ह—अपने अपने दिन । | १० अक्तू पितृ अमावसी, पितृ तर्पण सोमावसी ।

सप्तर्षि संवत् ५०६४ वि० २०४५ ई० १९८८ शाके १९१० आश्विन शुक्ल पक्ष: २८।२० कन्या में सूर्य बुध, मीन में मंगल वृष में गुरु, सिंह में शुक्र केतु धनु में शनि, कुंभ मे राहु ।
११ अक्तू. से २५ अक्तू. तक शरद–हेमन्त ऋतु ।
ग्रह संचार बजे मिनटों में । (53

	राष्ट्री	असूज	क्तूबर	वार	नक्षत्र		घड़ी	पल	तिथि		घड़ी	पल	सू उ	सू अ
१५													६	६
	५०	२६	११	मं	चि	शे	११	४	प्र	शे	९	५८	५०	१०
	५३	२७	१२	बु	स्वा	शे	६	२२	द्वि	शे	६	३४	५१	९
	५५	२८	१३	गु	वि	शे	४	२०	तृ	शे	४	२०	५२	८
	५८	२९	१४	शु	अं	शे	०	१३	च	शे	३	२१	५३	७
१६	१	३०	१५	श	अं	दि	१	०	पं	शे	३	३९	५४	६
	३	३१	१६	र	ज्ये	दि	०	५८	ष	शे	५	११	५५	५
	६	क१	१७	चं	मूषा	शे	०	७	स	शे	७	५२	५६	४
	९	२	१८	मं	उषा	शे	२	१३	अ	शे	११	३३	५८	२
	११	३	१९	बु	श्र	शे	५	४	न	शे	१६	०	५९	१
	१४	४	२०	गु	धं	शे	८	३३	द	प्र	५	४१	7 0	6 0
	१७	५	२१	शु	श	शे	२२	२१	ए	दि	२७	१७	7	5 59
	१९	६	२२	श	पूभा	प्र	११	५९	द्वा	दि	२१	१९	२	५८
	२२	७	२३	र	उभा	प्र	८	६	त्र	दि	१५	२७	३	५७
	२४	८	२४	चं	रे	प्र	४	३९	चं	दि	९	५९	४	५६
	२६	९	२५	मं	अ	प्र	१	४२	पू	दि	४	५५	५	५५

B५-१ दिन उदय बुध ६-५१ प्रात: मूल समाप्त, उन्मूलं । ३-२४ दिन तुला में चं, नव दुर्गा आरंभ, घटस्थापन, ध्वांक्ष: । ४-४३ दिन उदय चन्द्रमा, चन्द्रदर्शन, धौम्य: । १२–३८ रात वृश्चिक में चन्द्रमा, प्रवर्ध:। क्षय:। A७-१८ प्रात: धनु में चं, मूल आरंभ, मासान्त, काण्ड:। ललिता ५, १-२६ रात गंडान्त आरंभ, अमृतम् । कुमार जन्म, कुमार ६ वृत, १-५५ दिन तक गंडान्त, A २–११ दिन संक्रान्ति तुला में सूर्य मुहू ३० तटे, संक्रान्ति वृत B दुर्गा ८, तारा जयन्ती, ११-४८ दिन मकर में चन्द्रमा मानसं । महा नवमी, भद्रकाली ज०, छत्रम् । Kराजिता पूजन श्रीवत्स: । २-५० दिन कुंभ में चं., पंचक आरंभ, विजय १० दसेरा, अप-K पापाङ्कुषा ११, जयाच, सौम्य:। Tतक गंडांत, ईद मेताद, मातंग: । ५-१२ दिन मीन में चन्द्रमा, ७-५८ सायं कन्या में शुक्र, स्थिर: । ७-४७ सायं मेष में चं, पंचक समाप्त, १२-५९दिन से १-२८रातT लवंग पूर्णिमा, वाल्मीकी जयन्ती, ३–३९ रात हीन चन्द्रमाS Sशरद पूर्णिमा, पूर्णिमा वृत अमृतस् ।

श्राद्ध:—द्वा० से पूर्णि० तक पहले ही शेष अपने दिन । | १० अक्तू. नव दुर्गा आरंभ, १७ अक्तू. संक्रान्ति वृत ।
मध्यान्ह—चतु० और पूर्णि० का पहले शेष अपने दिन । | १८ अक्तू. दुर्गा अष्टमी, १९ अक्तू. महानवमी ।

सप्तर्षि संवत् ५०६४ वि० सवत् २०४५ सन् ई० १९८८ शाके १९१० कार्तिक कृष्ण पक्षः २७।४ तुला में सूर्य, मीन में मंगल वृष में गुरु, कन्या में बुध, शुक्रधनु में शनि, कुंभ में राहु सिंह में केतु। २६ अक्तू. से ९ नवं. तक हेमन्त ऋतु।

	राष्ट्र	कतक	अक्तूबर	वार	नक्षत्र		घड़ी	पल	तिथि		घड़ी	पल	सू उ	सू अ	ग्रह संचार बजे मिनटों में। (54
१६													७	५	
	२८	१०	२६	बु	भ	दि	२६	३६	प्र	दि	०	३४	६	५४	त्र्यहः, दिन कम, ११-३१ रात वृष में चन्द्रमा, त्रुध मासः, काण्डः।
	३०	११	२७	गु	कृ	दि	२५	१६	तृ	शे	२	५४	७	५३	अलापकः।
	३३	१२	२८	शु	रो	दि	२५	१	च	शे	५	२५	८	५२	संकट ४, करवा ४, ५-३ रात मिथुन में चन्द्रमा, मैत्रम,
	३५	१३	२९	श	मृ	दि	२५	५४	पं	शे	६	४५	९	५१	वज्रम। Aतक गंडांत राधा ८, १-३३ रात तुला में बुध, क्षयः।
	३७	१४	३०	र	आ	प्र	१	२२	ष	शे	६	४७	१०	५०	ध्वांक्षः।
	३९	१५	३१	चं	यु	प्र	४	५०	स	शे	५	३०	११	४६	१-२४ दिन कर्कट में चन्द्रमा, धौम्यः।
	४१	१६	न १	मं	ति	प्र	९	१४	अ	शे	२	५८	१२	४८	त्रिस्पृक, दिनन अधिक, अहोई ८ प्रजापत्यः।
	४४	१७	२	बु	अश्ले	प्र	१४	५४	अ	दि	०	३९	१३	४७	११-४४ रात सिंह में चन्द्रमा, ३-१० दिन से ६, २३ रातA
	४६	१८	३	गु	मं	शे	१८	३८	न	दि	५	७	१४	४६	गजः।
	४८	१९	४	शु	पूफा	शे	१२	२६	द	दि	१०	११	१५	४५	सिद्धः।
	५०	२०	५	श	उफा	शे	६	१	ए	दि	१५	२०	१६	४४	११-३० दिन कन्या में चन्द्रमा, रमा ११, उन्मूलं।
	५३	२१	६	र	उफा	दि	०	१८	द्वा	दि	२०	१९	१७	४३	७-१० प्रातः मार्गी मंगल, मैत्रम्।
	५५	२२	७	चं	ह	दि	६	३	त्र	दि	२४	४१	१८	४२	१० ४२ रात तुला में चन्द्रमा, घन १३, वज्रम्।
	५७	२३	८	मं	चि	दि	११	३	चं	प्र	१	५८	१८	४२	१०-४४ रात चन्द्रमा अस्त, महावीर १४, अनर्क १४, ध्वांक्षः।
	५९	२४	९	बु	स्वा	दि	१४	५६	अं	प्र	४	२२	१८	४२	३-२२ दिन बुध अस्त, दीप माला, महालक्ष्मी पूजन, कमलाN
															जयन्ती दीपावली, जैन महावीर निर्वाण दिन, धौम्यः।

श्राद्ध — प्रति० द्विती, और नवमी से त्रयो०तक पहले शेष अपने दिन। | २८ अक्तू. संकट ४ वृत, ८ नवं. महावीर १४

मध्यान्ह— प्रति, द्विती और नव०से एका०तक पहले शेष अपने दिन। | ९ नवं. दीपावली. दीपमाला. महालक्ष्मी पूजन

सप्तर्षि सं. ५०६४ वि. २०४५ शाके १९१० ई० १९८८ कार्तिक शुक्ल पक्ष: २५।५८ तुला में सूर्य बुध मीन में मंगल वृष में गुरु कन्या मे शुक्र धनु में शनि, कुंभ में राहु, सिंह में केतु। १० नवं. से २३ नवं. तक हेमन्त ऋतु:। (55

ग्रह संचार बजे मिनटों में

राष्ट्र	कार्तिक	नवंबर	वार	नक्षत्र		घड़ी	पल	तिथि		घड़ी	पल	सू उ	सू अ
१७												७	५
१	२५	१०	गु	वि	दि	१७	४३	प्र	प्र	५	३०	१९	४१
४	२६	११	शु	अं	दि	१९	१३	द्वि	प्र	५	१८	२०	४०
६	२७	१२	श	ज्ये	दि	१९	३०	तृ	प्र	५	३१	२१	३९
८	२८	१३	र	मू	दि	१८	३८	च	प्र	१	१३	२२	३८
१०	२९	१४	चं	पूषा	दि	१६	४५	पं	दि	२२	१८	२३	३७
१३	३०	१५	मं	उषा	दि	१४	४	ष	दि	१८	१६	२४	३६
१५	म१	१६	बु	श्र	दि	१०	४६	स	दि	१३	४४	२४	३६
१७	२	१७	गु	धं	दि	६	५८	अ	दि	८	१०	२५	३५
१९	३	१८	शु	श	दि	२	५५	न	दि	२	१९	२६	३४
२१	४	१९	श	उभा	शे	१	१२	ए	शे	३	३४	२६	३४
२४	५	२०	र	रे	शे	५	१८	द्वा	शे	९	२३	२७	३३
२६	६	२१	चं	अ	शे	८	५८	त्र	शे	१४	५१	२८	३२
२७	७	२२	मं	भ	शे	१२	७	चं	प्र	११	७	२९	३१
१७	८	२३	बु	कृ	शे	१७	३५	पू	प्र	७	३९	२९	३१

८।१० प्रात: वृश्चिक में चन्द्रमा, अन्नकूट, गोवर्धन पूजन, प्रवर्ध:।
७-५६ प्रात: उदय चन्द्रमा, चन्द्र दर्शन, भाई दूज, क्षय:।
३-९ दिन धनु में चन्द्रमा, मूलारंभ, ९-९ दिन से ९ ७ रातP
२-४६ दिन मूल समाप्त, सिद्ध:। Pतक गंडांत गज:।
कुमार ३, नेहरु बाल दिवस, ७-५० सायं मकर में चं, उन्मूलं।
मासान्त, मानसं।A११-१रात कुंभ में चं, पंचक आरंभ छत्रमू।
१२-१ दिन से संक्रान्ति वृश्चिक में सूर्य मुहू ३० सागर:Q
गोपाल ८, १२-१५ रात तुला राशि में शुक्र, श्रीवत्स:।
त्र्यह:, दिनकम, अक्षया ९, सत्ययुग जन्म, १-२० रात मीन मेंR
हरिबोधिनी ११, धौम्य:। Qसंक्रान्ति व्रत, A Rचन्द्रमा, सौम्य:।
१०-१७ रात गंडांत आरंभ, ३-५२ रात मेष में चन्द्रमा, पंचकB
९-३४ प्रात: गंडांत समाप्त, क्षय:। Bसमाप्त, शिव स्वाप, प्रवर्ध:।
५-१५ दिन वृश्चिक में बुध, ४-२० दिन पूर्णिमा में चन्द्रमा, T
७-३३ प्रात: वृष में चन्द्रमा, कार्तिक पूर्णिमा, द्रवरी १५, गुरुD
Dनानक जन्म निम्बार्काचार्य जन्म, सिद्ध:। Tवैकुण्ठ १४, गज:

श्राद्ध—षष्टी से दशमी तक पहले ही शेष अपने दिन। | १३ नवं संक्रान्ति व्रत। २३ नवं कार्तिक पूर्णिमा,
मध्यान्ह—अष्ट० से दश० तक पहले ही शेष अपने दिन। | २३ नवं गुरु नानक जन्म।

सप्तर्षि संवत् ५०६४ वि. २०४५ शाक: १९१० ई० १९८८ मार्ग कृष्ण पक्ष: २५।४ वृश्चिक में सूर्य बुध, मीन में मंगल, वृष में गुरु, तुला में शुक्र, धनु में शनि, कुंभ में राहु सिंह में केतु। २४ नवं. से ९ दिसं. तक हेमन्त ॠतु।

ग्रह संचार बजे मिनटों में। (56

राष्ट्र	मार्ग	नवंबर	वार	नक्षत्र		घड़ी	पल	तिथि		घड़ी	पल	सू उ	सू अ	
१७												७	५	A४-४६ रात तक गडान्त, ७–५ सायं धनु में बुध चर:।
२८	९	२४	गु	रो	शे	१६	७	प्र	प्र	५	२१	३०	३०	३–४८ दिन हीन चन्द्रमा उन्मूलम्।
२९	१०	२५	शु	मृ	शे	१६	४०	द्वि	प्र	४	१४	३०	३०	१२–५८ दिन मिथुन में चन्द्रमा, शुक्र मास, मानसं।
३०	११	२६	श	आ	शे	१६	३	तृ	प्र	४	२४	३१	२९	मुद्गरम्।
३१	१२	२७	र	पु	शे	१४	०	च	प्र	५	५३	३१	२९	संकट ४ वृत, ८।५० कर्कट में चन्द्रमा, ध्वज:।
३२	१३	२८	चं	ति	शे	१०	४९	पं	प्र	८	३६	३२	२८	प्रजापत्य:।
३३	१४	२९	मं	आ	शे	६	२९	ष	प्र	१२	२०	३२	२८	१२-२६ रात गंडांत आरंभ, आनंद:।
३४	१५	३०	बु	मं	शे	१	१२	स	प्र	१७	१	३२	२८	१-३८ दिन गंडान्त समाप्त ७-० प्रात: सिंह में चन्द्रमा, चर:।
३५	१६	द१	गु	मं	दि	४	४८	अ	शे	१८	१०	३३	२७	महाकाल भैरव ८, गज:।
३६	१७	२	शु	पूफा	दि	११	१२	न	शे	१२	५५	३३	२७	६।३९ सायं कन्या में चन्द्रमा, सिद्ध:।
३७	१८	३	श	उफा	दि	१७	३२	द	शे	७	४१	३४	२६	उन्मूलं।
३८	२९	४	र	ह	दि	२३	३१	ए	शे	२	३३	३४	२६	त्रिस्पृक, दिन अधिक, ४-४ रात तुला में चन्द्रमा, मानसं।
३८	२०	५	चं	चि	प्र	४	०	ए	दि	१	४६	३४	२६	उत्पन्ना ११, मुद्गरम्।
३९	२१	६	मं	स्वा	प्र	८	१७	द्वा	दि	५	१२	३४	२६	ध्वज:।
४०	२२	७	बु	वि	प्र	११	२७	त्र	दि	७	२७	३५	२५	३–४३ दिन वृश्चिक में चन्द्रमा, शनि अस्त, प्रजापत्य:।
४१	२३	८	गु	अं	प्र	१३	१७	चं	दि	८	२८	३५	२५	२–५९ दिन चन्द्रमा अस्त, अन्नन्द।
४२	२४	९	शु	ज्ये	प्र	१३	५५	अं	दि	८	१०	३५	२५	१०।५७ रात धन में चन्द्रमा, मूल आरंभ ४-५५ दिन सेA

श्राद्ध:—द्वा० से अमा० तक पहले शेष अपने दिन। | २७ नव संकट ४, १ दिसं. महाकाल भैरव ८

मध्यान्ह—द्वा० से अमा० तक पहले शेष अपने दिन। | ९ दिसं. अमावसी व्रत।

सप्तर्षि स. ५०६४ वि० २०४५ शाके १९१० ई० १९८८ मार्ग शुक्ल पक्ष: २४।३४ वृश्चिक में सूर्य धनु में बुध शनि, मीन में भौम वृष में गुरु तुला में शुक्र कुंभ में राहु सिंह में केतु । १० दिस. से २३ दिसं. तक हेमन्त शिशर ऋतु: ।

ग्रह संचार बजे मिनटों में ।

	राष्ट्रं	मगर	दिसंबर	वार	नक्षत्र		घड़ी	पल	तिथि		घड़ी	पल	सू उ	सू अ	
१७													७	५	
	४३	२४	१०	श	मू	प्र	२३	१९	प्र	दि	६	४०	३६	२४	४-२ दिन उदय चन्द्रमा, १-४४ रात मूल समाप्त चन्द्रदर्शन, K
	४४	२६	११	र	पू	प्र	११	४१	द्वि	दि	३	५९	३६	२४	३-५४ रात मकर में चन्द्रमा, शूलम् । Kमसुलं । Lमैत्रम् ।
	४५	२७	१२	चं	उ	प्र	९	१३	तृ	दि	०	२२	३७	२३	त्र्यह: दिन कम, ७-५ दिन वृश्चिक राशि में शुक्र, मृत्यु:।
	४६	२८	१३	मं	श्र	प्र	६	४	पं	शे	४	५	३७	२३	अलापक: ।
	४७	२९	१४	बु	धं	प्र	२	२४	ष	शे	९	११	३७	२३	७-१ प्रात: कुंभ में चन्द्रमा, पंचक आरंभ, मासान्त, कुमार ६L
	४८	प १	१५	गु	श	दि	२२	४९	स	शे	१४	४३	३८	२२	११-५६ रात संक्रान्ति धनु में सूर्य मुहू. ३० तटे सिंगह आरंभR
	४१	२	१६	शु	पूभा	दि	१८	४१	अ	प्र	९	१४	३८	२२	भैरवी ८, ९-३१ प्रात: मीन में चन्द्रमा, ध्वांक्ष: ।
	५०	३	१७	श	उ	दि	१४	३८	न	प्र	३	३६	३१	२१	धौम्य: । Aमेष में चन्द्रमा पंचक समाप्त, प्रवर्ध: ।
	५०	४	१८	र	रे	दि	१०	५७	द	दि	२२	३६	३९	२१	६-२३ प्रात: से ५-३८ सायं तक गडान्त, १२-२ दिनA
	५१	५	१९	चं	अ	दि	७	४३	ए	दि	७	४७	३९	२१	मोक्षदा ११, गीता जयन्ती, क्षय: । Rसंक्रान्ति वृत वज्रम् ।
	५२	६	२०	मं	भ	दि	५	४	द्वा	दि	१३	४०	३९	२१	३-२८ दिन वृष में चन्द्रमा, गज: ।
	५२	७	२१	बु	कृ	दि	३	१६	त्र	दि	१०	२७	३८	२२	१०-३४ दिन उत्तरायण में सूर्य, सिद्ध:।
	५१	८	२२	गु	रो	दि	२	३३	चं	दि	८	१४	३८	२२	८।४२ सायं मिथुन में चन्द्रमा, ८।५० सायं पुर्णिमा में चन्द्रसा, P
	५०	९	२३	शु	मृ	दि	२	५८	पूं	दि	७	२१	३८	२२	पूर्णिमा वृत, त्रिपुर भैरवी जयन्ती, मानसं । Pउन्मूलं ।

श्राद्ध:—प्रतिपदा से चतुं० तथा एका से पूर्णि० तक पहले शेष अपने दिन । | १४ दिसं कुमार ६, मासान्त

मध्यान्ह—प्रतिपदा से चतु०और त्रयो०से पूर्णि०तक पहले दिन शेष अपने दिन । | १६ ,, संक्रान्ति वृत, सिंगह आरंभ

सप्तर्षि सं० ५०६४ ई० ८८-८९. वि० २०४५ पौष कृष्ण पक्षः २४।२२ धनु में सूर्य,बुध शनि,मीन में मंगल,वृष में गुरु
वृश्चिक में शुक्र कुंभ में राहु सिंह में केतु ।
२४ दिसं से ७ जनवरी तक शिशर ऋतुः ।

	राष्ट्र	पौष	दिसंबर	वार	नक्षत्र		घड़ी	पल	तिथि		घड़ी	पल	सू उ	सू अ	ग्रह संचार बजे मिनटों में ।
													७	५	
१७	४९	१०	२४	श	आ	दि	४	३९	प्र	दि	७	३८	३८	२२	६-३७ प्रातःहीन चन्द्रमा,मातृका पूजन,मुद्गरम् ।
	४८	११	२५	र	युं	दि	७	३५	द्वि	दि	९	१७	३७	२३	१०।५७ दिन कर्क में चन्द्रमा, क्रिसमस डे,४-५० दिन उदयA
	४७	१२	२६	चं	ति	दि	११	४१	तृ	दि	१२	८	३७	२३	संकट ४ वृन,प्रजापत्यः । Aबुध,सूर्य मासः ध्वजः ।
	४६	१३	२७	मं	अश्ले	दि	१६	४८	चं	दि	१६	०	३७	२३	२-२१ दिन सिंह में चन्द्रमा,७-४७ प्रातः से ८।५१ सायंB
	४५	१४	२८	बु	मं	दि	२२	३९	पं	दि	२०	४४	३६	२४	९-८ सायं मकर में बुध चरः । Bगंडांत आनंदः। Cमसुलम् ।
	४४	१५	२९	गु	पूफा	प्र	४	३१	ष	प्र	$\frac{1}{6}$	$\frac{30}{53}$	३६	२४	वेताल ६,पूर्णराज भैरव जन्म, १।५२ रात कन्या में चन्द्रमा,C
	४४	१६	३०	शु	उफा	प्र	१०	५९	स	प्र	६	५३	३६	२४	मूलम् । Dसमाप्त,लावस १४ शनि प्रदोष,५-३ रात चन्द्रमाE
	४३	१७	३१	श	ह	प्र	१७	६	अ	प्र	११	५३	३६	२४	श्री महाकाली जन्म,मृत्युः। Eअस्त स्थिरः ।
	४२	१८	ज १	र	चि	शे	१९	५९	न	प्र	१६	१३	३६	२४	१-२२ दिन तुला में चन्द्रमा,जनवरी १९८९ आरंभ,काम्यः ।
	४१	१९	२	चं	स्वा	शे	१२	५६	द	शे	१९	११	३५	२५	श्री आनन्देश्वर भैरव जन्म,छत्रम् ।
	४०	२०	३	मं	वि	शे	८	२८	ए	शे	१५	४९	३५	२५	सफका ११,११-१४ रात वृश्चिक में चन्द्रमा श्री वत्सः ।
	३९	२१	४	बु	अं	शे	५	२	द्वा	शे	१३	३७	३४	२६	७-५८ प्रातः मेष राशि में मंगल,सौम्यः । Fकालदंडः ।
	३८	२२	५	गु	ज्ये	शे	३	१	त्र	शे	१२	३६	३४	२६	८।३० साय धनु राशि में शुक्र,१२-४३ रात से गंडांत आरंभF
	३७	२३	६	शु	मू	शे	२	७	च	शे	१३	१	३३	२७	७-७ प्रातः धनु में चन्द्रमा,मूल आरंभ,१२-५३ दिन से गंडांतD
	३६	२४	७	श	पूषा	शे	२	२५	अं	शे	१४	३४	३३	२७	६-३५ प्रातः मूल समाप्त,यक्षा अमावसी,मातंगः ।

श्राद्धः—प्रति० से पंच०तक पहले शेष अपने दिन ।
[illegible] प्रति०से [illegible] तक पहले शेष अपने दिन ।

२४ दिसं. मातृका पूजन । २६ दिसं संकट ४ ।
३१ दिसं महाकाली जन्म । ७ जन. यक्षा अमावसी ।

सप्तर्षि संवत् ५०६४ वि. २०४५ ई०१९८९ शाके १९१० पौष शुक्ल पक्ष: २४।५० धनु में सूर्य शुक्र शनि, मकर में बुध, मेष में मंगल वृष मे गुरु, कुंभ राहु सिंह केतु ।

८ जनवरी से २१ जनवरी तक शिशर ऋतु: ।

ग्रह संचार बजे मिनटों में ।

	माघ	पौष	जनवरी	वार	नक्षत्र		घड़ी	पल	तिथि		घड़ी	पल	सू उ	सू अ	
१७													७	५	Aसंक्रांति मकर में सूर्य मुहू. ३० पहाड़ी सक्रांति वृत, सिंगहN
	३५	२५	८	र	उ	शे	३	४५	प्र	शे	१७	१८	३२	२८	११–५९ दिन मकर राशि में चंद्रमा, ११, १ रात उदय चंद्रमाX
	३४	२६	९	चं	श्र	शे	६	०	द्वि	प्र	९	३६	३२	२८	चन्द्र दर्शन, सिद्ध:। Xअमृतम् । Cगुरु गोविन्द जन्म प्रजापत्य: ।
	३२	२७	१०	मं	धं	शे	९	०	तृ	प्र	४	२६	३१	२९	३–१३ दिन कुंभ में चन्द्रमा, पंचक आरंभ उन्मूलम् ।
	३२	२८	११	बु	श	शे	१२	३४	च	दि	२३	५१	३१	२९	३-२७ रात उदय शनि, मानसं । Bसंक्रांति मकर संक्राति, C
	३२	२९	१२	गु	पूभा	शे	१७	२८	पं	दि	१८	३	३१	२९	५-४१ सायं मीन में चन्द्रमा, कुमार ६ वृत मुदगरम् ।
	३१	३०	१३	शु	उभा	प्र	१०	२०	ष	दि	१२	१३	३०	३०	मासान्त, ध्वज: । Dदिन से १-४४ रात तक गंडांत, शिशरB
	३०	म१	१४	श	रे	प्र	६	३०	स	दि	६	३४	२९	३१	८।७ सायं मेष राशि में चन्द्रमा, पंचक समाप्त, ७–४२ प्रात:A
	२९	२	१५	र	अ	प्र	३	८	अ	दि	१	१६	२९	३१	त्र्यह:, दिन कम, आनन्द:। Nसमाप्त, १२-३१D
	२८	३	१६	चं	भ	प्र	०	२१	द	शे	३	२७	२९	३१	१, ११ दिन वृष में चन्द्रमा, चर: ।
	२७	४	१७	मं	कृ	दि	२३	३०	ए	शे	७	२५	२८	३२	पुत्रदा ११, मसुलम् ।
	२६	५	१८	बु	रो	दि	२२	३०	द्वा	शे	१०	३७	२८	३२	४-२७ रात मिथुन में चन्द्रमा, ५-२८ रात बुध अस्त शूलम् ।
	२५	६	१९	गु	मृ	दि	२२	४२	त्र	शे	१२	४४	२८	३२	मृत्यु: ।
	२२	७	२०	श	आ	दि	२४	५	चं	शे	१३	३०	२७	३३	काम्य: । Hचन्द्रमा शाकंभरी जयन्ती छत्रम् ।
	२०	८	२१	श	पुं	प्र	१	२३	पूं	शे	१३	२	२६	३४	११-५० दिन कर्कट में चन्द्रमा ७-१७ प्रात: पूर्णिमा मेंH

श्राद्ध:—पं० से नव० तक पहले दिन शेष अपने दिन । | १२ जनवरी कुमार ६

मध्यान्ह—सप्तमी से नव० तक पहले शेष अपने दिन । | १४ जनवरी संक्रान्ति वृत, शिशर संक्रान्ति ।

सप्तर्षि सं ५०६४ वि २०४५ शाके १९१० ई० १९८९ माघ कृष्ण पक्षः २५।२४ मकर में सूर्य बुध,मेष में मंगल,
वृष में गुरु,धनु में शुक्र शनि, कुंभ में राहु सिंह में केतु ।
२२ जन. से ६ फर्वरी तक शिशर ऋतुः ।

	राघं	माघ	जनवरी	वार	नक्षत्र		घड़ी	पल	तिथि		घड़ी	पल	सू उ	सू अ	ग्रह संचार बजे मिनटों में
१७													७	५	
	१८	९	२२	र	ति	प्र	५	१०	प्र	शे	११	१५	२५	३५	४।४ रात हीन चन्द्रमा,श्रीवत्सः। A दिन से मार्गी गुरु,सौम्यः।
	१६	१०	२३	चं	अश्ले	प्र	९	५९	द्वि	शे	८	२०	२४	३६	९।३४ रात सिंह में चन्द्रमा, ३।४ रात तक गंडान्त, ३-१०A
	१३	११	२४	मं	मं	प्र	१५	३८	तृ	शे	४	१६	२३	३७	त्रिस्पृक,दिन अधिक,भौम मास और वर्ष भी, कालदण्डः।
	११	१२	२५	बु	पूफा	शे	१८	४९	तृ	दि	०	३२	२२	३८	संकट ४ वृत, स्थिरः।
	९	१३	२६	गु	उफा	शे	१२	२३	च	दि	५	५३	२२	३८	९-१ प्रातः कन्या में चन्द्रमा,भारत गणतंत्र दिवस,मातंगः।
	७	१४	२७	शु	ह	शे	५	५२	पं	दि	११	१२	२१	३९	अमृतं । Bमें शुक्र मृत्युः ।
	४	१५	२८	श	ह	दि	०	२२	ष	दि	१६	१४	२०	४०	साहिब ७,८।३८ सायं तुला में चन्द्रमा, १०-६ रात से मकरB
	२	१६	२९	र	चि	दि	५	५८	स	दि	२०	२९	१९	४१	काम्यः।
१६	०	१७	३०	चं	स्वा	दि	१०	४२	अ	दि	२३	४४	१८	४२	गांधी अन्तर्ध्यान दिवस, शहीदी दिन, छत्रम् ।
	५८	१८	३१	मं	वि	दि	१४	२२	न	दि	२५	५३	१७	४३	६-२४ प्रात वृश्चिक में चन्द्रमा,श्रीवत्स.। Lसोनी ३०H
	५६	१९	फ१	बु	अं	दि	१६	५०	द	प्र	०	३२	१६	४४	सौम्यः Cसे ८।३४ सायं तक गंडान्त,षट तिला ११,कालदण्डः।
	५४	२०	२	गु	ज्ये	दि	१७	५८	ए	दि	२६	११	१५	४५	२-२६ दिन धनु में चन्द्रमा, मूल आरंभ, ८-२३ प्रातःC
	५१	२१	३	शु	मू	दि	१७	५७	द्वा	दि	२४	२१	१४	४६	२-२६ दिन मूल समाप्त,स्थिरः। K१४ एक शनि प्रदोष मातंगः।
	४९	२२	४	श	पू	दि	१६	५१	त्र	दि	२१	३८	१३	४७	७-४९ सायं मकर में चन्द्रमा, १२-२० दिन उदय बुध, शिवK
	४६	२३	५	र	उ	दि	१४	३८	च	दि	१७	५१	१२	४८	२-२४ दिन चन्द्रमा अस्त,अमृतम् । Hअमावस्या वृत,सिद्धः।
	४४	२४	६	चं	श्र	दि	१२	०	अं	दि	१३	२०	११	४९	११-२२ रात कुंभ में चन्द्रमा, पंचक आरंभ, सोमा अमावसी,L

श्राद्ध चतु०से नवमी और द्वा०से अमा०तक पहल शेष अपने दिन । | २५ जन. संकट ४, २८ जन. साहिब ७
मध्यान्ह—चतुर्थी और पंच० का पहले शेष अपने दिन । | ४ फर्व शिव १४ एक, ५ फर्व सोमा अमा

सप्तर्षि संवत् ५०६४ वि० सवत् २०४५ सन् ई० १९८९ शाके १९१० माघ शुक्ल पक्ष: २६।३६ मकर में सूर्य, बुध मेष में मंगल, वृष में गुरु, धनु में शनि, कुभ में राहु सिंह में केतु: । ७ फर्वरी से २० फर्वरी तक शिशर ऋतु: ।

ग्रह संचार बजे मिनटों में । (61

राघं	माघ	फर्वरी	वार	नक्षत्र		घड़ी	पल	तिथि		घड़ी	पल	सू उ	सू अ	
१६												७	५	
४२	२५	७	मं	धं	दि	८	३५	प्र	दि	८	११	११	४९	५।५० प्रात: उदय चंद्रमा, चन्द्रदर्शन, उन्मूलम् । Bकालदंड:।
४०	२६	८	बु	श	दि	४	४५	द्वि	दि	८	३२	१०	५०	त्र्यह:, दिन कम, गौरी ३, १-४३ रात मीन में चंद्रमा, मानसं ।
३८	२७	९	गु	पूफा	दि	०	४२	च	शे	३	४	९	५१	त्रिपुरा ४, मुद्गरम् । Aमेष में चन्द्रमा पंचक समाप्त, श्रीवत्स:।
३५	२८	१०	शु	रे	शे	३	२२	पं	शे	८	५५	८	५२	बसन्त ५, १०-३७ रात गंडान्त आरंभ, ४।१४ रातA
३३	२९	११	श	अ	शे	७	१४	ष	शे	१४	४०	७	५३	९-५५ प्रात: गंडान्त समाप्त, कुमार ६, मासान्त, सौम्य: ।
३१	फ१	१२	र	भ	शे	१०	४८	स	प्र	८	२७	६	५४	६-३४ सायं संक्रान्ति कुभ में सूर्य मुहू. १५ तटे संक्रान्ति वृत, B
२९	२	१३	चं	कृ	शे	९	३८	अ	प्र	४	२६	३	५४	७-२६ प्रात: वृष में चन्द्रमा, भीष्म ८, स्थिरा: ।
२६	३	१४	मं	रो	शे	१५	४४	न	प्र	१	१७	५	५५	मातंग:।
२४	४	१५	बु	मृ	प्र	१३	४३	द	दि	२९	२८	४	५६	१२-१६ दिन मिथुन में चन्द्रमा, अमृतम् ।
२२	५	१६	गु	आ	शे	१७	३	ए	दि	२५	४१	३	५७	भीमसेन ११, जया ११, काण्ड: ।
२०	६	१७	शु	पु	शे	१६	०	द्वा	दि	२६	११	२	५८	८।९ सायं कर्कट में चंद्रमा, ४-११ रात शुक्र अस्त, अलापक:।
१७	७	१८	श	ति	शे	१६	३७	त्र	प्र	०	३५	१	५९	मैत्रम् । D३-५६ रात सिंह में चन्द्रमा, यक्षणी १४, वज्रम् ।
१४	८	१९	र	अश्ले	शे	९	५८	चं	प्र	३	३०	7 0	6 0	११-३७ रात पूर्णिमा चन्द्रमा, १-२५ रात गंडान्त आरंभ, D
१२	९	२०	चं	मं	शे	५	१२	पू	प्र	७	२६	6 59	6 1	११-२७ दिन गंडान्त समाप्त, काक पूर्णिमा, माघ पूर्णिमा, माघP
														Pस्नान, ललिता जयन्ती, खग्रास चन्द्रग्रहण*, ध्वांक्ष: ।

श्राद्ध—प्रति० से तृतीया और एका०द्वा० का पहले शेष अपने दिन । | ८ फर्वरी गौरी तृतीया ।
मध्यान्ह—प्रति० में ततीया तक पहले शेष अपने दिन । | २० फर्वरी माघ पूर्णिमा चन्द्रग्रहण ।

सप्तर्षि सवत् ५०६४ वि० सवत् २०४५ सन् ई० १९८९ शाके १९१० फाल्गुण कृष्ण पक्षः २७।४२ कुंभ में सूर्य,

	राष्ट्रं	फागुण	फर्वरी	वार	नक्षत्र		घड़ी	पल	तिथि		घड़ी	पल	सू उ	सू अ	राहु मेष में मंगल, वृष में गुरु, धनु में शनि, मकर में बुध, शुक्र,सिंह में केतुः । २१ फर्वरी से ७ मार्च तक वसन्त ऋतुः । ग्रह संचार बजे मिनटों में । (62
१६													६	६	Tरात गडान्त होरा अष्टमी,चक्रेश्वर यात्रा,ध्वांक्षः ।
	९	१०	२१	मं	मं	दि	०	२१	प्र	प्र	१२	५	५८	२	कालदण्डः । Xदिन से कुम्भ में शुक्र स्थिरः ।
	६	११	२२	बु	पूफा	दि	६	३८	द्वि	शे	२०	१२	५७	३	४।१६ दिन कन्या में चन्द्रमा,६-५० प्रातः हीन चन्द्रमा,९।५३X
	४	१२	२३	गु	उ	दि	१३	९	तृ	शे	१४	५३	५६	४	गुरु मास,मातंगः ।
	१	१३	२४	शु	ह	दि	१९	१७	चं	शे	९	३४	५४	६	संकट ४, ३-५३ रात तुला में चन्द्रमा,अमृतम् ।
१५	५८	१४	२५	श	चि	दि	२५	१६	पं	शे	४	३६	५३	७	काण्डः ।
	५६	१५	२६	र	स्वा	प्र	२	९	ष	शे	०	३२	५२	८	त्रिस्पृक,दिन अधिक अलापकः,
	५३	१६	२७	चं	वि	प्र	६	१	ष	दि	२	३७	५१	९	२-६ दिन वृश्चिक में चन्द्रमा,९-५२ दिन वृष में भौम मैत्रम् ।
	५०	१७	२८	मं	अं	प्र	८	४२	स	दि	४	३५	५०	१०	सीता जयन्ती वज्रम् ।
	४८	१८	म१	बु	ज्ये	प्र	१०	८	अ	दि	५	१४	४९	११	१०-१४ रात धनु में चन्द्रमा,मूल आरंभ, ४-५ दिन से ४-१७T
	४५	१९	२	गु	मू	प्र	१०	१६	न	दि	४	३९	४८	१२	१०।१६ रात मूल समाप्त, धौम्यः ।
	४२	२०	३	शु	पू	प्र	९	१४	द	दि	२	५०	४७	१३	त्र्यहः,दिन कम,विजया ११, ३-४५ रात मकर में चन्द्रमा,प्रवर्धाः।
	४०	२१	४	श	उ	प्र	७	२१	द्वा	शे	०	१०	४६	१४	क्षयः । Dपंचक आरंभ ७-४३ सायं चन्द्रमा अस्त शूलम् ।
	३७	२२	५	र	श्र	प्र	४	३३	त्र	शे	४	१	४५	१५	५।३७ कुम्भ राशि में बुध,शिवरात्रि एक,शबे मरोज़,मुसलम् ।
	३४	२३	६	चं	धं	प्र	१	१०	चं	शे	८	३६	४४	१६	शिव १४ एक,७-२६ प्रातः कुम्भ राशि में चन्द्रमा,D
	३२	२४	७	मं	श	दि	२६	१६	अं	शे	१३	४९	४३	१७	भौम,प्रदोष,भौम अमावमी मृत्युः । *सूर्य ग्रहण ।

श्राद्धः - सप्तमी से एका० तक पहले शेष अपने दिन । | २४ फर्वरी संकट ४, ५ मार्च शिव रात्रि एक ।
मध्यान्ह :—सतमी से एका० तक पहले शेष अपने दिन । | ६ मार्च शिव १४ एक, ७ ,, अमा. वृत,सूर्य ग्रहण ।

सप्तर्षि स. ५०६४ वि० २०४५ शाके १९१० ई० १९८९ फाल्गुण शुक्ल पक्ष: २९।२ कुंभ में सूर्य शुक्र बुध, राहु,
वृष में मंगल गुरु धनु में शनि, सिंह में केतु ।
८ मार्च से २२ मार्च तक वसन्त ऋतु: ।
ग्रह संचार बजे मिनटों में ।

राधं	फाग	मार्च	वार	नक्षत्र		घड़ी	पल	तिथि		घड़ी	पल	सू उ	सू अ	
												६	६	
१५ २९	२५	८	बु	यूभा	दि	२२	१६	प्र	प्र	५	३५	४२	१८	४।५६ दिन उदय चन्द्रमा, १०-१ दिन में चन्द्रमा, काम्य: ।
२६	२६	९	गु	उभा	दि	१८	१३	द्वि	दि	२८	४३	४१	१९	चन्द्रदर्शन, राम कृष्ण परम हंस जयन्ती, छत्रम् । Cमातंग: ।
२४	२७	१०	शु	रे	दि	१४	१७	तृ	दि	२३	४	४०	२०	१२-२२ दिन मेष में चन्द्रमा, पंचक समाप्त, ६-४५ प्रात: A
२१	२८	११	श	अ	दि	१०	४४	च	दि	१७	४९	३९	२१	सौम्य: । A५-४५ सायं तक गंडांत, १०-१६ दिन बुध अस्त, O
१८	२९	१२	र	भ	दि	७	४५	पं	दि	१८	३	३८	२२	कुमार ६ वृत, ५-५२ सायं वृष में चन्द्रमा, कालदण्ड: ।
१६	३०	१३	च	कृ	दि	५	२४	ष	दि	९	६	३७	२३	मासान्त, स्थिर: । Dसंक्रांति वृत, सोन्थ, वसन्त आरंभ, तैला ८, C
१३	च१	१४	मं	रो	दि	४	०	स	दि	६	३	३५	२५	८।२२ सायं मिथुन में चन्द्रमा, १-५८ दिन संक्राति मीन में B
१०	२	१५	बु	मृ	दि	३	२९	अ	दि	४	३	३४	२६	होला ८ अमृतं । Bसूर्य मुहू ३० सागर:D
८	३	१६	गु	आ	दि	४	२९	न	दि	३	१८	३३	२७	२-५४ रात कर्क में चन्द्रमा, काण्ड: । Oश्रीवत्स: ।
५	४	१७	शु	पुं	दि	६	३३	द	दि	३	५०	३२	२८	अलापक: । K१२-२३ दिन सिंह में चन्द्रमा, प्रदोष वृत, वज्रम् ।
२	५	१८	श	ति	दि	९	५३	ए	दि	५	३४	३१	२८	१०-२१ दिन मीन में शुक्र असला ११ मैत्रम् । Lगंडांत, K
०	६	१९	र	अश्ले	दि	१४	२२	द्वा	दि	८	२६	३०	३०	गोविन्द द्वादशी, ब्रह्म स्वाप ५-४७ प्रात: से ६।४४ सायं तकL
५७	७	२०	चं	मं	दि	१९	४५	त्र	दि	१२	३७	२९	३१	नव रोज, दिन रात बराबर, ध्वांक्ष: । Sहोलिका दहन धौम्य: ।
५५	८	२१	मं	यूभा	दि	२५	५०	च	दि	१७	१९	२८	३२	१-२५ रात कन्या में चन्द्रमा, ५-४४ दिन पूर्णिमा में चंद्रमाS
५२	९	२२	बु	उफा	प्र	२	३	पू	दि	२२	२७	२७	३३	८।२३ सायं मीन में बुध, होली पूर्णिमा, धर्मंमनुजन्म, प्रवर्ध: ।

श्राद्ध:—तृती० से पूर्णि० तक पहले शेष अपने दिन ।॥ | १२ मार्च कुमार ६ वृत, थाल बरून । १४ मार्च संक्रान्ति
मध्याह्न:—षष्ठी से चतुर्दशी तक पहले शेष अपने दिन । | वृत, तैला ८ । २२ मार्च होली पूर्णिमा ।

	राष्ट्र	चैत्र	मार्च	वार	नक्षत्र		घड़ी	पल	तिथि		घड़ी	पल	सू उ	सू अ	केतु, धनु में शनि:, कुंभ में राहु । २३ मार्च से ७ अप्रैल तक उत्तर गोल वसन्त ऋतु । ग्रह संचार बजे मिनटों में । (64
१४													६	६	Cचन्द्र संवत्सर समाप्त मैत्रम् ।
	४९	१०	२३	गु	ह	प्र	८	२६	प्र	दि	२७	४१	२६	३४	क्षय: ।
	४७	११	२४	शु	चि	प्र	१४	२१	द्वि	प्र	२	३	२५	३५	११-९ दिन तुला में चन्द्रमा, ६–३० दिन हीन चन्द्रमा, गज:।
	४४	१२	२५	श	स्वा	शे	१५	२२	तृ	प्र	५	५८	२४	३६	शनि मास, सिद्ध:।
	४२	१३	२६	र	वि	शे	१०	३	च	प्र	८	५७	२३	३७	९–३५ रात वृश्चिक में चन्द्रमा, संकट ४ वृत, उन्मूलं ।
	४०	१४	२७	चं	अं	शे	५	५४	पं	प्र	१०	४३	२२	३८	मानसं ।
	३७	१५	२८	मं	ज्ये	शे	२	५०	ष	प्र	११	१०	२१	३९	डा. कर्ण सिंह जन्म, ११–४९ रात गंडान्त आरंभ, मुद्गरम् ।
	३४	१६	२९	बु	मू	शे	१	४	स	प्र	१०	२०	२०	४०	११-५८ दिन गंडान्त समाप्त, ५-५५ प्रात: धनु में चन्द्रमा, A
	३२	१७	३०	गु	पूषा	शे	०	३५	अ	प्र	८	१८	१९	४१	६-५ प्रात: मूल समाप्त, शीतला ८, राज्ञी ८, प्रजापत्य: ।
	२९	१८	३१	शु	उषा	शे	१	१२	न	प्र	५	७	१८	४२	११-४० दिन मकर में चन्द्रमा, आनन्द:। Aमूल आरंभ, ध्वज: ।
	२७	१९	अ१	श	श्र	शे	२	१९	द	प्र	१	१	१७	४३	स्थिर:।
	२४	२०	२	र	धं	शे	५	१८	ए	दि	२७	२६	१६	४४	३-३१ दिन कुंभ में चन्द्रसा पंचक आरंभ, पाप मोचनी ११, H
	२१	२१	३	चं	श	शे	८	३९	द्वा	दि	२२	८	१५	४५	प्रदोष वृत, अमृतं । Hमातंग: ।
	१९	२२	४	मं	पूभा	प्र	१२	६	त्र	दि	१६	२२	१४	४६	१२–११, दिन मीन में चन्द्रमा, ११–३४ रात चन्द्रमा अस्त, P
	१६	२३	५	बु	उभा	प्र	८	१९	चं	दि	१०	२८	१३	४७	चैत्र १४, अलापक: । Pकाण्ड: ।
	१३	२४	६	गु	रे	प्र	४	१४	अं	दि	४	३३	१२	४८	८।३० सायं मेष में चन्द्रमा, पंचक आरंभ, ११–३१ दिन सेX
															X२-८ रात तक गंडात, विचार नाग यात्रा, श्री भट्ट दिवस, C

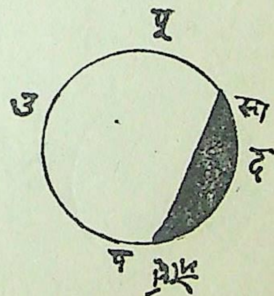
श्राद्ध:—प्रति०तथा द्वा० से अमा०तक पहले शेष अपने दिन । | २६ मार्च संकट ४ ३० मार्च शीतला ८

मध्यान्ह—चतु० और अमा० का पहले शेष अपने दिन । | २ अप्रैल पाप मोचनी ११ ।

ग्रहण निर्णय संवत् २०४५ वि० सन् १९८८-८९ ई०

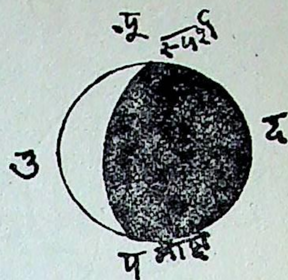
संवत् २०४५ विक्रमी में पृथ्वी पर चार ग्रहण होंगे जिनमें दो सूर्य ग्रहण तथा दो चन्द्र ग्रहण होंगे। इन चार ग्रहणों में दो ग्रहण एक सूर्य ग्रहण तथा एक चन्द्र ग्रहण ही दिखाई देंगे। शेष दो ग्रहण यहां पर दिखाई नहीं देंगे।

1) **खण्ड ग्रास सूर्य ग्रहण :**



संवत् २०४५ विक्रमी भाद्रपद कृष्ण पक्ष अमावसी रविवार तदनुसार ११ सितंबर १९८८ ईस्वी को प्रातः ७ बजकर २७ मिनट पर आरम्भ होकर तथा मोक्ष ८ बजकर ५६ मिनट पर समाप्त होगा इसका पुण्यकाल १ घंटा २९ मिनट तक रहेगा। इस ग्रहण का सूतक प्रातः काल से ही आरम्भ होगा। यह ग्रहण कंकणाकृति के रूप में दिखाई देगा। यह ग्रहण नैऋत कोण से आरम्भ होकर अग्निकोण में समाप्त होगा। यह ग्रहण पूर्व काल उर्भा नक्षत्र एवं सिंह राशि में हो रहा है अतः सिंह, कन्या, मकर, मीन राशि वालों के लिए भयावह होगा। शेष राशि वालों के लिए मध्यम फलदायक रहेगा।

2) खग्रास चन्द्र ग्रहण :



यह ग्रहण माघ शुक्ल पूर्णिमा सोमवार २० फर्वरी ८९ ईस्वी की मघा नक्षत्र एवं सिंह राशि में होगा। इस दिन माघ पूर्णिमाभी है। यह खग्रास चन्द्र ग्रहण सायं ७ १५ पर आरम्भ होकर रात के ११ बजकर २ मिनट पर समाप्त होगा। इस ग्रहण का पूर्वकाल ३ घण्टे ४७ मिनट तक रहेगा यह ग्रहण सिंह राशि से युत होगा। अतः अग्नि कोण में आरम्भ होकर नैऋति कोण से समाप्त होगा।

इस ग्रहण के प्रभाव से आकाश कुछ काला दिखाई देगा। यह ग्रहण कर्कट, सिंह, मीन, मकर, वृष, कन्या राशि वालों के लिए कष्टकारक है। अतः ऊपरलिखित राशि वालों को यह ग्रहण नहीं देखना चाहिए।

इन दो ग्रहणों का प्रभाव :

इन दो ग्रहणों के प्रभाव से अग्निभय, यान-दुर्घटनाएं तथा शासन परिवर्तन, भूकम्प तथा कहीं छत्रभंग होगा। अनाजों के बाजार में तेजी आवे तथा सोने के भाव में उत्तरोतर वृद्धि होगी। म्लेच्छ देशों में आतंक उत्पन्न होगा।

नौ ग्रहों के वृतों की रीति

जब किसी व्यक्ति का कोई ग्रह गोचर से वा दशा से अथवा अंतर से अशुभ चल रहा हो तो निम्नलिखित रीति के अनुसार उस ग्रह के निश्चित वार पर व्रत रखने से उस ग्रह का अशुभ फल नष्ट होता है व्रत रखने की नीति इस प्रकार है :

रविवार का वृत :

सूर्य का वृत रविवार को रखें यह वृत शुक्लपक्ष की पहिली रविवार से आरम्भ करके ऐसे वृत २२ दिन वा ३० दिन अथवा वर्ष के आखीर तक रखें वृत के दिन केवल गेहूं की रोटी किसी मीठे पदार्थ के साथ खावें, नमक का प्रयोग न हो भोजन से पूर्व यथा संभव लाल वस्त्र पहन कर बीज मंत्र "ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय: नमः" की पाँच मालायें जपें पश्चात लाल चन्दन, चावल और फल तथा धूप से भगवान सूर्य की अर्चना करें जब वृत का आखिरी दिन हो हवन कर लें ब्राह्मणों को मीठा भोजन करावें शुभ फल होगा।

सोमवार का वृत :

यह वृत शुक्लपक्ष की पहिले सोमवार से आरम्भ करके (१०) दस या चौवन (५४) दिन ऐसे वृत रखने चाहिये। वृत के दिन सफेद वस्त्र पहन कर इस बीज मंत्र 'ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः'

की ग्यारह या तेरह मालायें। जपें। जाप के बाद नमक के बिना यथाशक्ति चावल, दहीं, घी, खंड का दान करके स्वयं इन्हीं पदार्थों का सेवन करें। जब वृत का अंतिम दिन हो तो हवन के बाद पूर्णाहुति करके क्षीर, खंड से ब्राह्मणों तथा बच्चों को खानां खिलावें। शुभफल दायक होगा।

मंगलवार कें वृत की विधि

यह वृत शुक्लपक्ष की पहली मंगलवार से आरंभ करके २१ या ४५ ऐसे वृत रखें। वृत के दिन लाल वस्त्र पहन कर इस बीज मत्र-'ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः' की पांच या सात मालायें जपें, बाद में नमक के बिना शक्कर से बने हलवे या बूंदी के लड्डुओं का दान करके स्वयं भी उसी का आहार करे। जव वृत का अंतिम मंगलवार हो, तो हवन के बाद पूर्णाहुति करके लाल वस्त्र, तांबा, मसुर, गुड़, गेहूं, और नारियल का दान करके ब्राह्मणों और बालकों को मीठा भोजन करावें, सुख दायक होगा।

बुधवार का वृत !

यह वृत शुक्लपक्ष की पहिली बुधवार से आरंभ करें, २१ वा ४५ दिन को ऐसा वृत रखना चाहिए और हरा कपड़ा पहन कर इस बीज मंत्र 'ओं ब्रां, ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः' ३ या १७ मालायें जपें। इस दिन नमक के बिना इन पदार्थों का सेवन करें जैसे — मूंग का छिलका, मूंग की मीठी खिचड़ी, मूंग के लड्डू। इसके अतिरिक्त गंगा का जल, तुलसी के तीन पत्तों के समेत चरणामृत का

भी सेवन करें। वृत के बाद इन पदार्थों दान यथाशक्ति करें। अंतिम बुधवार को हवन के बाद पूर्णाहुति करके ब्राह्मणों तथा लूले लंगड़ों को मूंग की मीठी खिचडी खिलावें। खिलाने के बाद यथा संभव हरा कपड़ा मूंग आदि अनाज उन्हें दान के रूप में दें। यह शुभ स्वास्थ्य प्रद रहेगा।

बृहस्पति का वृत :

यह वृत शुक्लपक्ष की पहिली गुरुवार से आरंभ करें १६ वार अथवा दो वर्ष तक ऐसा व्रत रखें। इस दिन पीला कपड़ा पहन कर इस बीज मंत्र 'ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः' की ३ या ११ मालायें जपें व्रत के दिन चंने घी और खांड से बने हुए लड्डू खावें और यहीं चीज़ें दान दें। जब वृत का अंतिम वीरवार हो तो हवन के बाद पूर्णाहुति करके ब्राह्मणों और बालकों को ऐसे ही लड्डू खिलालें। यथा संभव सोना, पीले वस्त्र, चने की दाल, खांड, हल्दी, घी, पीले रंग के फल बालकों को दान के रूप में दें। यह वृत शुभ फलदायक है।

शुक्रवार का वृत :

यह वृत शुक्लपक्ष की पहिली शुक्रवार से आरंभ करें २१ या ३१ वृत रखें। वृत के दिन सफेद वस्त्र पहन कर इस बीज मंत्र ओं 'द्रां, द्रीं, द्रौं सः शुक्राय नमः की ३ या २१ मालाओं का जप करें। इस दिन खानें में चावल, खांड, या दूध से बने पदार्थों का सेवन करें और यहो पदार्थ यथा शक्ति दान दें। अंतिम शुक्रवार को हवन के बाद पूर्णाहुति करके खीर तथा खांड से बने पदार्थ ब्राह्मणों और बालकों

को खिलावें। यथाशक्ति चांदी, सफेद वस्त्र, खांड, चावल, आदि का दान करें। इस से समृद्धशाली होगा।

शनिवार का वृत :

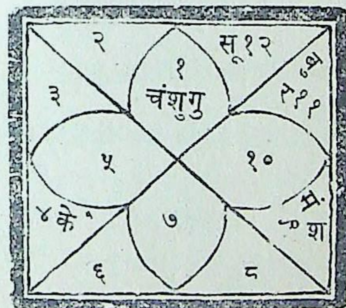
यह वृत शुक्लपक्ष की शनिवार को आरंभ करके ढाई वर्ष तक रखें इस दिन काला कपड़ा पहन कर इस बीज मंत्र—"ओं प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः" की ३ या ११ मालाओं का जाप करें। इसके बाद किसी पात्र में शुद्ध जल, काले तिल, शक्कर तथा थोड़ा सा दूध, डाल कर पच्छिम की ओर मुंह करके किसी फलदार वृक्ष की जड़ में डाल दें। खाने में माष की बनी चीजें या खिचड़ी या तेल से बनी चीजों का सेवन करें इन पदार्थों को दान के रूप में दे। हवन के बाद पूर्णाहुति करके तेल से बनाये हुए पकवान दान करें। यह वृत शुभ फलदायक होगा।



ब्राह्मण महामण्डल ने हिन्दु जनता की सुविधा के लिये कुछ धार्मिक पुस्तिकाओं का प्रकाशन किया है जैसे शिव रात्रि पूजा, शिव रात्रि निर्णय, पूजा [illegible] साधारण जनता इन्हें खरीद कर लाभ उठायें।

ज्योतिष शास्त्र के आधार पर बारह राशियों का फलादेश-विक्रमी संवत् २०४५ ईस्वी-१९८८-८९

गोचर चक्र मेष राशि ।

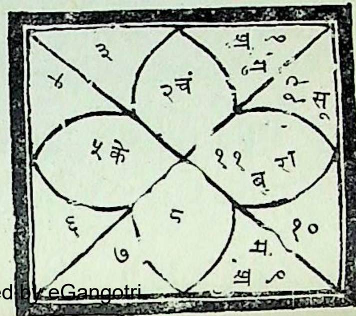


मेष राशि वालों के गोचर चक्र में लग्न का स्वामी भौम शनि के साथ त्रिकोण में पड़ा है। लग्न में चन्द्रमा बृहस्पति और शुक्र स्थित है ग्हारहवें घर में बुध के साथ राहु पड़ा है। बारहवें में सूर्य खर्च के घर में पड़ा है। मेष राषि बालों को इस वर्ष शनैश्चर की ढैया खत्म हो रही है। अत: मेष राशि वालों को इस वर्ष के पहले दो मास-मंगल और शनि के साथ युति भेद होने के कारण कुछ मध्यम फलदायक है। अप्रैल से जून के अंत तक घरेलू चिन्ता और स्वास्थ्य में गड़बड़ तथा स्थान परिवर्तन और बच्चों के प्रति भी कुछ चिन्ता रहेगी जुलाई के आरम्भ से प्रत्येक काम में सिद्धि तथा लेनदेन के कार्यों में धन का लाभ, सम्बन्धियों से सुख तथा स्त्रीपक्ष का भी सुख प्राप्त होगा। इस वर्ष मेष राषि वालों की प्रत्येक मनोकामना पूर्ण होगी। मुकदमें में सफलता और मानसिक लाभ। बच्चों

के लिए यह वर्ष लाभप्रद है। उनकी विद्या तथा रोजगार में उन्नति होगी। स्त्रीवर्ग के लिए यह वर्ष उत्तम किन्तु मध्य काल में स्त्री को खून की कमी के कारण धन का खर्च होगा। यदि मेष राषि वालों को तामारी काम करना हो तो जून के मध्य में ही करें। सामान्यरूप से यह वर्ष स्त्री तथा विद्यार्थी वर्ग के लिए उत्तम सिद्ध होगा।

मेष राशि वालों के लिए इस वर्ष मंगलवार के दिन अवश्य वैष्णव रहना चाहिये और हनुमान जी की पूजा करनी चाहिए। इसके अतिरिक्त शुक्लपक्ष की अष्टमी का वृत रखें पीला चावल (तहर) पक्षियों को डालें।

वृष राशि का गोचर चक्र :

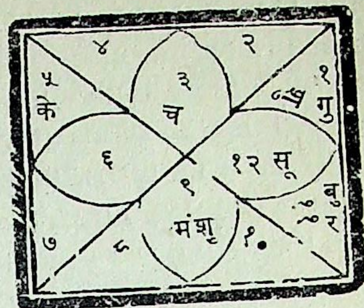


वृष राशि वालों के गोचर चक्र में लग्न का स्वामी शुक्र गुरु के साथ बारहवें घर में पड़ा है। मंगल और शनि रन्ध्र में पड़ा है। केन्द्र में केतु बुध और राहु के साथ एक योग बनता है। वर्ष के आरंभ में शनि की लघुकल्याणी ढैया आरंभ हो जायेगी जिसका प्रभाव वृष राशि वालों के लिए अक्टूबर 1988 से वर्ष के अंत तक अनिष्ट होगा। फलतः वृष राशि वालों को धन का व्यय और स्वास्थ्य में गिरावट तथा स्त्रीपक्ष से चिन्ता और चोट का भय होगा। अतिरिक्त किसी से झगड़ा होने की

सभावना भी है । विशेष सम्बन्धियों से सूझ बूझ से बर्ताव करें नहीं तो धन की हानि तथा कामकाज में अचानक रुकावट आने की संभावना है । शत्रुओं से सावधान रहना चाहिये । जून के मध्य में गुरु पूर्णारूप से वृष राशि में आ रहा है जिससे आपके कष्टों में कुछ कमी होगी ।

यदि वृष राशि वालों को किसी यात्रा पर जाना अभीष्ट हो तो जून, जुलाई और नवम्बर में यात्रा न करें, अन्यथा चोट का भय और गुप्तरूप से भी भय की आशंका है । कारोबार के लिए यह वर्ष सामान्य होगा । घरेलू समस्याओं की आशंका भी होगी । बच्चों के लिए यह वर्ष कल्याणकारी होगा । स्त्रीपक्ष के स्वास्थ्य के लिए यह अनिष्ट कारक होगा । गुर्दों की बीमारी का इस में भय होगा । विद्यार्थियों के लिए यह वर्ष मध्यम फलदायक है । इन्हें इस वर्ष काफी परिश्रम करना पड़ेगः । अन्त में उन्हें सफलता मिलेगी । स्त्रीवर्ग के लिए यह वर्ष अगस्त के बाद सुख व सफलता का वर्ष होगा । वृष राशि वालों को इस वर्ष किसी सम्बन्धी से प्रायः चिन्ता बनी रहेगी जिससे उन्हें धन का उपव्यय होगा । वृष राशि वालों को 'हन्द्राक्षी' का पाठ अवश्य करना चाहिये तथा मंगलवार के दिन मीठा भोजन खाना चाहिए । अतिरिक्त भगवान शिव को प्रतिदिन जल चढ़ायें, कल्याणकारी सिद्ध होगा ।

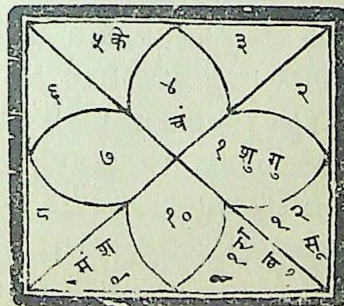
मिथुन राशि वालों का गोचर चक्र



मिथुन राशि वालों के लिए गोचर चक्र में शुक्र और गुरु ग्यारहवें घर में पड़ा है। लग्न का स्वामी बुध राहु के साथ है। भौम: शनि सातवें घर में लग्न को पूरी तरह से देख रहा है। वर्षारंभ में बुद्ध शीघ्र से चल रहा है। वर्ष के मध्य काल में शनि वक्री और गुरु बारहवें घर में आ रहा है। इस कारण मिथुन राशि वालों को इस वर्ष मिला जुला फल मिलेगा। वर्ष के आरंभ में जमीन जायदाद का सुख और धन का व्यय शुभ कार्यों में होगा। सम्बन्धियों से मेल-मिलाप और सुख की प्राप्ति होगी। बिरादरी से मान, लेनदेन के कार्यों में लाभ होगा। परन्तु आपके स्वास्थ्य के लिए यह वर्ष मध्यम होगा। जोड़ों में दर्द और खांसी की पीड़ा होगी। साल के दूसरे भाग में मिथुन राशि वालों को कारोबार और लेनदेन के कार्य में सावधान रहना चाहिये, अन्यथा उन्हें धन की हानि तथा शत्रुओं से झगड़ा होगा यदि कोई नया काम करना हो तो अगस्त तक ही करें। इसके बाद सोचविचार करके ही कदम उठायें। स्त्रीपक्ष से चिन्ता तथा गुप्तरोगों की आशंका बनी रहेगी। बच्चों के लिए यह वर्ष उत्तम सिद्ध होगा। उन्हें विद्यालाभ तथा धनलाभ होगा सामान्यरूप से स्त्रीवर्ग के लिए यह

वर्ष संघर्ष का वर्ष होगा स्वास्थ्य लाभ के लिए उन्हें धन खर्च करना होगा। विद्यार्थी वर्ग के लिए यह वर्ष सुख शान्ति तथा उन्नति का वर्ष होगा मिथुन राशि वालों को इस वर्ष प्रायः सिर में दर्द, वात रोग तथा चोट का भय बना रहेगा। मित्रों से अच्छे सम्बन्ध रहेंगे और उनकी सहायता से प्रत्येक काम में सुविधा प्राप्त होगी। मिथुन राशि वालों को मंगलवार के दिन मीठा भोजन, तथा हनुमान जी की पूजा करनी चाहिए और गायत्री मंत्र का जाप करना चाहिए। इस से उन्हें काम में सफलता प्राप्त होगी।

कर्क राशि वालों का गोचर चक्र

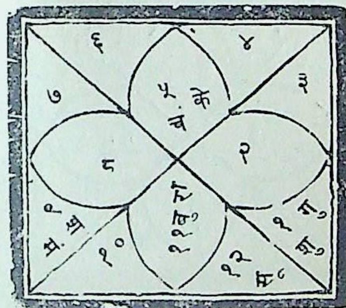


कर्क राशि वालों के गोचर चक्र में बुध का राहु के साथ पड़ने से एक कर्तृ योग बनता है केंद्र में सूर्य और त्रिकोण में निशुक्र और गुरु का योग है। वर्ष पर्यन्त शनि राहु और बुध को पूरी दृष्टि से देख रहा है इस कारण कर्क राशि वालों को वर्ष का पहिला और आखिरी भाग बहुत लाभप्रद होगा। राज्य दरबार में मान और सुख प्राप्त होगा। बिरादरी में भी मान प्रतिष्ठता होगी किसी नये काम में धन का व्यय होगा किसी भले मनुष्य के संपर्क से कारोबार में उन्नति होगी। यात्रा से भी लाभ प्राप्त

होगा यदि तामीरी काम करना हो तो अगस्त के महीने तक ही करना चाहिये उस के बाद लाभ प्राप्ति
नहीं होगी वर्ष के मध्य में सेहत खराब होने से धन का व्यय होगा प्राय: आमाशय में पीडा और खून
की कमी बनी रहेगी स्त्री पक्ष के लिये भी यह वर्ष मध्यम फलदायक है। स्त्री को प्राय: सिर की
पीडा और जोड़ों में दर्द रहा करेगा बाल बच्चों के लिये भी यह वर्ष कुछ सुखदायक नहीं उन्हें अधिक
प्रयास करने से ही विद्या लाभ हो सकता है, कर्क राशि वालों को इस वर्ष घरेलू उलझनों का अधिक
सामना होगा वर्ष के अंत में किसी शुभ कार्य में धन व्यय करना होगा सामान्य रूप से यह वर्ष
विद्यार्थी वर्ग के लिए यह संघर्ष पूर्ण होगा उन का मन पढ़ने में कम लगेगा और आलस्य की माया
बढ़ेगी स्त्री वर्ग के लिए भी यह वर्ष अच्छा नहीं उन्हें प्राय: उदर और आँखों की पीड़ा बनी
रहेगी।

कर्क राशि वालो को इस वर्ष शनि तथा मंगलवार के दिन पीले चावल जानवरों को डालने
चाहिये और शुक्ल पक्ष की अष्टमी का वृत धारण करना चाहिये और इस दिन श्री भवानी सहस्त्र का
पाठ करना चाहिये शुभ फलदायक होगा।

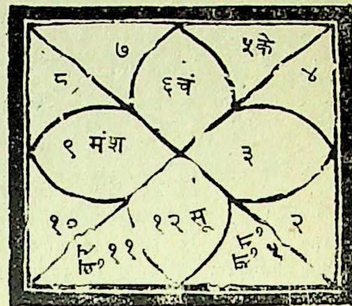
सिंह राशि वालों का गोचर चक्र :



सिंह राशि वालों के गोचर चक्र में मीन राशि मे सूर्य तथा बुध राहु और चन्द्रमा और केतु के युति भेद हैं पाँचवें घर में मंगल और शनि त्रिकोण को भी देख रहा है वर्ष के आरम्भ में सिंह राशि वालों को शनि की ढैया समाप्त हो रही है वर्ष के मध्य में जून के मध्य से गुरु केन्द्र में आ रहा है राहु कुंभ राशि में पड़ा हुआ है इस कारण सिंह राशि वालों के लिये यह वर्ष सुनहरी वर्ष होगा कारोबार और राज्य दरबार में मान लेन देन कामों में धन का लाभ यात्रा से भी सुख लाभ। इस वर्ष किसी प्रियजन से मिलाप होगा प्रायः धार्मिक कार्यों के प्रति झुकाव रहे, घरेलू सुख और शुभ कार्यों में धन का व्यय रहेगा शत्रु भय कुछ न होगा किन्तु संतान पक्ष से कुछ कुछ चिन्ता बनी रहेगी उन के सेहत के प्रति सावधान रहना आवश्यक है स्त्री पक्ष की और से कुछ कष्ट पैदा होगा अतः इस और भी सर्तक रहना जरूरी बनता है अक्टूबर से वर्ष के अंत तक शरीर कुछ ढीला बना रहेगा रक्त दबाव और चोट की संभावना है अतः सिंह राशि वालों को इस वर्ष अपने स्वास्थ्य के प्रति सावधान रहना चाहिये स्त्री वर्ग के लिये यह वर्ष कुछ मध्यम् फलदायक है उन्हें जुकाम, उदर पीडा और जोड़ों

के दर्द की शिकायत प्रायः रहेगी विद्यार्थी वर्ग के लिये यह वर्ष संघर्ष पूर्ण वर्ष है उन्हें चाहिये कि वह मंगलवार के दिन वैष्णव रहें इस से उन्हें सफलता प्राप्त होगी सिंह राशि वालों के लिए इस वर्ष रविवार के दिन वैष्णव रहना चाहिये और प्रति दिन 'ईन्द्राक्षी' का पाठ करें और मंगल के दिन कुत्तों को रोटी व पीले चावल डालें शुभ फल प्राप्त होगा।

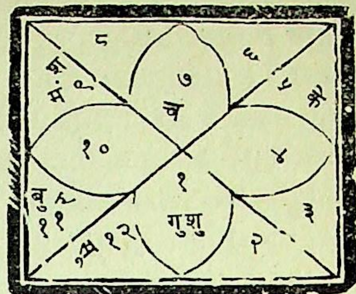
कन्या राशि वालों का गोचर चक्र :



कन्या राशि वालों के गोचर चक्र का स्वामी बुध कुंभ राशि में राहु के साथ शुक्र और गुरु को देख रहा है केन्द्र में मंगल शनि बलों से अधिक है और धन का स्वामी शुक्र गुरु के साथ आठवें घर में पड़ा है सूर्य सातवीं दृष्टि में चन्द्रमा को देख रहा है इस कारण इस वर्ष कन्या राशि वालों के लिये शनि की ढेया भी आरम्भ हो रही है जो ज्योतिष शास्त्र के अनुसार पहिले ही मंगल की युति भेद से बनी है अतः कन्या राशि वालों के लिये यह वर्ष बहुत संघर्ष का वर्ष होगा वर्ष के प्रथम भाग में कारोबार में हानि, घरेलू झगड़ों से मन में चंचलता खून का दबाव और खाँसी आदि से स्वास्थ्य में

ढीलापन आने की संभावना है चौथे घर से मंगल की दृष्टि दरबार के घर पर पड़ रही है इस कारण कन्या राशि वालों को जून का अंत अर्थात् वर्ष के पहिले तीन मास चितापूर्ण रहेंगे स्थान का परिवंतन का भी कुछ योग बनता है अतः कन्या राशि वालों को जून के अंत तक सावधान रहना। किसी से लड़ाई झगड़ा करने से दूर रहना चाहिये नहीं तो अभियोग का भय है । 1। अगस्त के पश्चात जब गुरु वृष राशि के 3 अंश तक चलेगा तब से कारोबार में उन्नति और शत्रु नाश तथा स्वास्थ्य में सुधार आयेगा और तामीरी कार्यों की ओर ध्यान रहेगा अतः यदि कोई तामीरी काम करना हो तो अगस्त महीने से आरम्भ करें । नहीं तो कोई लाभ न होगा वर्ष के अंत में किसी संबंन्धी की चिंता बनी रहेगी अक्तूबर में स्वास्थ्य फिर से ढीला पड़ने की संभावना है स्त्री की सेहत भी कुछ मध्यम् बनी रहेगी उसे कभी कभी सिर में दर्द और ज़ोड़ों में पीड़ बनी रहेगी । प्रायः कन्या राशि वालों के लिए आवश्यक है कि वह इस वर्ष शत्रुओं से सावधान रहें अन्यथा मान हानि की संभावना है सतान पक्ष की ओर भी यह वर्ष मध्यम फलदायक है परन्तु उन्हें राज्य दरबार से मान प्राप्त होगा और यात्रा लाभप्रद होगी विद्यार्थी वर्ग के लिए यह वर्ष मध्यम फलदायक है उन्हें कठिन परिश्रम करने से लाभ होगा स्त्री वर्ग के लिये भी यह वर्ष कुछ अच्छा नहीं सेहत के प्रति सावधान रहना चाहिये और मंगलवार का व्रत रखना चाहिये सामान्य रूप से कन्या राशि वालों को इस वर्ष संक्राती व्रत रखना हितकर होगा मंगलवार के दिन मीठा भोजन तथा शनिवार को कुत्तों को रोटी डालनी चाहिये ।

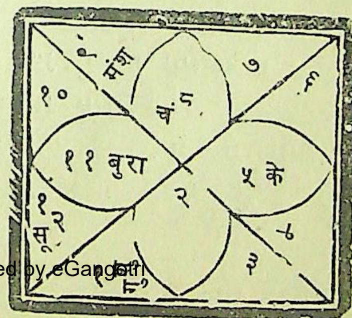
तुला राशि वालों का गोचर चक्र :



तुला राशि वालों के गोचर चक्र का स्वामी शुक्र गुरु के साथ पडा है तीन घरों में भी दो से अधिक ग्रहों का योग है पर इन का आपस में भेद है जो आने वाले सितंबर तक रहेगा इन कारणों से तुला राशि वालों को इस वर्ष के पहिले तीन महीने अर्थात् मार्च से मई 88 तक का समय मध्यम फलदायक रहेगा कारोवार की गति भी मध्यम रहेगी यदि नया कोई काम आरम्भ करना अभीष्ट हो तो मई से ही आरम्भ करें वर्ष के मध्य में धन का व्यय शुभ कार्यों पर अधिक रहेगा किसी के साथ निकट सम्बन्ध बनने का योग भी बनता है इस वर्ष आप को अनायास कोई ऐसा शुभ समाचार मिलेगा जिस में आप के कारोबार के धंधे में लाभ होगा मित्रों और सम्बन्धियों से भी शुभ लाभ होगा वर्ष के मध्य में स्त्री पक्ष तथा संतान पक्ष से कुछ चिंता बनी रहेगी या किसी वयोवृद्ध संबन्धी के बारे में चिंता रहेगी इस बारे में कुछ धन का व्यय भी होगा मंगल के प्रभाव से सेहत में कभी कभी कमज़ोरी अनुभव होगी तथा कुछ चोट का भय रहेगा पर सूर्य के प्रभाव से विशेष हानि नहीं पहुंचेगी सातवें घर में गुरु होने के कारण राज्य दरबार से लाभ और मान प्राप्त होगा यदि कोई

तामीरी काम करना हो तो अगस्त के बाद करें स्त्री पक्ष के लिये यह वर्ष आप के लिये उत्तम है परन्तु वर्ष के मध्य में उसे कमर दर्द और खून की कुछ कमी रहेगी संतान पक्ष से यह वर्ष कुछ मध्यम फल प्रद होगा साधारण रूप से यह वर्ष स्त्री वर्ग के लिए काफी फलदायक है पर सितंबर के बाद इन के स्वास्थ्य में प्रायः ढीलापन आने का भय है विद्यार्थी वर्ग के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा विद्या में सफलता प्राप्त होगी तुला राशि वालों को इस वर्ष संक्राति वृत रखना चाहिये और गुरुवार के दिन मीठा भोजन करना चाहिये जन्म दिन पर नवग्रहों का पाठ करना कल्याणकारी होगा।

वृश्चिक राशि वालों का गोचर चक्र

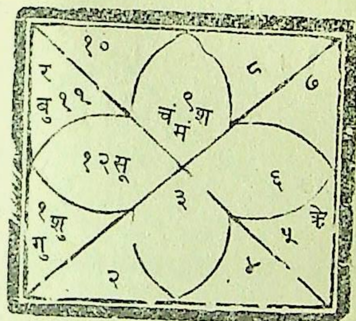


वृश्चिक राशि वालों के गोचर चक्र में दूसरे घर में मंगल और शनि आठवें घर को देख रहा है वर्ष के प्रथम भाग में गुरु बारहवें घर को पूरी दृष्टि से देख रहा है बुध और राहु की दृष्टि केन्द्र पर है अतिरिक्त वृच्छिक राशि वालों को अभी तीन वर्ष तक शनि की दशा चलेगी शनि के इस वर्ष वक्री तथा अतिचारी होने से वृच्छिक राशि वालों को वर्ष के पहिले तीन महीने प्रायः आय के प्रति चिंता प्रद होगा। कारोबार में प्रायः हानि कर्ज से

बोझल और संचित धन का भी व्यय होगा आँखों में पीड़ा और घरेलू उलझनें बढ़ जायेंगी, जिन से मन प्राय विचलित रहा करेगा। वर्ष के मध्य में शरीर में कमज़ोरी, खून की कमी तथा आमाशय में कुछ पीड़ा बनी रहेगी पर निपुण डाक्टर के परामर्श से इन सब बातों में अवश्य सुधार होगा छट्टे घर में गुरु और शुक्र की युति भेद होने के कारण गुप्त रूप से शत्रुओं का भी भय बना रहेगा अगस्त के २७ तारीख तक किसी अभियोग तथा अपमानित होने की भी संभावना है अतः इस समय में सावधान रहने की आवश्यकता है अगस्त के बाद हर बात में स्वतः सुधार आयेगा और पुन मित्रों संबंधियों के परार्मश से कारोबार में वृद्धि होगी और धन लाभ होगा वृच्छिक राशि वालों को इस वर्ष कानूनी झगड़ों से दूर रहना चाहिये संतान पक्ष से यह वर्ष आप के लिए मध्यम फल दायक होगा स्त्री पक्ष से सुख शान्ति कम प्राप्त होगी उसकी हृदय रोग तथा आमाशय की शिकायत से सेहत ढीली बनी रहेगी इस वर्ष आप के लिए स्थान परिवर्तन का योग बनता है सामान्य रूप से विद्यार्थियों के लिए यह वर्ष अच्छा है उन्हें विद्या लाभ होगा महिलाओं के लिये यह वर्ष कम फलप्रद होगा वृच्छिक राशि वालों को चाहिये कि वह मंगल तथा शनिवार को कुत्तों को रोटियां खिलावें और प्रति दिन 'गायत्री मंत्र का जाप करें शुभ फलदायक होगा।

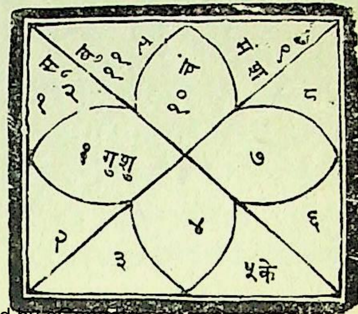
धनु राशि वालों का गोचर चक्र

धनु राशि वालों के गोचर चक्र में केन्द्र में चन्द्रमा के साथ शनि तथा मंगल सातवें और दूसरे केन्द्र को भी देख रहा है गुरु शुभ केन्द्र में है इस कारण धनु राशि वालों को स्वास्थ्य तथा आर्थिक स्थिति के लिये संघर्ष का वर्ष होगा इस लिए धनु राशि वालों के लिए वर्ष के प्रथम भाग में धन का अपव्यय और गुप्त रूप से चिंता साथ ही किसी निकट संबंधी की चिंता में अधिक दौड़ धूप करनी होगी तथा अन्य कुछ घरेलू झगड़ों से मन परेशान रहेगा यद्यपि गुरु पांचवे घर में पड़ा है जो आपको हर संभव सहायता पहुंचा देता है, तथापि गुरु वर्ष के प्रारम्भ से ही अस्त हुआ है इस लिये आप को प्रत्येक काम सोच विचार कर करना चाहिये पन्द्रह जून के बाद आप को किसी मित्र अथवा संबंधी के द्वारा आर्थिक लाभ होगा और आप प्राय प्रत्येक परेशानी से मुक्ति पायेंगे उस समय आपकी आर्थिक दशा बदल जाने की भी संभावना है संतान पक्ष में यह वर्ष धनु राशि वालों के लिये सुख प्रद होगा उन्हें हर काम में सफलता प्राप्त होगी और रोज़गार में उन्नति होगी स्त्री पक्ष के लिये आप का यह वर्ष मध्यम फल दायक है उन्हें गुप्त रूप से शत्रुओं का भय होगा, किन्तु पंद्रह अगस्त से उनका प्रभाव



बहुत कम होगा वर्ष के अंत में आप को शुभ कार्यों पर धन खर्च करना होगा मित्रों और संबधियों से सुख लाभ मिलेगा विद्यार्थी वर्ग के लिये यह वर्ष विशेष फलदायक नहीं उन्हें इस वर्ष भरसक परिश्रम करने के बांवजूद भी प्रर्याप्त सफलता प्राप्त न होगी महिला वर्ग के लिये भी यह वर्ष अच्छा नहीं उन्हें हृदय की पीडा से प्राय कष्ट बना रहेगा धन राशि वालों को चाहिये कि वह प्रति दिन भगवान शंकर पर जल चढ़ाया करें और शनिवार के दिन कच्चा दूध अथवा मांष की रोटी कुत्तों को खिलायें शुभ फल दायक होगा

मक्कर राशि वालों का गोचर चक्र



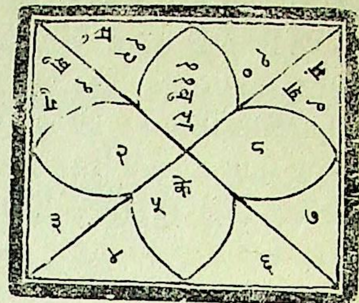
मक्कर राशि वालों के गोचर चक्र में लग्न का स्वामी बारहवें घर में मंगल के साथ कर्त्तरी भेद करता है परन्तु गुरु और शुक्र चौथे घर में होकर दूसरे केन्द्र दसवें घर को देख रहा है राहु की केतु पर पूर्ण दृष्टि है इस कारण मक्कर राशि वालों को वर्ष का प्रथम भाग कुछ परेशानी का होगा मन चंचल और मित्रों से झगड़ा बना रहेगा किसी भले आदमी से विश्वासघात और अभियोग का भय रहेगा स्वभाव में तेज़ी आयेगी अत: मक्कर राशि वालों को जून के अंत तक प्रत्येक काम सोच विचार कर करना

चाहिये और सच्चे मित्रों से परामर्श लेना चाहिये जुलाई से आप के शुभ चक्र में गुरु त्रिकोण में आयेगा और मंगल अंशभेद

से आगे चलेगा और आप के कारोबार में परिवर्तन आने की संभावना है नये काम से लाभ प्राप्त होगा भूमि-संपत्ति से सुख और क्रिय विक्रिय में धन लाभ। यदि आप राजकीय नौकर हैं तो अनायास लाभ होगा। परन्तु धन संचय का अवसर कम मिलेगा। इस वर्ष मकर राशि वालों को संतान पक्ष से सुख लाभ होगा। उन्हें विद्या में वृद्धि और उत्तम फल मिलेगा। स्त्री पक्ष में भी यह वर्ष उत्तम है। स्त्री से आपको इस वर्ष अच्छा सुख प्राप्त होगा। उसके संबन्धियों से भी लाभ की संभावना है। साधारण रूप में मकर राशि वाले विद्यार्थी इस वर्ष अच्छी तरह सफलता प्राप्त करेंगे। महिला वर्ग के लिये भी यह वर्ष शांति का वर्ष है मक्कर राशि वालों को इस वर्ष यात्रा सावधानी से करनी चाहिये नहीं तो चोट का भय है अगस्त से अक्तूबर तक दफ्तर में अपने अधिकारियों से नर्मी से पेश आना आवश्यक है जिस से उन के द्वारा कुछ अनिष्ठ न होने पाये मक्कर राशि वालों को इस वर्ष प्रतिदिन इंद्राक्षी का पाठ करना चाहिये और शुक्ल अष्टमी का व्रत रखना चाहिये मंगल के दिन कुत्तों को रोटियां डालने से शुभ फल दायक होगा।

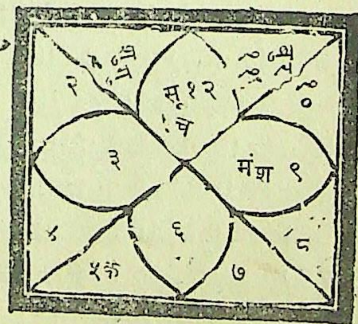
कुंभ राशि वालों का गोचर चक्र

कुंभ राशि वालों के गोचर चक्र में लग्न के घर से चन्द्रमा बुध और राहु सातवें घर को पूर्ण दृष्टि से देख रहे हैं ग्यारहवें घर में मंगल और शनि त्रिकोण और केन्द्र को देखते हैं गुरु दसवें घर को देख रहा है वर्ष लग्न का स्वामी शनि मंगल के अंतराल में है इस कारण कुंभ राशि वालों के लिये यह वर्ष बहुत उत्तम है तामीरी कार्यों से धन का लाभ और रोज़गार में वृद्धि होगी मित्रों और संबन्धियों से सुख यात्रा में अनायास लाभ की संभावना बिरादरी से प्रसन्ता बनी रहेगी गुप्त रूप से धन प्राप्ति का योग परन्तु जुलाई से दिसंबर तक सेहत में ढील आने की संभावना है प्रायः सिर में दर्द रक्त की कमी और खांसी से कुछ कष्ट उठाना पड़ेगा शुभ कार्यों में धन का व्यय होगा वर्ष के अंत में कुछ कुछ शत्रुओं का भय बना रहेगा और किसी संबन्धी के प्रति चिंता रहेगी। और धन खर्चना होगा स्त्री पक्ष में यह वर्ष मध्यम सुख कारी होगा उसे पेशाब में गर्मी तथा आमाशय में कष्ट अनुभव होगा। संतान पक्ष से यह वर्ष उत्तम फलदायक है सामान्य रूप में यह वर्ष कुंभ राशि वाले विद्यार्थियों के लिये सफलता का वर्ष होगा महिला वर्ग के



लिये भी प्रायः यह वर्ष शुभ दायक है अप्रैल जून तथा दिसंबर के महीने कम फलदायक रहेंगे इन महीनों में सावधानी बरतनी चाहिये यदि यात्रा करनी अभीष्ट हो तो सोच विचार कर करें कुंभ राशि वालों के लिये इस वर्ष बुधवार को मीठा भोजन करना चाहिमे तथा शुक्ल अष्टमी का व्रत रखना चाहिये और शनिवार के दिन तेल में भुने पदार्थ जानवरों को डालना चाहिये शुभ फल प्राप्त होगा।

मीन राशि वालों के लिये गोचर चक्र



मीन राशि वालों के गोचर चक्र में लग्न का स्वामी गुरु मेष राशि के उच्च केन्द्र में शुक्र के साथ मंगल और शनि को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है मंगल और शनि केन्द्र में आपसी मित्रता और आंशिक भेद होने से दोनों केन्द्रों में गये हैं इस कारण मीन राशि वालों के लिये यह वर्ष शुभ फलदायक और सुख समृद्धि का वर्ष होगा वर्ष के प्रारम्भ में तामीरी कार्यों तथा शुभ कार्यों में धन का व्यय होगा सूर्य और चन्द्रमा के प्रभाव से इसे वर्ष मन में प्रसन्नता और बिरादरी से सुख लाभ प्राप्त होगा बारहवें घर में राहु के बुध के साथ होने से [illegible] वर्ष के मध्य भाग में शरीर सेहत में कुछ कष्ट और आंखों में कुछ पीड़ा

पैदा होगी अतिरिक्त जोडों में दर्द और खांसी होने का भय रहेगा, जो विशेष हानिकारक नहीं होगा अपितु डाक्टरों के परामर्श से शीघ्र सुधार आयेगा लिखाई पढ़ाई कार्यों में उत्तम लाभ होगा राज्य दरबार में मान प्राप्त होगा संतान पक्ष से यह वर्ष अच्छा होगा उन्हें हर काम में वृद्धि होगी और धन लाभ होगा स्त्री पक्ष में यह वर्ष मीन राशि वालों के लिये कम सुख दायक है वाहन तथा यात्रा से सुख लाभ होगा परन्तु यात्रा शुभ दिन पर करें मंगल और बुध के दिन यात्रा न करें साधारण रूप से यह वर्ष मीन राशि वाले विद्यार्थी वर्ग के लिये उत्तम है विद्या ग्रहण करने में उन्हें सफलता प्राप्त होगी महिला वर्ग के लिये यह वर्ष अच्छा रहेगा परन्तु उनके शरीर में प्राय: गर्मी रहेगी और खून के दबाव की शिकायत बनी रहेगी मीन राशि वालों को इस वर्ष पीला चावल बना कर जानवरों को डालना चाहिये और प्रति दिन 'भवानी सहस्त्र नाम' का पाठ करना चाहिये, जिस से स्वास्थ्य अच्छा रहेगा।



ध्यान में रखने योग्य कुछ आवश्यक बातें

1. **धनिष्ट** : पंचक (दुस्ट पंचक) पांच नक्षत्र, धनिष्ट नक्षत्र के अर्थ से लेकर रेवती नक्षत्र के अन्त तक पंचक कहलाता है । पंचक में चारपाई बनाना, छत डालना, लकड़ी कपड़ा तथा खाने का

तेल खरीदना, प्रेत को दाह देना तथा दक्षिणी दिशा की ओर यात्रा करना निषेध है इन के बिना पंचक में कुछ निषेध नहीं।

2. **कर पंचक** : हस्त नक्षत्र से अनुराधा नक्षत्र के अन्त तक कर पंचक कहलाता है। यह पांच नक्षत्र प्राय: प्रत्येक शुभ कार्य के लिए उत्तम माने जाते हैं।

3. **प्रत्येक शुभकार्य के लिए निषेध :** मलमास, भानुमास धन राशि तथा सिंह राशि में सूर्य (स्यंग) शुक्रवार बृहस्पति का अस्त, शुक्र और बृहस्पति के अस्त से आगे तथा पीछे के तीन दिन, चन्द्रमा का अस्त, पितृपक्ष, क्षय मास, मासान्त संक्रांति, चित्र कृष्ण पक्ष, सूर्य तथा चांद ग्रहण, 13 दिन का पक्ष, त्रिहा (दिन कम) त्रस्पक (दिन अधिक) प्रत्येक कार्य के लिए निषेध हैं। परन्तु यदि त्रिहा का त्रस्पक सोमवार बुधवार बृहस्पतिवार अथवा शुक्रवार को हो तो निषेध नहीं अपितु ऐसे योग पर आरम्भ किया हुआ काम कल्याण कारी होता है।

4. **गंडान्त :** अश्वनी, रेवती, अश्लेश, मघा, ज्येष्ठा, मूल यह गण्डांत नक्षत्र हैं। यदि बालक का जन्म गण्डांत में हो तो उस का जीवित रहना असंभव ही होता है यदि वह जीवित रहे भी तो रोगी रहता है। माता पिता तथा अपने वंश को दुख देता है।

5. **मूल** : यदि बालक मूल नक्षत्र के पहले पाद में जन्म ले तो पिता के लिए, दूसरे पाद में जन्म ले तो माता के लिए तथा तीसरे पाद में जन्म ले धन के हानिकारक होता है। परन्तु चौथे पाद में जन्म लेना शुभ फलदायक होता है।

6. **मूल और गण्डांत के निवारण का उपाय** : इन दोषों की शान्ति के लिए शान्तियाग तथा औषधि स्नान करने चाहिए। यदि बालक का जन्म दिन में हो तो पिता के समेत, यदि रात्रि में हो तो माता के समेत तथा यदि दोनों सन्ध्याओं में हो तो माता पिता समेत बालक को औषधि स्नान करना चाहिए

7. **मध्यान्ह देखने की विधि** : मध्यान्ह प्रायः उसी दिन होता है जिस दिन तिथि देवा हो। जिस दिन का मध्यान्ह देखना हो उस दिन की तथा उस दिन से पहले की तिथि के घड़ी पल जोड़ कर यदि दिनमान की घड़ी पल से कम हो तो मध्यान्ह पहली तिथि को होता है अर्थात श्राद्ध आदि का व्रत पहले दिन होगा। यदि ज़ोड़ के घड़ी पल दिनमान की घड़ी पल से अधिक हो तो व्रत उसी दिन होगा। पहले दिन नहीं।

8. **श्राद्ध देखने की विधि** : जिस दिन तिथि के साथ 'प्र' लिखा हो उस दिन का श्राद्ध अपने ही

दिन आता है। यदि तिथि के साथ ,दि' लिखा हो तो उस दिन का श्राद्ध पहले दिन आता है जब तिथि के साथ (शे) लिखा हो तो भी व्रत उसी दिन आता है जब अष्टमी 'दि' नवमी 'शे' तिथि हो अष्टमी का श्राद्ध सप्तमी को तथा नवमी का श्राद्ध नवमी को ही होता है। जब दो तिथियां एक समान हों तो श्राद्ध पहली तिथि को ही आता है।

9. **विवाह सम्बन्धी शास्त्र उक्तियां** : 1) सहोदर भाई और सहोदर बहिन का विवाह शास्त्रोक्त नहीं है 2) एक मण्डप पर दो विवाह नहीं करने चाहिए। 3) जिनका एक ही गोत्र हो, उनका आपस में विवाह करना (विशेष कर मातृपक्ष से पांच पीढ़ी तक और पितृपक्ष से सात पीढ़ी तक) निषेध है।

10. **अशौच** : यह दो प्रकार का होता है जन्म लेने का तथा मरने का जन्म के अशौच को सूतक तथा मरने के अशौच को मृतक कहते है। ब्राह्मण को सूतक या मृतक अशौच सात पीढ़ी तक दस दिन के लिए होता है यदि दो अशौच एक साथ पड़े तो क्या करना चाहिए। मरने या जन्म लेने के अशौच के दिनों में यदि दूसरा मरने या जन्म लेने का अशौच पड़े तो पहले अशौच की समाप्ति पर शुद्धि होती है। मरने के अशोच पर यदि जन्म का अशोच पड़े तो मरने के अशोच की समाप्ति पर शुद्धि होती है।

▷—◁

राशि के अनुसार चन्द्रमा का फल

पहला	दूसरा	तीसरा	चौथा	पांचवां	छटा	सातवां	आठवां	नौवां	दसवां	ग्यारहवां	बारहवां
धन लाभ तथा मन की शान्ति	मन की शान्ति प्रसन्नता	धन तथा सम्पत्ति का लाभ	कष्ट, लड़ाई, झगड़ा	अच्छे मनुष्यों से मिलाप	साधारण लाभ	आदर मान	मृत्यु समान कष्ट और भय	धार्मिक लाभ	मानसिक सिद्धि	हर प्रकार से लाभ	हर प्रकार से हानि

यात्रा मुहूर्त विवरण

ज्योतिष शास्त्रानुसार यात्रा के लिए ध्यान में रखने योग्य कुछ महत्त्वपूर्ण बातें

विवरण नं. १

(निषेध मुहूर्त)

दिशानुसार वार नक्षत्र योगिनी तथा चन्द्रमा जो निषेध है

दिशा	वार	नक्षत्र	सम्मुख योगिनी	दायें ओर की योगिनी	पीछे का चन्द्रमा	बायां चन्द्रमा
पूर्व	सोम शनि	ज्येष्ठ	प्रतिपत् नवमी	पंचमी त्रयोदशी	मिथुन तुला कुंभ	कर्क वृश्चिक मीन
पश्चिम	रवि शुक्र भौम	रोहिनी	षष्ठी चतुर्दशी	द्वितीया दशमी	मेष सिंह धनु	मकर कन्या वृष
दक्षिण	रवि गुरु	पू. फा	पंचमी त्रयोदशी	षष्ठी चतुर्दशी	कर्क वृश्चिक मीन	मेष सिंह धनु
उत्तर	भौम, बुध गुरु	उ. फा	द्वितीया दशमी	प्रतिपत नवमी	मकर कन्या वृष	मिथुन तुला कुंभ

१. **निषेघ तिथि** :—चतुर्थी, षष्टी, नवमी, द्वादशी, चतुर्दशी, पूर्णमाशी, अमावस्या शुक्लपक्ष प्रतिपत्, मासान्त तथा संक्राति ।

२. **निषेध योग** :—कालदंडः, द्यौभ्यः, ध्वाक्षः, उन्मूलम, वज्रम, मुसलम्, मुदगरम, काण्डः, क्षयः तथा शूलम ।

३. **अशुभ चन्द्रमा** :—अपनी राशि से चौथा आठवां तथा बारहवां ।

टिप्पणी :—ज्योतिष विद्वज्जनों का मत है कि यात्रा आरम्भ करने के समय यदि चन्द्रमा सम्मुख पड़ता हो तो चौथा आठवां तथा बारहवां चन्द्रमां होना कोई हानिकारक नहीं ।

४. **निषेध नक्षत्र** :—भरनी, कृतिका, आर्द्रा, अश्लेषा, मघा, चित्रा स्वाति तथा विशाखा ।

५. राशि के अनुसार घात चन्द्रमा, घातवार, घात नक्षत्र तथा घात तिथियां (पुरुष तथा स्त्री दोनों के लिए) देखने का चित्र आगे है ।

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि	धनु	मकर	कुंभ	मीन	
घात चं	1	5	9	2	6	10	3	7	4	8	11	12	केवल पुरुषों के लिये
घात चं	1	8	7	9	4	2	6	2	10	11	5	2	केवल स्त्रियों के लिये
घात वार	रवि	शनि	सोम	बुध	शनि	शनि	गुरु	शुक्र	शुक्र	भौम	गुरु	शुक्र	
घात नक्षत्र	मघा	हस्त	स्वाति.	अनु.	मूला	श्रवण	शत.	रेवती	भरणी	रोहि.	आर्द्रा	अश्ले.	
घात तिथि.	प्रति षष्ठी	पंच. दशमी	द्विती. सप्त.	द्विती. सप्त.	तृतीया अष्ट.	पंच. दशमी	चतुर्थी नवमी	प्रतिप. तृतीया	तृतीया अष्ट.	चतुर्थी नवमी	तृतीया अष्ट.	पंचमी दशमी	पुरुषों के लिये
,,	एका.	पूर्ण	द्वादशी	द्वादशी	त्रयो.	पूर्ण	चतुद०	एका.	त्रयोद.	चतुद०	त्रयो.	पूर्ण	स्त्रियों के लिए

उत्तम मुहूर्त

विवरण नं. २

दिशानुसार वार योगिनी तथा चन्द्रमा जो उत्तम है

दिशा	वार	बायें ओर की योगिनी	पीछे की योगिनी	सम्मुख चन्द्रमा	दायां चन्द्रमा
पूर्व	रवि, भौम, बुध, गुरु, शुक्र	द्वितीया दशमी	षष्ठी चतुर्दशी	मेष, वृष, धनु	मकर, कन्या, वृष
पश्चिम	सोम, बुध, गुरु, शनि	पंचमी त्रयोदशी	प्रतिवत नवमी	मिथुन, तुला, कुंभ	कर्क, वृश्चिक, मीन
दक्षिण	सोम, भौम, बुध शुक्र, शनि	प्रतिवत नवमी	द्वितीया दशमी	मकर, कन्या, वृष	मिथुन, तुला, कुंभ
उत्तर	सोम, शुक्र शनि, रवि	षष्ठी चतुर्दशी	पंचमी त्रयोदशी	कर्क, वृश्चिक, मीन	मेष, सिंह, धनु

१. **उत्तम नक्षत्र** :—अश्विनी, पुनर्वसु, अनुराधा, तिष्या, मृगशिर, रेवती, हस्त, श्रवण तथा घनिष्ट।

२. **मध्यम नक्षत्र** :—रोहिनी, उ०फा, उ०षा, उ०भा०, पू०फा०, पू०षा०, पू०भा० ज्येष्टा, मूला तथा शतभिषक।

सामान्य मुहूर्त

विवरण नं० ३

१. मुहूर्त ठीक न होने की दशा में यदि यात्रा को जाना आवश्यक हो तो :—

अ) गुरुवार, शुक्रवार तथा रविवार की रात्रि में यात्रा करना विहित है।

ब) सोमवार, शनिवार तथा मंगलवार को दिन में यात्रा करने में दोष नहीं है।

२. **प्रस्थान** :—काश्मीर की प्रथा के अनुसार शुभ मुहूर्त पर प्रस्थान निकालना भी शुभफलदायक होता है। जिस दिशा को जाना हो, उस ओर कोई विशेष वस्तु (वस्त्र आदि) शुभ मुहूर्त पर निकाल कर रखे। दिशा के अनुसार प्रस्थान का प्रभाव कितने दिन तक रहता है इसका विवरण निम्नांकित है।

दिशा	प्रस्थान का प्रभाव
पूर्व	७ दिन तक
दक्षिण	५ दिन तक
पश्चिम	३ दिन तक
उत्तर	२ दिन तक

शुभ मुहूर्त

१. **वही खाता तथा नई दुकान खोलना** :—अनुराधा, रोहिनी तिष्या, मृगशिर, हस्त, चित्रा यह नक्षत्र शुभफलदायक है। चतुर्थी, चतुर्दशी, अमामसी, मासान्त तथा संक्राति की तिथियां तथा वारों में मंगलवार बही खाता एवं नई दुकान खोलने के लिए निषेध है।

२. **चार्ज लेन देन** :—नक्षत्रों में अश्विनी, मृगशिर, चित्रा हस्त तिष्या अनुराधा रेवती तथा वारों में बुद्धवार वृहस्पतिवार एवं शुक्रवार शुभफलदायक हैं। चतुर्थी चतुर्दशी, अमावसी मासान्त और सक्राति की तिथियों को छोड़ कर शेष सब तिथियां ठीक हैं।

३. **ऋण देना अथवा लेना** :—अमावसी, मासान्त तथा संक्राति के दिनों पर दिया हुआ धन वापिस नहीं आता है। मंगल को ऋण चुकाना अच्छा होता है। बुध को ऋण देना उचित नहीं होता है। स्वाति पनुर्वसु रोहिणी विशाखा श्रवण धनिष्ठा नक्षत्रों पर ऋण लेना तथा देना शुभ-फलदायक है।

४. **नौकरी तरक्की आदि के लिए निवेदन पत्र देना या अपील करना** :—वारों में मंगलवार एवं शनिवार को छोड़कर तथा तिथियों में चतुर्थी चतुर्दशी नवमी अमावसी मासान्त और

संक्राति की तिथियों को छोड़ कर शेष सब वारें तथा तिथियां ठीक हैं विशेषकर अश्विनी रोहिनी तिष्या चित्र मृगशिर अनुराधा रेवती स्वाति नक्षत्रों पर यह काम करना शुभफलदायक रहता है।

५. हल चलाना :—इस कार्य के लिए चतुर्थी नवमी चतुर्दशी अमावसी मासान्त तथा संक्राति की तिथियां निषेध हैं इसी प्रकार मंगल शनि तथा रवि की वारें भी निषेध हैं अश्विनी, रोहिनी, मृगशिर, पुनर्वसुः तिष्या, अनुराधा स्वाति विशाखा श्रवण धनिष्टा रेवती नक्षत्र शुभ-फलदायक है।

६. फसल काटना :—इस के लिए अश्विनी, मृगशिर, तिष्या चित्रा स्वाति अनुराधा रेवती मूल ज्येष्टा नक्षत्र उत्तम है। वारों में मंगलवार को छोड़कर शेष सब अच्छी हैं। तिथियों में चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी अमावसी तथा सासान्त और संक्राति की तिथियों को छोड़कर सब अच्छी हैं।

७. नया अनाज रखाना :—तिथियों में चतुर्थी तथा नवमी को छोड़कर शेष सब तिथियां ठीक हैं। वारों में सोमवार बुद्धवार, गुरुवार तथा शुक्रवार ठीक हैं। नक्षत्रों में इस कार्य के लिए अश्विनी मृगशिर पुनर्वसु तिष्या चित्रा अनुराधा हस्त धनिष्ठा तथा रेवती नक्षत्र उत्तम हैं।

८. वस्त्र सोना आदि धारण करना :—इस कार्य के अश्विनी, रोहिनी पुनर्वसु चित्रा

स्वाति विषाखा ज्येष्ट एवं रेवती नक्षत्र तथा रविवार बुद्धवार गुरुवार एवं शुक्रवार उत्तम हैं। तिथियों में चतुर्थी नवमी तथा चतुर्दशी को छोड़कर शेष सब ठीक हैं।

§§ जातक मिलाप §§

वर और कन्या की जन्म कुण्डली आदि के मिलान के समय नीचे लिखी बातों को ध्यान में रखिए :

१. नाड़ी दोष २. षष्टाष्टक ३. मंगल का विचार ४. ग्रहबल

जातक मिलाप के लिए वर और कन्या के जन्म नक्षत्र के आधार पर नाडी दोष का परिचय किया जा सकता है, नीचे लिखे चित्रण में तीनों नाडियों का विवरण है :—

१. आघनाडी—अश्विनी	आर्द्रा	पुनंवस्सु	उत्तरत्ता.	हस्त	ज्येष्ठा	मूला	शतभि.	पूर्वभा.	
२. मध्यनाडी—भरणी	मृग	तिष्या	पूर्वंफा.	चित्रा	अनु.	पूर्वाषा.	धनिष्ठ	उत्तराभा.	
३. अनयनाडी—कृतिका	रोहिणी	अश्ले	मघा	स्वाति	विशा.	उत्तराषा.	श्रवण	रेवती	

देखने की विधि :—यदि वर और कन्या दोनों का नक्षत्र आधनाडी में हो तो नाडी दोष है, इसी तरह यदि दोनों का नक्षत्र मध्य नाडी में हो तो नाडी दोष है, ऐसे ही यदि दोनों का नक्षत्र अन्य नाडी में हो।

१. नाडी दोष :—तो भी नाडी दोष रहता है, परन्तु आधनाडी और अन्त्य नाडी उतनी विशेष हानिकारक नहीं होती हैं जितनी कि मध्य नाडी 'ज्योतिष प्रकाश' ज्योतिष्य शास्त्र में कहा है :

"निधनं मध्य जा ऊंचा व दम्पत्यो नैंव पार्श्वयो:"

अर्थात् मध्य नाढी दोष के कारण वर और वधू ज्योति पर टिकते नहीं।

नाड़ी अपवाद :—अर्थात् नाडी दोष कब नहीं होता है, जब—

१ लड़का तथा लड़की का नक्षत्र रोहिणी, रेवती, मृगशिरा, तिष्या, कृत्तिका, उत्तराभा, श्रवण, आद्रा, तथा ज्येष्ठा हो।

२) वर या कन्या की राशि यदि मिथुन, कन्या, धनु, मीन, वृष या तुला हो तो भी नाडी दोष नहीं होता है।

२. षष्टाष्टक :—वर या कन्या की राशि से गिनने पर एक दूसरे की राशि छठी तथा आठवीं हो तो षष्टाष्टक कहलाती है।

१) इसके दो प्रकार हैं—१. शत्रु षष्टाष्टक २. मित्र षष्टाष्टक।

१) शत्रुषष्टाष्टक :—वृष और धनु, कर्कट और कुम्भ, कन्या और मेष, वृश्चिक और मिथुन, मकर और सिंह, मीन और तुला की षष्टाष्टक यह शत्रुषष्टाष्टक होने से हानिकारक है।

२) **मित्र षष्टाष्टक** :—मेष और वृच्छिक, मिथुन और मकर, सिंह और मीन, तुला और वृच्छिक, धनु और कर्क, कुम्भ और कन्या राशि की मित्र षष्टाष्टक होने से दोषा वह नहीं।

३) **मंगल का विचार (भौम दोष)** :—जातक मिलाप में मंगल का विचार रखना आवश्यक है वर और कन्या के जन्म चक्र या राशि चक्र में १, ४, ७; ८ तथा १२ वें भाव में मंगल (भौम) का होना हानिकारक है।

वर और कन्या का भौम दोष कब मिट जाता है—

अ) कन्या की जन्म कुडली या राशि चक्र में कोई भी पाप ग्रह सूर्य, भौम. शनि, राहु, केतु यदि १, ४, ७, ८ और १२वें भाव में पड़ा हो तो कन्या का भौम दोष मिट जाता है, ऐसे ही—

आ) वर के जन्म चक्र या राशि चक्र में सूर्य, भौम, शनि, राहु, केतु कोई ग्रह १, ४, ७, ८ और १२वें भाव में पड़ा हो तो वर का भौम दोष मिट जाता है।

१) यदि वर और कन्या के नवें और बारहवें भाव में शनि हो तो भौम दोष मिट जाता है।

विशेष :—१) यदि वर और कन्या का बलवान् वृहस्पति अथवा शुक्र लग्न अथवा सातव (केन्द्र) भाव में हो तो भौम दोष मिट जाता है।

३) यदि वर और कन्या का भौम ग्रह वक्री, नीच, शत्रु घर में अथवा अस्त हो तो भौम दोष नहीं होता है।

४) **ग्रहबल**—ग्रहबल भी इन्हीं धारणाओं के अन्तर्गत आ जाता है।

नवग्रह रत्न विवरण

शुभ ग्रहों के बल को बढ़ाने तथा अशुभ ग्रहों के बल को कम करने के लिए भिन्न-भिन्न रत्नों के धारण करने की विधि ज्योतिष शास्त्र में लिखी हैं। कौन सा रत्न किस राशि अथवा ग्रह और कहां तथा किस मुहूर्त पर पहनना चाहिए। इसका विवरण निम्नांकित तालिका में दिया जाता है।

रत्न	राशि	ग्रह	पहनने की अंगुली	मुहूर्त वार	नक्षत्र
मोती	×	चन्द्रमा	बायें हाथ की तर्जनी	रविवार गुरुवार	तिष्या
मूंगा	मेष, वृश्चिक	भौम	बायें हाथ की नीचे वाली	मंगलवार	मृगशिरा चित्रा
माणिक्य	कर्क, सिंह	सूर्य	दायें हाथ की अनामिका	रविवार	तिष्या उत्तरषाढ़ा
पन्ना	मिथुन, कन्या	बुध	,,	बुधवार	तिष्या श्रवण
पुखराज	धन, मीन	बृहस्पति	दायें हाथ की तर्जनी व अनामिका	गुरुवार	तिष्या
हीरा	वृष, तुला	शुक्र	दायें हाथ की तर्जनी व मध्यमा	शुक्रवार	,,
नीलम	मकर	शनि	दायें हाथ की मध्यमा	शनिवार	श्रवण चित्रा, स्वाति
गोमेद	कुम्भ	राहु		शुक्रवार	स्वाति
लहसुनिया	×	केतु	,,	बुधवार शुक्रवार	अश्विनी

साढ़सती 'वृहत् कल्याणी' का विचार बृश्चिक, धनु और मकर राशि वालों के लिये: वि. २०४५ ई. १९८८-८९

राशि	समय	नियत समय	स्थिर समय	किस पर	कब आरंभ	फल	उपाय
वृश्चिक	६ बैसाख २०४४	१ वर्ष ८ मास	६ पौष २०४५	पांवों पर	२६पौ. २०३८	कारोबार अच्छा। शरीर अस्वस्थ। स्त्री क्लेश।	भवानी सहस्त्र नाम का पाठ करें। शनिवार के दिन कुत्तों को रोटी डालें तथा अष्टमी का वृत रखें।
	६ पौष २०४५	६ मास २० दिन	२६आषाढ़ २०४६	दक्षिण हस्त	,,	मान अच्छा। भूमि तथा मित्रों से धन लाभ।	
धनु	१६ असूज २०४४	१ वर्ष ४ मास २० दिन	२६ माघ २०४५	हृदय पर	६ पौष २०४१	अपयश, चिन्ता। कार्य में देरी। स्त्री को कष्ट।	इन्द्राक्षी का पाठ हमेशा करें। पीला चावल कुत्तों को डालें।
		१ वर्ष		बाएं	,,	भाग्य में रूकावट।	
	२६ माघ २०४५	१ मास ० दिन	१६ चैत्र २०४६	हाथ पर		सफर से लाभ मिले।	मंगलवार के दिन मीठा भोजन खावें।
मकर	१३ पौष २०४४	६ मास २० दिन	३ श्रावण २०४५	दांयें हाथ	१३पौ. २०४४	धनलाभ, व्यापार में उन्नति मान अच्छा।	संक्रान्ति का वृत रखें और महा गायत्री का दशांश पाठ करें बुधवार के दिन वैष्णव रहें तथा कुत्तों को रोटी डालें।
	३ श्रावण २०४५	३ मास १० दिन	१३ कतक २०४५	पर गुहये	,,	सफर कार्य में बिलम्ब, भाग्य अच्छा, स्त्री से धन का लाभ।	
	१३ कतक २०४५	६ मास २० दिन	३० ज्येष्ठ २०४६	सिर पर	,,	मित्रों से विजय।	

नोट:—साढ़सती ... प्रत्येक के लिये हानिकारक होती है। साढ़सती प्रत्येक व्यक्ति को 30, 59,

शेष अगले पृष्ठ पर

लघु कल्याणी का विचार विक्रमी संवत २०४५ में ढैया 'और' शनि के पाया का विचार १९८८-८९ ईस्वी

राशि	शनि का पाया	फल	राशि	शनि का पाया	फल
मेष	तांबा	धन व्यय, स्त्री चिन्ता।	तुला	तांबा	स्त्री कष्ट, गमन भान सुख।
वृष	सोना	मन चंचल, विरोध, सफर।	वृश्चिक	लोहा	शरीर कष्ट, विरोध।
मिथुन	चांदी	शत्रु भय, स्त्री पीडा, लाभ।	धनु	सोना	मन चंचल, धन लाभ।
कर्कट	लोहा	भय गमन, शरीर कष्ट।	मकर	तांबा	कारोबार अच्छा, उन्नति।
सिंह	तांबा	कारोबार मध्यम, सफर लाभ।	कुम्भ	लोहा	शरीर कष्ट। सफर, धन खर्च।
कन्या	लोहा	शरीर कष्ट, खून का दबाव।	मीन	तांबा	सुख, काम में सुधार, सफर।

—पिछले पृष्ठ का शेष

90 वर्ष के अनन्तत आती है। यदि जन्मकुण्डली में शनि नवांश और बलों से अच्छा हो तथा अष्टवर्ग में भी ठीक हो तो साढ़सती मध्यम फलदायक होती है। साढ़सती का फल प्रायः जायदाद तथा स्वास्थ्य पर बुरा होता है। अतः जिन राशि वालों को साढ़सती हो उन्हें चाहिए कि वह शनिदान एवं छाया दान करें। यदि संभव हो तो तुलदान भी करें। इसके अतिरिक्त प्रति मंगलवार तथा शनिवार के दिन श्री हनुमान जी की पूजा करें।

(गायत्री का विशेष अर्थ चिन्तन)

ओं (परमात्मा) भूः (प्राण स्वरूप) भुवः (दुःख नाशक) स्वः (सुख स्वरूप) तत् (उस) सवितुः (तेजस्वी) वरेण्यं (श्रेष्ठ) भर्गोः (पाप नाशक) देवस्य (दिव्य) धीमहि (धारण करें) धियो (बुद्धि) यो नः (हमारी) प्रचोदयात् (प्रेरित करें)।

अर्थात्—प्राण स्वरूप, दुःखनाशक, सुख स्वरूप, श्रेष्ठ, तेजस्वी, पाप नाशक, देवस्वरूप परमात्मा को इस अन्तरात्मा में धारण करें वह परमात्मा हमारी बुद्धि को सत्मार्ग पर प्रेरित करें।

इस अर्थ के आधार पर गायत्री के अन्तर्गत तीन तथ्य प्रकट होते हैं :—

१—ईश्वर के दिव्य गुणों का चिन्तन, २ ईश्वर को अपने अन्दर धारण करना, ३—सद्बुद्धि की प्रेरणा के लिए प्रार्थना।

गायत्री मन्त्र में सन्निहित उक्त तथ्य में ज्ञान, भक्ति, कर्म, उपासना तीनों विद्यामान हैं। सद्गुणों का चिन्तन ज्ञान योग है। ब्रह्म को धारणा भक्तियोग है। तथा बुद्धि की सात्विकता कर्मयोग है।

गायत्री नाम क्यों :—

"गायतः त्रायते देवि तद् गायत्रीति गद्यसे।
गयः प्राण इति प्रोक्तः तस्य त्राणादपीतिवा॥"

—: गायत्री मन्त्र की विशेषता :—

इस मन्त्र की सबसे बड़ी विशेषता यही है कि वैष्णव, शैव, शाक्त, यांत्रिक, तांत्रिक, सनातनी, आर्य समाजी, प्रकृतिवादी, आत्मवादी—ये सभी इस मन्त्र की सर्वोच्चता तथा उपयोगिता को एकमत से स्वीकार करते हैं।

गायत्री की उपासना से लाभ :—

अ) यह सांसारिक सुखों को प्राप्त कराती है।

आ) इसके द्वारा ब्रह्म-ज्ञान की प्राप्ति का मार्ग खुल जाता है।

इ) साधक में सद्बुद्धि एवं सत् विचारों का उदय होता है।

ई) उपासक श्रद्धा, भक्ति तथा ईश्वर पर पूर्ण आस्था से परिपूर्ण हो जाता है।

उ) गायत्री उपासक की ज्ञान शक्ति तथा जीवनी शक्ति में वृद्धि होती है। आंधियों, व्याधियों तथा दुःखों से मुक्ति प्राप्त होती है।

गायत्री मन्त्र तथा इसकी व्याख्या

गायत्री वेद जननी गायत्री पापनाशिनी ।
गायत्र्यास्तु परं नास्ति दिवि चेह च पावनम् ॥

गायत्रीं का मूल स्रोत :—

ब्रह्म ने जब "एकोहं बहुस्याम" अर्थात् मैं एक हूं अधिक रूपों में हो जाऊं—यह इच्छा की, तब उस इच्छा शक्ति से ब्रह्म, विष्णु तथा शिव ये तीन ब्रह्म मूर्तियां प्रादुर्भूत हुईं । सब से पहले ज्ञान स्वरूप अक्षर ब्रह्म 'प्रणव' का आविर्भाव हुआ । तदनन्तर व्याहृतियों और गायत्री की उत्पत्ति हुई । गायत्री से वेदों की रचना हुई । फिर भिन्न-भिन्न प्रकार की विद्यायें शास्त्र, स्मृति और पुराणों का आविर्भाव हुआ । फिर चराचर जगत के कार्य जात आरम्भ हुए ।

वेदों में, उपनिषदों में, धर्म शास्त्र और श्रौत सूत्र आदि स्मृतियों, पुराणों ग्रन्थों में गायत्री मन्त्र का उल्लेख हुआ है । 'गायत्री' शब्द के शास्त्रकारों ने भिन्न भिन्न अर्थ किये हैं ।

'गवान् प्राणान् त्रायते सा गायत्री'

अर्थात् जो गये (प्राणों) की रक्षा करती है, वह गायत्री है ।

अथवा

"प्राण गया इति प्रोक्ता: त्रायते तान् अथापि वा" अर्थ समान है ।

बृहदारण्यक में लिखा है :—

"तत् यत् प्राणं त्रायते तस्मात् गायत्री" जिस से प्राणों की रक्षा होती है वह 'गायत्री' है ।

याज्ञवल्क्य ने कहा है :

"गायत्री प्रोच्येते तस्मात् गायन्तां त्रायते तत:" अर्थ उपरोक्त ही है ।

गायत्री की विशेषता

गायत्री को गुरु मन्त्र कहा गया है । प्राचीन काल में बालक जब गुरुकुल में विद्या पढ़ने जाते थे तो उन्हे वेदारम्भ संस्कार के समय गुरु मन्त्र के रूप में गायत्री की ही दीक्षा दी जाती थी । वेद का आरम्भ वेदमाता गायत्री से ही होता है ।

ओ३म्

राशियों के स्वभाव की रूपरेखा

मेष जिस मनुष्य का जन्म मेष राशि प्रधान समय में हुआ हो वह बहुत साहसी होता है, आत्म विश्वासी होता है स्वभाव से तेज़ और हठी होता है. कठिन समयों पर वह घबराता नहीं, किसी भी स्थिति से वह पीछे नहीं हटता। विज्ञान और टेकनीकी मामलों में अधिक दिलचस्पी लेता है बात बात-बात पर तर्क वितर्क करने का स्वभाव रखता है। किसी भी समस्या का निर्णय करते समय जल्द बाज़ी से काम लेता है।

वृष वृष राशि वाला मनुष्य अपने सिद्धान्त और निश्चय पर दृढ़ रहने वाला होता है। जीवन भर आत्म निर्भर रहता है वह साहस पूर्वक सभी परिस्थितयों का सामना करता है। राजनैतिक और सामाजिक कामों में दिलचस्पी रखता है, कठिन परिश्रम करके उन्नति के शिखर पर पहुंचने की भावना अपने जीवन का लक्ष्य बना पाता है। विपरीत परिस्थितयों को अनुकूल बनाने में समर्थ

होता है। आपका अन्तिम जीवन आध्यात्मिक होता है। इसके अतिरिक्त वृष राशि वाला अतिथि पूजक सफाई पसन्द, आत्म विश्वासी और मान का भखा होता है।

मिथुन

इस राशि का व्यक्ति गृहस्थ जीवन में सुखी होता है। यह हंस मुख होता है। पुरषार्थ की दृष्टि से ऐसा व्यक्ति सबल होता है। इसका शरीर सुन्दर पुष्ट तथा आकर्षक होता हैं। मिथुन राशि का स्वभाविक गुण दूसरों को प्रभावित करना है। आप की दशा एक जैसी नहीं रहती। धार्मिक क्षेत्र में इसका उतार चढ़ाव आवश्य रहता है। यात्राएं आपके जीवन का अंग होती हैं। रचनात्मक कार्यों में अधिक दिलचस्पी रखता है।

कर्क

इस राशि से प्रभावित मनुष्य अत्यन्त भावुक स्वभाव के होते हैं। इस राशि वाले
का जीवन सुखी धनवान चरित्रवान धार्मिक तथा मातृ पितृ भक्त होता है। साधु-सन्तों की सेवा
करने वाला होता है। अपने मान और यश के लिए काफी धन खर्च करता है पर अन्त उसे उत्साह में
ढीलापन आता है, आपकी वाणी में कोमलता मन में सहनशीलता और शरीर में स्फूर्ति रहती है।
आप व्यवहार कुशल भी होते हैं, कर्क राशि वालों को मित्र और रिश्तेदार हर समय घेरे रहते हैं।
आप अपने मन को बात ज्ञदयक किसी से प्रकट नहीं करते। कभी-कभी आपको अपनी धर्म पत्नी से

मतभेद पैदा अवश्य होगा पर निपटारा भी जल्दी होगा। मस्तिष्क कार्यों के करने में आपको बहुत आनन्द आता है। इसलिए बुद्धि तीव्र होती है और विवेक जागृत होता है।

सिंह सिंह राशि में उत्पन्न हुए मनुष्य अधिक उग्र स्वभाव के होते हैं और वह बात–बात पर बिगड़ते हैं और आसानी से काबू में नहीं आते। उनका क्रोधी स्वभाव कभी-कभी बहुत ही आतंक फैला देता है जबकि दूसरी ओर सिंह राशि वाला उद्योगी धनवान और उदार चित्त का होता है। व्यापार की अपेक्षा नौकरी में ज्यादा दिलचस्पी रखता है खून की खराबी बवासीर आदि व्याधियों से ग्रस्त रहता है। समाज में अच्छी पदवी पाने की इच्छा होने पर भी असफल रहता है। एक बार उसके मन में कोई बात बैठ जाये तो सहज से निकल नहीं पाती। सिंह राशि वाला अनुशासन प्रिय होता है। जीवन सम्बन्धी संघर्ष दृढ़ता से निभाता है। परोपकार की भावना उसमें जाग्रत रहती है। ऐसा व्यक्ति बुद्धि जीवी भी होता है। बुद्धि विवेक लोक प्रियता प्राप्त करने का सौभाग्य भी सिंह राशि वाले को उपलब्ध रहता है।

कन्या कन्या राशि वाला भाग्य शाली सर्वतोमुखी-प्रतिभावान उत्साही होते हुए भी कठोर हृदय वाला होता है। किसी भी उलझन को बुद्धिमत्ता से सुलझाने की क्षमता रखता है। कन्या

राशि वाला राजनीतिज्ञ होता है। वह किसी को संकट में पड़ा देखकर उसकी सहायता के लिए व्याकुल रहता है। बीच-बीच में शान्त प्रिय बनकर लड़ाई झगड़ों और मुकदिमाबाज़ी से घृणा रखने वाला होता है दूसरे के मनोभाव को जानने की कला में निपुन होता है। धर्म के कामों में अस्थिर बुधि अथवा तर्क वितर्क करने वाला होता है। सैर सपाटा अतिथि सेवा घूमना फिरना पार्टियों में धन का खर्च करना आपके जीवन का स्वभाव होता है। सामाजिक कार्यों में काफी लगाव रखता है।

तुला

तुला राशि वाला गम्भीर स्वभाव का होता है। आत्मविश्वासी और हर काम को पूरी जिम्मेवारी से निभाने वाला होता है। सदा खरा व्यवहार पसन्द करता है। लोभी नहीं होता है। हंसमुख होना आपका जन्म जात गुण है। धार्मिक या सामाजिक सम्मेलनों में भाग लेना आपके जीवन का लक्ष्य होता है। दूसरों को शीघ्र मित्र बनाता है। संकट में धीर्यता से काम लेता है। रचनात्मक कार्यों में आपको बचपन से ही लगन होती है। आप प्रारबन्ध पर अधिक भरोसा नहीं रखते हैं, अपित्तु कर्म तथा परिश्रम के आधार पर उन्नति करना जानते हैं। आप सामाजिक और धार्मिक संस्थाओं को किसी भी प्रकार की सहायता देने में परम आनन्द प्राप्त करते हैं। यह वर्णन आपको जीवन के अन्तिम समय तक करती रहती है।

समय सदा चिन्ता में व्यतीत होता है। यश मान और भतिष्टा की इच्छा आप में पाई जाती है। आप ईर्षालु होने के अतिरिक्त दयालु भी होते हैं। आपका स्वास्थ्य प्रायः ढीला रहता है। दुखियों और गरीबों की सेवा और सहायता करने में आप पीछे नहीं रहते। आप औरों की अपेक्षा अपना जीवन लक्ष्य बनाने में बुद्धि से काम लेते हैं परन्तु मामूली सी असफलता देखने पर हतोत्साहित होते हैं।

मीन इस राशि में उत्पन्न हुआ मनुष्य उदार चित का होता है। स्वयं आर्थिक कष्ट सहते हुए भी किसी को संकट में पड़ा देखकर धन की सहायता देना आपका स्वभाविक गुण है। आपकी बोल चाल मधुर होती है समाज में प्रतिष्ठा पाने में और अपना चरित्र बनाये रखने में आप चौकस रहते हैं। आप सचाई पर विश्वास रखते हैं सामाजिक कार्य और अतिथि सेवा आपका प्रथम कर्त्तव्य है। आप वहमी स्वभाव के होते हैं। आप अपने भविष्य का ध्यान अवश्य रखते हैं। आप प्रायः किसी न किसी शरीरक रोग के घिरे रहते हैं।

मुद्रक : भारतीय इलैक्ट्रिक प्रैस
4-शिवाजी पार्क, जालन्धर
दूरभाष : 74562

गण्डमूल नक्षत्र विचार

अश्विनी, मघा तथा मूल नक्षत्र की आरम्भ की क्रम से 3, 4 तथा 9 घटी तथा रेवती, आश्लेषा तथा ज्येष्ठा की क्रमशः अन्त की 4, 11 तथा 6 घटी में कोई बालक उत्पन्न हो तो माता-पिता तथा परिवार के लिए हानिकारक होता है। जन्म से 12वें या 27वें दिन मूल शान्ति करनी चाहिए। शान्ति से पहले पिता लड़के का मुख न देखे। उपर्युक्त सभी नक्षत्रों में उत्पन्न बालक की मूल शान्ति करनी चाहिए। सुवर्ण तथा गोदान भी करना चाहिए।

अश्विनी चरण-फल		आश्लेषा चरण-फल	
चरण	फल	चरण	फल
1	पिता को भय	1	शांति से शुभ
2	सुख ऐश्वर्य	2	धन-नाश
3	मन्त्री पद	3	मातृ-नाश
4	राज सम्मान	4	पितृ-नाश

मघा चरण फल		ज्येष्ठा चरण-फल	
चरण	फल	चरण	फल
1	माता को नेष्ट	1	बड़े भ्राता को कष्ट
2	पितृ को भय	2	छोटे भ्राता को नेष्ट
3	सुख	3	मातृ-नाश
4	धन विद्या सुख	4	स्वयं नाश

मूल पाद फल

मूल चरण फल		रेवती चरण फल	
चरण	फल	चरण	फल
1	पितृ-नाश	1	राज सम्मान-सुख
2	मातृ-नाश	2	मंत्रित्व प्राप्ति
3	यश-नाश	3	धन सुख प्राप्ति
4	शान्ति से सुख	4	अनेक कष्ट

सर्व कार्य-सिद्धि के लिए होरा मुहूर्त

सर्व कार्य-सिद्धि के लिए होरा-मुहूर्त पूर्ण फलदायक और अचूक माने गए हैं। सात ग्रहों के सात होरा हैं जो दिन-रात के २४ घण्टों में घूमकर मनुष्य को कार्य-सिद्धि के लिए अशुभ समय में भी सुसमय सुअवसर प्रदान करते हैं। सूर्य का होरा राज-सेवा के लिए उत्तम है; प्रवास के लिए शुक्र का होरा; ज्ञानार्जन के लिए बुध का होरा; सर्वकार्य-सिद्धि के लिए चन्द्रमा का होरा; द्रव्य-संग्रह के लिए शनि का, विवाह के लिए गुरु का तथा युद्ध कलह और विवाद के लिए मंगल का होरा उत्तम होता है। प्रत्येक होरा १ घण्टे का होता है। जिस दिन जो 'वार' होता है उस वार के (सूर्योदय के समय) १ घण्टा तक उसी वार का होरा रहता है। उसके बाद १ घन्टे का दूसरा होरा उस वार से छठे वार का होता है। इसी प्रकार दूसरे होरे के वार से छठे वार का होरा तीसरे घंटे तक रहता है। इस क्रम से २४ घंटे में २४ होरा बीतने पर अगले वार के सूर्योदय-समय उसी (अगले) वार का होरा आ जाता है। जिस कार्य की सिद्धि के लिए ऊपर जो होरा श्रेष्ठ लिख आये हैं, किसी भी दिन उस होरा के १ घंटे-मुहूर्त में वह कार्य करेंगे तो सफलता आपके हाथ रहेगी। प्रत्येक वार के २४ घण्टों का होरा चक्र नीचे भी दिया जा रहा है। उदाहरण के लिए मान लीजिए, आज गुरुवार है और आज ही आपको कहीं प्रवास करना (जाना) है। ऊपर प्रवास के लिए शुक्र का होरा श्रेष्ठ लिख आये हैं; अतः मालूम करना है कि आज गुरुवार के दिन शुक्र का होरा किस-किस समय रहेगा। चक्र में गुरुवार के सामने खाने में देखा तो चौथे, ग्यारहवें घण्टे में शुक्र का होरा मिला।

वार	हो. १	हो. २	हो. ३	हो. ४	हो. ५	हो. ६	हो. ७	हो. ८	हो. ९	हो. १०	हो. ११	हो. १२	हो. १३	हो. १४	हो. १५	हो. १६	हो. १७	हो. १८	हो. १९	हो. २०	हो. २१	हो. २२	हो. २३	हो. २४
र.	र	शु	बु	च	श	गु	मं	र	शु	बु	चं	श	गु	मं	र	शु	बु	चं	श	गु	मं	र	शु	बु
चं.	चं	श	गु	मं	र	शु	बु	चं	श	गु	मं	र	शु	बु	चं	श	गु	मं	र	शु	बु	चं	श	गु
मं.	मं	र	श	बु	चं	श	गु	मं	र	शु	बु	चं	श	गु	मं	र	शु	बु	चं	श	गु	मं	र	शु
बु.	बु	चं	श	गु	मं	र	शु	बु	च	श	गु	मं	र	शु	बु	च	श	गु	मं	र	शु	बु	चं	श
गु.	गु	मं	र	शु	बु	चं	श	गु	मं	र	शु	बु	चं	श	गु	मं	र	शु	बु	चं	श	गु	मं	र
शु	श	बु	चं	श	गु	मं	र	शु	बु	चं	श	गु	मं	चं	शु	बु	चं	श	गु	मं	र	शु	बु	चं
श	श	गु	मं	र	शु	बु	चं	श	गु	मं	र	शु	बु	र	श	गु	मं	र	शु	बु	चं	श	गु	मं

बिना सारणी के किसी वार को अभीष्ट होरा निकालने का नियम :

किसी भी वार का प्रथम होरा वारेश (उसी वार) से प्रारम्भ होता है। उस वार से विपरीत क्रम से वारों को एक-एक के अन्तर से गिनें। जैसे, बुधवार को प्रथम होरा बुध का, तत्पश्चात् विपरीत क्रम से मंगल को छोड़ कर सोम (चन्द्र) का होरा होगा एवं रवि को छोड़ कर शनि का होरा होगा। इसी क्रम से आगे २१ होरा उस दिन व्यतीत होंगे।

श्राद्ध संकल्प

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम् । प्रसन्न वदन ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तथे । अभिप्रेतार्थं सिद्धयर्थं पूजितो यः सुरैरपि सर्वविघ्नच्छिदे तस्मै श्री गणाधिपतये नमः ॥

गुरुः ब्रह्मा गुरुः विष्णुः गुरुः साक्षात् महेश्वरः
गुरुः एव जगत् सर्वं तस्मै श्री गरवेनमः ॥
गुरवेनमः, परमगुरवे नमः आदि सिद्धिभ्योनमः

(अपने पैरों ओर मुंह को जल से छिड़कते हुए पढ़ें)

तीर्थे स्नेयं तीर्थमेव समानानां भवति मानः शंस्योः अररुषोः धूर्तिः प्राणङ् मर्त्यस्य रक्षाणो ब्राह्मणस्पते ॥

(पवित्र पहनते हुए पढ़ें)

वसोः पवित्रमसि शतधारं वसूनां पवित्रमसि सहस्रधारं अयक्ष्मा वः प्रजया संसृजामि रायस्पोषेण बहुला भवन्तीः ।

(अपने आप को तिलक और फूल लगाते हुए पढ़ें)

परमात्मने पुरुषोत्तमाय पंचभूतात्, मकाय विश्वात्मने मन्त्रनाथाय आत्मने नारायणाय आधारशक्त्यै" समालबन्धं गन्धोनमः अर्घोनमः पुष्पंनमः

(दीप को तिलक और फूल लगाते हुए पढ़ें)

स्वप्रकाशो महादीपः सर्ववस्तुतिमिरापहः ।
प्रसीद मम गोविन्द दीपोयं प्रतिकल्पितः ॥

(धूप को तिलक और फूल लगाते हुए पढ़ें)

वनस्पतिरसोदिव्यो गन्धाढ्यो गन्धदत्तमः ।
आधारः सर्व देवानां धूपोयं परिकल्पितः ॥

(सूरज भगवान का ध्यान करते हुए उसकी तरफ या निर्माल्य में तिलक और फूल लगाते हुए पढ़ें)

नमोधर्म निधानाय नमः स्वकृतसाक्षिणे ।
नमः प्रत्यक्षदेवाय भास्कराय नमो नमः ॥

(किसी पात्र से निर्माल्य में जल डालते हुए पढ़ें)

यत्रास्ति माता न पिता न बन्धुः भ्रातापि नो यत्र सुहृत जनः च । न ज्ञायते यत्र दिनं न रात्रिः तत्रात्मदीपं शरणं प्रपद्ये ॥ आत्मने नारायणाय आधार

शक्तुयै धूपदीपसंकल्पात् सिद्धिरस्तु दीपोनमः धूपोनमः ॥

ओं तत् सत् ब्रह्म अद्यतावत् तिथौ अद्य......मासस्य ......पक्षस्य, तिथौ......,......वासरान्वितायां सर्वं देवाः सन्तोषणार्थं धूपदीपसंकल्पात् सिद्धिरस्तु दीपोनमः ॥

नमः पितृभ्यः प्रेतेभ्यो, नमोधर्माय विष्णवे ।
नमो यमाय रुद्राय, कान्तारपतये नमः ॥

ओं तत् सत् ब्रह्म अद्य तावत् तिथौ अद्य......मासस्य ...पक्षस्य तिथौ...,...वासरान्वितायाम् (नाम ले) पित्रे, पितामहाय, प्रपितामहाय, मात्रे, पितामह् यै, प्रपितामह् यै, मातामहाय प्रमातामहाय वृद्ध प्रामतामह् यै, (और भी कोई हो सब का नाम लेते रहे) समस्त माता पितृभ्यो द्वादश देवताभ्यः, पितृभ्यः नित्यकर्म निमित्ते दीपः स्वधाः धूपः स्वधा ॥

इस प्रकार तर्पण करके अब जिस के निमित्त संकल्प करना हो,चाहे वार्षिक श्राद्ध हो या कन्यार्क गत केवल उसी का नाम गोत्र समेत इस प्रकार लेते हुए संकल्प का जल दान वस्तु पर डालते रहें और पढ़ते रहें :—

ओं तत् सत् ब्रह्म अद्य तावत् तिथौ अद्य...मासस्य ......पक्षस्य तिथौ......वासरान्वितायां पितुः...... जिसका श्राद्ध हो)... तस्य सांवत्सरिके श्राद्धे (या कन्यार्कगत के अपरपक्षके श्राद्धे) परलोके वैकुण्ठ पदवी प्राप्त्यर्थं आत्मनः पुण्यवृद्धयर्थं इदं अन्नं सवस्त्रफलमूलदक्षिणादिसहितं सर्वोपस्कारयुतं संकल्पयामि संकल्पयामि संकल्पयामि ।

(फिर दायें बाजू में यज्ञोपवीत रखकर तर्पण करें)

नमो ब्रह्मणे नमो अस्तु अग्नये नमः पृथिव्यै नमः औषधिभ्य नमोवाचे नमो वाचस्पतये नमो विष्णवे बृहते कृणोमि । इति एतासामेव देवतानां सार्ष्टिं सायुज्यं सलोकतां सामर्थ्यं आप्नोति यः एवं विद्वान् स्वाध्यायं अधीते । ओ३म् शान्तिः ३॥

(इस प्रकार तर्पण करके तर्पण के जल के छींटे मुंह पर डाल कर सूरज भगवान को नमस्कार करें)

।अथ नैवेद्य मन्त्राः ।

(दोनों हाथों से नैवेद्य ग्रहण करते हुए पढ़ें ।)

अमृतेनमुद्रयाऽमृतीकृत्य अमृतमस्तु अमृतायतां नैवेद्यं सावित्राणि सावित्रस्य देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्यामददे, महागणपतये कुमाराय श्रियै सरस्वत्यै लक्ष्म्यै विश्वकर्मणे द्वारदेवताभ्यः प्रजापतये ब्रह्मणे कलशदेवताभ्यः ब्रह्मविष्णुमहेश्वरदेवताभ्यः वास्तुदेवेश्वराय पशुपतये नारायणाय दुर्गायै त्र्यम्बकाय वरुणाय तत्पुरुषाय अग्निष्वात्तादिभ्यः पितृगणदेवताभ्यः ॐ भगवते वासुदेवाय लक्ष्मीसहिताय नारायण, जयाय विजयाय पार्वतीसहिताय परमेश्वराय विनायकाय वल्लभासहिताय श्रीगणेशाय क्ली क्राँ कुमाराय भगवते ह्रां ह्रौंसः सूर्याय प्रभासहिताय आदित्याय भगवत्यै अमायै कामायै चर्वङ्ग्यै टंकधारिण्यै तारायै पार्वत्यै यक्षिण्यै श्रीशारिकाभगवत्यै श्रीशारदाभगवत्यै श्रीमहाराज्ञीभगवत्यै श्रीज्वालाभगवत्यै श्रीडाभगवत्यै वैखरीभगवत्यै गंगाभगवत्यै यमुनाभगवत्यै कालिकाभगवत्यै सिद्धलक्ष्म्यै महालक्ष्म्यै महात्रिपुरसुन्दर्यै सहस्रनाम्न्यै देव्यै भवान्यै अभयकरीदेव्यै क्षेमंकरीभगवत्यै सर्वशत्रुघातिन्यै इहराष्ट्राधिपतये अमुकभैरवाय इन्द्रादिभ्यो दशलोकपालेभ्यः आदित्यादिभ्यो नवग्रहदेवताभ्यः ब्रह्मध्रुवाभ्यां अनन्तासनाभ्यां ब्रह्मणे कूर्माय ध्रुवाय हरये लक्ष्म्यै कमलायै शिक्षादिभ्यः पञ्चचत्वारिंशद्वास्तोष्पतियागदेवताभ्य ब्रह्मादिभ्यः मातृभ्यः गौर्यादिभ्यः मातृभ्यः, ललितादिभ्यः मातृभ्य दुर्गाक्षेत्रगणेश्वरदेवताभ्यः राकादेवताभ्यः त्रिकादेमताभ्यः सिनीवालीदेवताभ्यः यामीदेवताभ्यः रौद्रीदेवताभ्यः वारुणीदेवताभ्यः बार्हस्पत्यदेवताभ्यः । ॐ भूर्देवताभ्यः ॐभुवो देवताभ्यः ॐस्वदेताभ्यः ॐ भूर्भुवस्वर्देवताभ्यः ब्रह्माण्डब्रह्माण्डयागदेवताभ्यः महागायत्र्यै सावित्र्यै सरस्वत्यै हेरकादिभ्यः वटुकादिभ्य उत्पन्नममृतं दिव्यं प्राक्क्षीरोदधिमन्थनात् अन्नममृतरूपेण नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम (इष्ट देवता का ध्यान करते हुए पढ़ें) ओं तत्सद् ब्रह्म पद्मतीवाह्न तिथौ अद्य अमुक मासस्य-अमुकपक्षस्य, तिथौ अमुकायां, आत्मनो वाङ्मनः कायोपार्जितपापनिवारणार्थं इदमन्नं नैवेद्यं निवेदयामि नमः । (यह मन्त्र पढ़ें) या काचिद् योगिनी रौद्रा सौम्या घोरतरा परा, खेचरी भूचरी रामा तुष्टा भवन्तु मे सदा, आकाशमातृभ्यः अन्नं नमः समालब्धं गन्धो नमः अर्घो नमः पुष्पं नमः ।

काश्मीर के महात्माओं के यज्ञ, श्राद्ध तथा जयन्ती

१. चण्डीगाम महात्मा यज्ञ— चैत्र श. प.—षष्ठी
२. स्वामी आत्मा राम गोसानी गुण्ड कार्तिक शु. पक्ष—एकादशी
३. श्री अशोकानन्द नाग दण्डी—पोष शु. प.—प्र.
४. श्री बोन काक श्रा. बैशाख कृ. प. - चु.
५. स्वामी कैलाश कौल बाना मुहल्ला—पौ. व. अमावस
६. स्वामी गोपी नाथ (बव) ज्येष्ट शु.—द्वि.
७. स्वामी नन्द लाल (बव) असूज शु. प.—त्रयो.
८. स्वामी केशव नाथ वडीपोरा—चैत्र. द्वि नवमी
९. स्वामी विद्याधर यज्ञ आषाड़ शु. प. त्रि
१०. स्वामी लाल जी जयन्ती श्रावण शु. प. तृ.
११. स्वामी प्रसाद कौल (ग्रटवब) सावन वदे बाह
१२. श्रीमती सती ददी असूज शु. बाह
१३. स्वामी राम शैव आश्रम, फतेहकदल माघ द्वितीया चौदाह
१४. स्वामी गाशा काक (गौतम नाथ) चैत्र व. मावस
१५. ज्यो. केशव भट्ट पितृ पक्ष द्वि.
१६. श्री हरभट्ट शास्त्री आषाढ़ शु दि चौदाह
१७. श्री गोबिन्द कौल यज्ञ. भाद्र कृ. पक्ष चौदाह
१८. श्री शंकर साहिब (भट्ट गुण्ड) असूज कृ. प. प्र.
१९. स्वामी हरे कृष्ण यज्ञ असूज शु. प. द्वि.
२०. स्वामी हरे कृष्ण जयन्ती कार्तिक शु. प. काह
२१. स्वामी सर्वानन्द यज्ञ मार्ग. कृ. प. त्रि.
२२. स्वामी जीवन साहिब यज्ञ मार्ग शु. प. द्वि.
२३. स्वामी विद्याधर जयन्ती मार्ग शु. प. तृ.
२४. स्वामी नन्दलाल श्राद्ध माघ शु. प, तृ.
२५. स्वामी नन्दलाल जयन्ती फा. शु. अष्टमी
२६. स्वामी कश काक. चैत्र कृ प. नवमी
२७. स्वामी हरि काक जी (कुपवारा) चै. कृ. प. सप्तमी
२८. स्वामी हर काक जी जन्मदिन पितृ पक्ष त्रयोदशी
२९. [illegible] जन्मदिन, आषाड़ शु. षष्ठी।

पृथ्वी व ग्रहों की वैज्ञानिक जानकारी

आकाश में चमकते हुए तारे सितारे हमारे लिए आश्चर्य का विषय हैं। आकाश में छाए हुए तारे दो प्रकार के हैं एक वे हैं जो अपने स्थान पर स्थिर रहते हैं तथा टिमटिमाते रहते है। इस प्रकार के तारों को नक्षत्र कहते हैं यह संख्या में २८ हैं। दूसरे वे हैं जो चलते हैं इन के चलने में एक निश्चित चाल है तथा एक निश्चित मार्ग है। यह सख्या में ९ हैं। इन्हें ग्रह कहते है। सभी ग्रह सूर्य के चारों ओर परिक्रमा लगाते रहते हैं। हमारी पृथ्वी भी उन्हीं ग्रहों में से एक है। सारे ग्रह अपनी धुरी के उपर भी परिभ्रमण करते रहते हैं। कुछ तारे ऐसे हैं जो इन ग्रहों के चारों ओर चक्कर लगा रहे हैं। इन्हें उपग्रह कहते हैं। आकाश में छाए असंख्य तारों में से सूर्य ग्रहों तथा उपग्रहों को सौर मण्डल कहते हैं। ज्योतिष शास्त्र के निर्माताओं जैसे— आर्यभट्ट, ब्रह्मगुप्त वसुगुप्त, वराहमिहरादि आचार्यों ने जो कुछ भी लिखा है उस का विवरण इस प्रकार से है।

ग्रहों के बारे में उपयोगी जानकारी :—

ग्रह	सूर्य से दूरी कि० मीटर	ग्रह का व्यास कि० मी०	परिभ्रमण का समय दिन	सूर्य की परिक्रमा का समय दिन	उपग्रह
वुध	५.८ करोड़	४.९ हजार	८८ दिन	८८	—
शुक्र	१०.८ ,,	१२.४ ,,		२२५	—
पृथ्वी	१५.० ,,	१२.८ ,,	२३.९ घंटे	३६५.२५	१
मंगल	२२.८ ,,	६.८ ,,	२४.६ दिन	६८७.२८	२
गुरु	७७.८ ,,	१४२.७ ,,	९.३ ,,	११.९ वर्ष	१२
शनि	१३८.२ ,,	११५.१ ,,	१०.४ ,,	२९.५ वर्ष	९
यूरेनस	२८६.८ ,,	५१.५ ,,	१०.७ ,,	८४.०० ,,	५
नेपचून	४४९.३ ,,	४४.६ ,,	१५.८ ,,	१६४.८ ,,	२
प्लुटो	५९५.५ ,,	५.९		[illegible] ,,	×

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्यधीमहि धियो यो नः प्रचोदयात

वाल्मीकी रामायण 24 हजार श्लोकों का महान् ग्रन्थ है, उसमें वाल्मीकी जी ने एक हजार श्लोकों में गायत्री मन्त्र के एक एक अक्षर की व्याख्या की है, ऐसे ही भागवत के 12 स्कन्दों में भी हर स्कन्द में गायत्री मन्त्र के दो दो अक्षरों की व्याख्या है, इसी से ज्ञात होता है कि गायत्री मन्त्र का अर्थ कितना गम्भीर और विशाल होगा, तो भी मैं यहां एक दो पंक्तियों में संक्षेप रूप से अर्थ लिखने का साहस करूंगा।

अर्थ :—मैं उस शक्ति का चिन्तन करता हूं जो शक्ति ओ३म्=ब्रह्मरूप है। भूर्भुवः स्वः=जो शक्ति तीनों लोकों में व्याप्त है। तत्=जिसको वेद "तत्" नाम से पुकारते हैं। सविता=जो शक्ति इस सृष्टि को बनाती है, पालन करती है, नाश करती है। वरेण्यम्=जो वरण करने के योग्य है। भर्गः=जो तेजो रूप है। देवः=जो द्योतनशील है या जो शक्ति ऐश्वर्य देने वाली है, ऐसी ही उस महान् शक्ति का, धीमहि=चिन्तन करता हूं कि वह शक्ति, धियः=मेरी बुद्धि को, प्रचोदयात्=सत् कर्मों में लगाए।

ब्राह्मी विद्या

गुरु अपने शिष्य को ब्रह्म सम्बन्धित जो करता है

ॐ ॐ ॐ त्रिगुणपुरुष क्षेत्रचर मोहं भिन्धि रजस्तमसी भिन्धि प्राकतपाशजालं सावरणं परिहर सत्वं ग्रहणपुरुषोत्तमोसि सोमसूर्यनल प्रवरपरमधामन् ब्रह्मविष्णुमहेश्वरस्वरूप सृष्टिस्थिति संहारकारक भ्रूमध्यनिलय तेजोसि धामासि-अमृतात्मन् ॐ तत्सत् हंसः शुचिषत् वसुरन्तरिक्षसत् होता वेदिषदतिथिर्दुरोणसत्। नृषत्-वरसदृतसद्व्योमसदब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतं परब्रह्म स्वरूप सर्वगत सर्वशक्ते सर्वेश्वर सर्वेन्द्रियप्रत्यक्षं कुरु कुरु परमं पदं परामर्शय परमार्गं ब्रह्म द्वारं सर कुमार्गं जहि षट्-कोशिकं शरीरं त्यज शुद्धोसि बुद्धोसि विमलोसि क्षमस्व स्वपदमास्वादय-आस्वादय स्वाहा।

मुखप्रक्षालनविधिः—शौच आदि से निवृत होकर बायां पैर धोते हुए पढ़ें "नमोस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये सहस्रपादाक्षि-शिरोरुबाहवे। सहस्र-नाम्ने पुरुषाय शाश्वते, सहस्रकोटी-युगधारिणे नमः ॥ दायां पैर धोते हुए पढ़ें:— नमः कमल-नाभाय-नमस्ते जलशायिने। नमस्ते केशवानन्त-वासुदेव नमोस्तुते ॥ मुख धोते हुए पढ़ें:—गङ्गा, प्रयाग, गयनैमिष-पुष्करादि-तीर्थानि यानि भुविसन्ति-हरिप्रसादात्, आयान्तु तानि करपत्रपुटे मदीये प्रक्षालयन्तु वदनस्य निशाकलङ्कम्। तीर्थे स्नेयं तीर्थमेव समानानां भवति मा नः शंस्यो अररुषो धूर्तिः प्राणङ् मर्त्यस्य रक्षाणो ब्रह्मणस्पते। मुख धोकर यज्ञोपवीत धोते हुये तीन बार पढ़ें: "ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्" यज्ञोपवीत गले में फिर से धारण करते हुये पढ़ें:—यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात्-आयुष्यम्-अग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं, यज्ञोपवीतं बलम्-अस्तु तेजः। यज्ञोपवीतम्-असि, यज्ञस्यत्वा-उपवीतेन-उपनह्यामि ॥ मुखप्रक्षालन करके स्नान कीजिए, हिन्दू जीवन का आरम्भ स्नान से ही होता है और अन्त भी स्नान से ही।

* नित्यप्रार्थनाविधि *

पूर्व दिशा की ओर मुख करके धूपदीप जला कर शुद्ध आसन पर पद्मासन से बैठ कर आदिदेवभगवान् गणेश का ध्यान करके पढ़ें:—शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्, प्रसन्नवदनं ध्याये सर्वविघ्नोपशान्तये। अभिप्रीतार्थसिद्धयर्थं पूजितो यः सुरैर्-अपि, सर्वविघ्नच्छिदे तस्मै गणाधिपतये नमः ।१। बिभ्रत्-दक्षिणहस्तपद्म-युगले दन्ताक्षमाले शुभे, वामे मोदक-पूर्णपात्र-परशु नागोपवीती-त्रिदृक्, श्रीमान्-सिंहयुगासनः श्रुतियुगे शंखौ वहन्, मौलिमान् विश्वात्-ईश्वरयुग-ईशभगवान् लम्बोदरः सर्वदः ।२। [illegible] चतुर्भुजाय

हेरम्बायैव-गणेश्वर-नायकाय, सर्वार्थसिद्धि-फलदाय। गणेश्वराय ।३। इत्थं द्वादश-नामानि गणेशस्य महात्मनः । यः पठेत्-तु शिवोक्तानि स लभेत्सिद्धिम्-उत्तमाम् ।४। प्रथमं वक्रतुण्डं तु चैकदन्तं द्वितीयकम्, तृतीयं कृष्णपिङ्ग तु चतुर्थं च कपर्दिनम्, लम्बोदरं पञ्चमं तु षष्ठं विकटम्-एव च सप्तमं विघ्नराजेन्द्रं धूम्रवर्णं तथाष्टमम्, नवमं भालचन्द्रं तु दशमं तु विनायकम्, एकादशं गणपतिं द्वादशं अन्तनायकम्-पठते शृणुते यस्तु गणेश-स्तवम्-उत्तमं, भार्यार्थी लभते भार्यां धनार्थी विपुलं धनम्, पुत्रार्थी लभते पुत्रं मोक्षार्थी परमं पदम्, इच्छाकामं तु कामार्थी धर्मार्थी धर्मम्-अक्षयम् ।५। सुमुखश्चैक-दन्तश्च कपिलो गजकर्णकः । लम्बोदरश्च विकटो विघ्नराजो गणाधिपः । धूम्र-केतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः द्वादशैतानि-नामानि गणेशस्य महात्मनः, यः पठेत्-शृणुयात्-वापि स लभेत्-सिद्धिम्-उत्तमाम् । विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा, संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ।

हेमजासुतं भजे गणेशं ईशनन्दनम्

श्रीगणेशस्तुतिः—एकदन्त-वक्रतुण्डनागिन्द्र सूत्रकम् । रक्तगात्र-धूम्रनेत्र शुक्लवस्त्र-मण्डितम्-कल्पवृक्ष-भक्तरक्ष ! नमोस्तु ते गजाननम् ।१। पाशपाणि-चक्रपाणि-मूषकादि- रोहिणम् । अग्निकोटि, सूर्य-ज्योति, वज्र-कोटिनिर्मलम् । चित्रमाल, भक्तिजाल, भालचन्द्रशोभितम् । कल्पवृक्ष, भक्तरक्ष, नमोस्तु ते गजाननम् ।२। भूतभव्य, हव्यकव्य-भृगुभार्गवार्चितम् । दिव्यवह्नि-कालजाललोकपाल-वन्दितम् । पूर्णब्रह्म-सूर्यवर्ण पूरणं पुरान्तकम् । कल्पवृक्ष, भक्तरक्ष, नमोस्तु ते गजाननम् ।३। विश्ववीर्य, विश्वसूर्य, विश्वकर्म निर्मलम् । विश्वहर्ता, विश्वकर्ता यत्र तत्र पूजितम् । चतुर्मुखं चतुर्भुजं सेवितं चतुर्गणम् । कल्पवृक्ष, भक्तरक्ष, नमोस्तु ते गजाननम् ।४।

(नोट.— यह उपरलिखित गणेशस्तुति व्याकरण के अनुसार यद्यपि अशुद्ध भी है परन्तु काश्मीर में भगतजन प्रायः इस स्तुति

का बड़ी श्रद्धा से पाठ करते हैं, श्रद्धा का यस्त्र विधि अविधि शुद्धि अशुद्धि के लिये रामबाण का काम देता है।

* विष्णुप्रार्थना *

सप्तश्लोकीगीता—ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन्माम्- अनुस्मरन्। यः प्रयाति त्यजन्-देहं स याति परमां गतिम्
।१। स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या जगत्-प्रहृष्यत्यनुरज्यते च, रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति, सर्वे नमस्यन्ति च
सिद्धसंघाः ।२। सर्वतः पाणिपादं तत् सर्वतोऽक्षि-शिरोमुखम्। सर्वतः श्रुतिमल्लोके सर्वम्-आवृत्य तिष्ठति ।३। कविं
पुराणमनुशासितारम्-अणोरणीयान्सम्-अनु-स्मरेत्-यः। सर्वस्य धातारम्-अचिन्त्यरूपम्-आदित्यवर्णं तमसः परस्तात् ।४।
ऊर्ध्वमूलम्-अधः शाखम्-अश्वत्थं प्राहुर्-अव्ययम्। छन्दांसि यस्यपर्णानि यस्तं वेद स वेदवित् ।५। सर्वस्य चाहं हृदि
सन्निविष्टो मत्तः स्मृतिर्ज्ञानम्-अपोहनं च, वेदैश्च सर्वैर्-अहमेव वेद्यो, वेदान्तकृत्-वेदवित्-एव चाहम् ।६। मन्मना
भव मत्-भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु। माम्-एवैष्यसि युक्त्वैवम्-आत्मानं मत्परायणः ।७। ओ३म् तत्-सत्-इति
श्रीमत्-भगवत्-गीता सूपनिषत्सु-ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन-संवादे सप्तश्लोकी गीता समाप्ता।

ध्येयः सदा सवितृमण्डलमध्यवर्ती नारायणः सरसिजासन-सन्निविष्टः। केयूरवान्-कनक-कुण्डलवान्-किरीटी हारी
हिरण्मयवपु-धृतशङ्खचक्रः ।१। नमामि नारायणपाद-पंकजं करोमि नारायणपूजनं सदा। वदामि नारायणनाम निर्मलं,
स्मरामि नारायण-तत्त्वम्-अव्ययम्। करारविन्देन पदारविन्दं मुखारविन्दे विनिवेशयन्तम्। अश्वत्थपत्रस्य पुटे शयानं
बालं मुकुन्दं मनसा स्मरामि ।३। कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुद्ध्यात्मना वा प्रकृतिस्वभावात्, करोमि यत् यत्
सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि ।४। हा कृष्ण मनसि वासिन् क्वासि यादवनन्दन। इमाम्-अवस्थां संप्राप्तम्
अनाथं किं न रक्षसि ।५। या त्वरा द्रौपदीत्राणे या त्वरा गजमोचणे। मयि दीने दीनबन्धो सा त्वरा क्व गता मते।

॥ विष्णुस्तुति ॥

जय नारायण जय पुरुषोत्तम जय वामन कंसारे, उद्धर मामसुरेशविनाशिन् पतितोऽहं संसारे । घोरं हर मम नरकरिपो केशव कल्मषभारं, माम् - अनुकम्पय दीनम् - अनाथं कुरु भवसागरपारम् ।१। जय जय देव जयासुर - सूदन जय केशव जय विष्णो । जय लक्ष्मीमुख-कमलमधुव्रत जय दशकन्धरजिष्णो घोरं हर० ।२। यद्यपि सकलम् - अहं कलयामि हरे नहि किम्-अपि स सत्त्वम् । तद्-अपि न मुञ्चति मामिदम् - अच्युत पुत्रकलत्र ममत्वं घोरं हर० ।३। पुनर् - अपि जननं पुनर् - अपि मरणं पुनर् - अपि गर्भनिवासम् । सोढुम् - अलं पुनर् -अस्मिन्माधव माम्-उद्धर निजदासम् घोरं हर० ।४। त्वं जननी जनकः प्रभुर् -अच्युत त्वं सुहृत् - कुलमित्रम् । त्वं शरणं शरणागतवत्सल त्वं भवजलधि - वहित्रं घोरं हर० ।५। जनक - सुतापति-चरण-परायण शङ्कर-मुनिवरगीतं धारय मनसि कृष्णपुरुषे यद् धारय संसृतिभीतिम् घोरं हर मम नरकरिपो केशव कल्मषभारं-माम्-अनुकम्पय-दीनम्-अनाथं कुरुभव-सागर-पारम् ।६।

अच्युतं केशवं रामनारायणं कृष्णदामोदरं वासुदेवं हरिम् । श्रीधरं माधवं गोपिकावल्लभं जानकीनायकं रामचन्द्रं भजे ।१। सुरजं केशवं सत्यभामाधवं श्रीधरं श्रीपतिंराधिकाराधितम् । इन्दिरामन्दिरं चेतसा सुन्दरं देवकीनन्दनं नन्दजं सम्भजे ।२। अङ्गनाम्-अङ्गनाम्-अन्तरे माधवो, माधवं माधवं चान्तरेणाङ्गना इत्थमा - कल्पिते मण्डले मध्यगः, सञ्जगौ, वेणुना देवकीनन्दनः ।३। बालिका - बालिका बालकीला - लयः संगसन्दर्शित-प्र_सन्ताविभ्रमः । गोपिका गीत-दत्ता-वधानः स्वयं सञ्जगौ वेणुना देवकी - नन्दनः ।४। जयतु जयतु देवो देवकीनन्दनोऽयं जयतु जयतु कृष्णो वृष्णिवंशप्रदीपः । जयतु जयतु मेघश्यामलः कोमलाङ्गो जयतु जयतु पृथ्वीभारनाशो मुकुन्दः ।५।

* शङ्कर प्रार्थना *

भगवान् शंकर का ध्यान करते हुए पढ़ें:—प्रणतोस्मि महादेव प्रपन्नोस्मि सदाशिव निवारय महामृत्युं मृत्युञ्जय नमोऽस्तु ते ।१। मृत्युञ्जय महादेव पाहि मां शरणागतम्, जन्ममृत्यु-जरारोगैः पीडितं भवबन्धनात् ।२। कर्पूर-गौरं करुणावतारं संसार–सारं भुजगेन्द्रहारम् । सदा रमन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानी सहितं नमामि ।३। हर शम्भो महादेव विश्वेशामरवल्लभ । शिव शङ्कर सर्वात्मन् नीलकण्ठ नमोस्तु ते ।४। तव तत्त्वं न जानामि कीदृशोसि महेश्वर यादृशोसि महादेव तादृशाय नमो नमः ।५। आधीनाम्-अगदं दिव्यं व्याधीनां मूलकृन्तनम् । उपद्रवाणां दलनं महादेवम् उपास्महे ।६। आत्मा त्वं गिरिजा मतिः परिजनाः प्राणाः शरीरं गृहं, पूजा ते विषयो - पभोगरचना निद्रा समाधि-स्थितिः । सञ्चारोऽपि परिक्रमः पशुपते स्तोत्राणि सर्वा गिरो, यत् यत् कर्म करोमि देव भगवन् तत् तत् तवाराधनम् ।७। नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय भस्माङ्गरागाय महेश्वराय । देवाधिदेवाय दिगम्बराय तस्मै नकाराय नमः शिवाय ।८। मातङ्गचर्माम्बर-भूषणाय समस्तगीर्वाण-गणार्चिताय त्रैलोक्य–नाथाय पुरान्तकाय तस्मै मकाराय नमः शिवाय ।९। शिवामुखाम्भोजविकासनाय दक्षस्य यज्ञस्य विनाशकाय, चन्द्रार्कवैश्वानरलोचनाय तस्मै शिकाराय नमः शिवाय ।१०। वशिष्ठकुम्भोद्-भवगौतमादि-मुनीन्द्रवन्द्याय गिरीश्वराय, श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय तस्मै वकाराय नमः शिवाय ।११। यज्ञस्वरूपाय जटाधराय पिनाकहस्ताय सनातनाय, नित्याय शुद्धाय निरञ्जनाय तस्मै यकाराय नमः शिवाय ।१२। वपुष्प्रादुर्भावात् अनुमितम्-इदं जन्मनि पुरा । पुरारे नैवाहं क्वचित्-अपि भवन्तं प्रणतवान् । नमन्मुक्तः सम्प्र-त्यतनुर्-अहम्-अग्रे-प्यनतिमान्-महेश क्षन्तव्यं तदिदम्-अपराध-द्वयम्-अपि ।१३। करचरणकृतं वाक् कायजं कर्मजं वा श्रवण-नयनजं वा मानसं वा पराधम् । विदितम्-अविदितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व जय जय करुणाब्धे श्री महादेव शम्भो ।

* देवी प्रार्थना *

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिम्-अशेषजन्तोः, स्वस्थैः स्मृता मतिम्-अतीव शुभां ददासि । दारिद्र्यदुःखभय-हारिणि का त्वत्-अन्या, सर्वोपकार-करणाय दयार्द्र चित्ता ।१। देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद प्रसीद मातर्जगतोखिलस्य, प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं त्वम्-ईश्वरी देवि चराचरस्य ।२। पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि बहवः सन्ति सरलाः, परं तेषां मध्ये विरलतरलोहं तव सुत । मदीयोयं त्यागः समुचित्-इदं नो तव शिवे, कुपुत्रो जायेत क्वचित्-अपि कुमाता न भवति ।३। जगत्-मातर्-माताः तव चरणसेवा न रचिता, न वा दत्तं देवि द्रविणमपि भूयस्तव मया । तथापि त्वं स्नेहं मयि निर्-उपमं यत्-प्रकुरुषे: कुपुत्रो जायेत क्वचित्-अपि कुमाता न भवति ।४। शरणागत-दीनार्त-परित्राणपरायणि । सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोस्तु ते ।

या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ।१। या देवी सर्वभूतेषु चेतनेत्य-भिधीयते नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः ।२। या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता० नमस्तस्यै ।३। या देवी सर्वभूतेषु निद्रारूपेण संस्थिता नमस्त० ।४। या देवी सर्वभूतेषु क्षुधारूपेण संस्थिता नमस्त० ।५। या देवी सर्वभूतेषु छायारूपेण संस्थिता नमस्त० ।६। या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता नमस्त० ।७। या देवी सर्वभूतेषु तृष्णारूपेण संस्थिता नमस्त० ।८। या देवी सर्वभूतेषु क्षान्तिरूपेण संस्थिता नमस्त० ।९। या देवी सर्वभूतेषु जातिरूपेण संस्थिता नमस्त० ।१०। या देवी० लज्जारूपेण संस्थिता नमस्त० ।११। या देवी० शान्तिरूपेण संस्थिता नमस्त० ।१२। या देवी सर्वभूतेषु [illegible] संस्थिता नमस्त० ।१३। या देवी सर्वभूतेषु कान्तिरूपेण संस्थिता

नमस्त० ।१४। या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरूपेण संस्थिता नमस्त० ।१५। या देवी...स्मृतिरूपेण संस्थिता नमस्त० ।१६। या देवी...दयारूपेण संस्थिता नमस्त० ।१७। या देवी सर्वभूतेषु तुष्टि रूपेण संस्थिता नमस्त० ।१८। या देवीसर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता नमस्त० ।१९। या देवी सर्वभूतेषु भ्रांतिपेण संस्थिता नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै ।२०। आनन्दसुन्दर पुरन्द्रमुक्तमाल्यं मौलौ हठेन निहितं महिषासुरस्य पादाम्बुजं भवतु मे विजयाय मञ्जु, मञ्जीरशिञ्जितमनोहरमम्बिकायाः ।२१। उत्तप्तहेमरुचिरे त्रिपुरे पुनीहि, चेतश्चि-रन्तनमघौघवनं लुनीहि: कारागृहे निगडबन्धनपीडितस्य त्वत्संस्मृतौ झडिति मे निगडास्त्रुट्यन्तु ।२२। माया कुण्डलिनी, क्रियामधुमती, कालीकलामालिनी । मातङ्गी विजया जया भगवती देवी शिवा शाम्भवी । शक्तिः शङ्करवल्लभा त्रिनयना वाग्वादिनी भैरवी, ह्रींकारी त्रिपुरा परा परमयी माताकुमारीत्यसि ।२४। महाबले महोत्साहे महाभयविनाशिनि । त्राहि मां देवि दुष्प्रेक्ष्ये शत्रूणां भयवर्धिनि ।२५। सर्वमङ्गलमङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके, शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोस्तुते ॥

* इन्द्राक्षी *

इन्द्र उवाच—इन्द्राक्षी नाम सा देवी देवतैः समुदाहृता गौरी शाकंभरी देवी दुर्गानाम्नीति विश्रुता, कात्यायनी महादेवी चन्द्रघंटा महातपा, गायत्री साच सावित्री ब्रह्माणी ब्रह्मवादिनी, नारायणी भद्रकाली रुद्राणी कृष्णपिंगला अग्निज्वाला रौद्रमुखी कालरात्रिस्तपस्विनी । मेघश्यामा सहस्राक्षी विष्णुमाया जलोदरी, महोदरी मुक्तकेशी घोररूपा महाबला आनन्दा भद्रजा नन्दा रोगहर्त्री शिवप्रिया, शिवदूती कपाली च प्रत्यक्षा परमेश्वरी, इन्द्राणी चन्द्ररूपा च इन्द्रशक्ति-परायणा, महिषासुर-संहर्त्री चामुण्डा गर्भदेवता, वाराही नारसिंही च भीमा भैरवनादिनी, श्रुतिःस्मृति-धृतिर्मेधा, विद्यालक्ष्मी सरस्वती, आनन्दा विजयापूर्णा मानस्तोका पराजिता, भवानी पार्वती दुर्गा हैमवत्यंबिका शिवा, शिवा

[illegible] ॥

ॐ नमो भगवते गोपीनाथाय

आत्मा विवेक द्वारा जानी जा सकती है। भगवत्-प्राप्ति के लिए अपना परिश्रम और गुरु-अनुग्रह अत्यावश्यक हैं— जगद्गुरु भगवान गोपीनाथ जी

भगवान जी के अनेकाकारमय व्यक्तित्व के सौरभ से मानव-मन सुरभित बन गया। श्री भगवान जी अन्तर्मुखी होकर भी बहिर्मुखता के प्रति उदासीन नहीं थे; अपनी आत्मा के सुमधुर झङ्कार का वह प्रत्येक को साझीदार बनाने के पक्ष में थे। आत्म-चैतन्य की यही पराकाष्ठा हैं, जहां स्वाभाविक मौन मुखर हो उठता है। भौतिक शरीर का त्याग करने के पश्चात भी वे देश और विदेश में सत्पात्रों का अध्यात्मिक मार्ग दर्शन करते हैं।

श्री गुरु के चरणों की सेवा करने से किसी भी मनुष्य के पाप छूट जाते हैं। वह अपने सद्गुरु के चरणों का ध्यान करते 2 सिर पर जल डाल दें तो उसे तीर्थ में नहाने का फल मिल जाता है। पाप रूपी कीचड़ को सुखाने के लिए श्री गुरु के चरण-कमलों का अमृत पीना चाहिए; गुरु एक अनमोल रत्न है। इस रत्न को पाने के लिए अपना आश्रम, अपनी जाति, सुख और आनन्द देने वाली अपनी कीर्ति और अन्य चीजें भी छोड़नी पड़े, तो भी कम है श्री गुरु का चिन्तन करने से परम सुख आसानी से मिल सकता है। सभी देवताओं के लिए गुरु से बढ़ कर कोई चीज नहीं, गुरु को जो चीज प्यारी है । वही पेश करनी चाहिए। गुरु महाराज जिस दिशा में रहते हैं, प्रतिदिन इस दिशा में भक्तिपूर्वक नमस्कार करना चाहिए, ताजा फूलों को फेंकना चाहिए। प्राणी जब तक जिन्दा है, गुरु को याद करते रहें। यदि साधना करने से मनुष्य जीवन्मुक्त भी हो जाए तो भी श्री गुरु को नहीं भूलना चाहिए। गुरु के सामने उद्धत रूप से कभी न बैठे। सेवा करने से ही गुरु संतुष्ट हो जाते हैं। श्री गुरु जब प्रसन्न

होकर दया करते हैं। तो शिष्य अपने ही अन्दर ब्रहम को पाते हैं। गुरु की दया के बिना मन को शान्त करना आसान नहीं साधक को कुछ मिले या न मिले, कम मिले या ज्यादा-संतोष करना चाहिए, यदि हम से शिव रूठ जाएं तो गुरु हमें बचा सकते हैं, परन्तु यदि गुरु रूठ जाएं तो हमें कोई नहीं बचा सकता। गुरु-कृपा से प्राप्त सभी वस्तुएं शिष्य के कल्याण का कारण बनती है। मानव-जीवन का परम लक्ष्य मुक्ति है। श्री गुरु ही संसारिक जीवों को मुक्ति का रास्ता दिखाकर उपकार करते हैं

प्रेषक :—।।वन्दे भगवन्ते गोपी नाथम।। भगवान श्री गोपी नाथ जी ट्रस्ट, खरयार, श्रीनगर

SOME PUBLICATIONS OF THE

Bhagwan Shri Gopi Nath Ji Trust (Regd.)

Kharyar Habbakadal Srinagar Kashmir

1. **Bhagwan Gopi Nath Ji of Kashmir** by S.N. Fotedar (English) ... Rs 5 00
2. **Bhagwan Gopi Nath Ji of Kashmir** translated into Hindi by Sh. Rama Dutt Shukla ... Rs. 5.00

1988 FESTIVALS

Maha-Yajna	... ...	16 June
Maha-Jayanti	... ...	26 July